शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 162 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 07 जुलाई 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

हिट एंड रन: राजनेता की बीएमडब्लू ने मारी टक्कर, महिला की मौत

मुंबई

मुंबई में पुणे जैसा कार हादसा सामने आया है। पुलिस ने बताया कि सुबह मुंबई के वर्ली में एक तेज रफ्तार बीएमडब्लू कार ने एक दोपहिया वाहन को टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार महिला की मौत हो गई। घटना के बाद कार सवार मौके से फरार हो गया। हादसे में मृत महिला का पति भी गंभीर रूप से घायल हुआ है और अभी अस्पताल में भर्ती है।

क्या है मामला

पुलिस के अनुसार, घटना सुबह करीब साढ़े पांच बजे की वर्ली के कोलीवाड़ा इलाके की है। बाइक सवार दंपति मछली खरीदने के लिए ससून डॉक गए थे, जब वे मछली पकड़कर लौट रहे थे तो उनके दोपहिया वाहन को एक तेज रफ्तार बीएमडब्लू कार ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक पलट गई और पति-पत्नी दोनों कार के बोनट पर गिर गए। खुद को बचाने की कोशिश में पति बोनट से कूदने में कामयाब रहा, लेकिन उसकी पत्नी इतनी भाग्यशाली नहीं थी। घटना के बाद मची अफरा-तफरी में आरोपी कार चालक मौके से फरार हो गया। इसके बाद घायल महिला को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने बताया कि पति का फिलहाल इलाज चल रहा है, साथ ही हिट-एंड-रन मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

राजनेता के नाम पर दर्ज है बीएमडब्लू कार

मुंबई पुलिस का कहना है कि जिस बीएमडब्लू कार से हादसा हुआ, वह पालघर के एक राजनीतिक दल के नेता की है और ऐसा दावा किया जा रहा है कि घटना के समय नेता का बेटा ड्राइवर के साथ कार में बैठा था। वहीं मृतक महिला की पहचान वर्ली कोलीवाड़ा निवासी कावेरी नखवा (उम्र 45) के रूप में हुई है। पुलिस का कहना है कि घटना की जांच जारी है। गौरतलब है कि बीते दिनों पुणे में भी एक ऐसा हादसा सामने आया था, जिसमें एक लग्जरी कार सवार नाबालिग ने बाइक को टक्कर मार दी थी, जिसमें बाइक सवार दो इंजीनियर्स की मौत हो गई थी। महाराष्ट्र के नदिड़ जिले में एक ऑटोरिक्शा और ट्रक के बीच टक्कर में तीन लोगों की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए।

हाथरस पीड़ित: राहुल ने योगी को लिखा पत्र

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जो मुआवजा घोषित किया गया है, वह बहुत अपर्याप्त है: राहुल गांधी

जिन्होंने अपनों को खोया है, उनकी पूर्ति करना संभव नहीं है लेकिन हम उनकी हर संभव सहायता कर अपना फर्ज निभा सकते हैं: राहुल गांधी

नई दिल्ली

रायबरेली से कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर हाथरस हादसे के पीड़ितों को मिलने वाले मुआवजे में बढ़ोतरी का अनुरोध किया है। नेता प्रतिपक्ष राहुल ने अपने पत्र में हाथरस पीड़ितों से मुलाकात और उनसे हुई बातचीत का जिक्र किया है। उन्होंने कहा कि जिन्होंने अपनों को खोया है, उनकी पूर्ति करना संभव नहीं है लेकिन हम उनकी हर संभव सहायता कर अपना फर्ज निभा सकते हैं।

उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जो मुआवजा घोषित किया गया है, वह बहुत अपर्याप्त है। मेरा आग्रह है कि मुआवजे की राशि बढ़ाई जाए और उसे जल्द से जल्द दिया जाए। साथ ही साथ घायलों का समुचित इलाज कराया जाए और उन्हें भी उचित मुआवजा दिया जाए। राहुल गांधी ने कहा है कि हादसे में प्रशासन की लापरवाही दिखाई दी है। इस पर उचित एवं पारदर्शी तरीके से कार्रवाई कर आगे इस तरह की घटनाओं को रोका जा सकता है।

उन्होंने कहा कि हादसे के लिए जिम्मेदार वहां के स्थानीय प्रशासन की लापरवाही और संवेदनहीनता है। इस मामले में उचित एवं पारदर्शी जांच न सिर्फ आने वाले समय में इस तरह की दुर्घटनाओं को रोकने की तरफ एक सही कदम होगा, बल्कि इससे इन पीड़ित परिवारों के मन में न्याय-व्यवस्था के प्रति विश्वास भी पुनर्स्थापित होगा। न्याय की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि दोषी व्यक्तियों को कठोर सजा दी जाए।

हादसा बाबा की बढ़ती लोकप्रियता के खिलाफ एक साजिश: वकील

हाथरस हादसे में मौत की वजह को लेकर साकार हरि के वकील एपी सिंह ने नया दावा पेश किया है। उन्होंने डिब्बों से निकली जहरीली गैस को मौत की असली वजह बताया है। साकार हरि बाबा के वकील एपी सिंह ने रविवार को बताया कि हाथरस में सत्संग के बाद हादसा बाबा की बढ़ती लोकप्रियता के खिलाफ एक साजिश है। हादसे के गवाहों ने उनसे संपर्क किया। गवाहों को कहना है कि 15-16 लोग जहरीली गैस के डिब्बे ले जा रहे थे, जिन्हें उन्होंने भीड़ में खोल दिया था। जिससे वहां भगदड़ मच गई। वकील एपी सिंह ने कहा कि मैंने मारे गए लोगों की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट देखी है और इससे पता चला है कि उनकी मौत दम घुटने से हुई है, न कि किसी अन्य कारण से। भगदड़ के पीछे साजिश का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि जहरीली गैस को छोड़ने वालों को भागने में मदद करने के लिए घटनास्थल पर वाहन खड़े थे। हमारे पास सबूत हैं और हम इसे देंगे।

वकील एपी सिंह ने कहा कि जो गवाह उनके पास पहुंचे हैं, उन्होंने नाम न छापने का अनुरोध किया है। हम उनके लिए सुरक्षा की मांग करेंगे।

बनारसी साड़ी अंबानी परिवार की शादी में बिखेरेगी रंग

वाराणसी

काशी की जीआई और ओडीओपी उत्पाद बनारसी साड़ी अंबानी परिवार की शादी में रंग बिखेरेगी। काशी की इस प्राचीन कला को जीआई टैग मिलने से विश्व में बनारसी साड़ी को अलग ही पहचान मिली है। योगी सरकार द्वारा बनारसी साड़ी को वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट में शामिल करने से काशी के कारीगरों का हुनर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उड़ान भर रहा है। बनारसी साड़ी को नई पहचान मिलने के बाद इसकी ख्याति और बढ़ती जा रही है। फिल्म इंडस्ट्री हो या देश दुनिया के सबसे बड़े औद्योगिक घराने, बनारसी साड़ी सबको खूब भाती है। वहीं बेटे की शादी के लिए नीता अंबानी ने भी इसी खास बनारसी साड़ी का ऑर्डर दिया है।

पीएम-सीएम ने दिया शिल्पियों के हुनर को नया बाजार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जीआई उत्पाद व वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट के ब्रांड अंबेसडर के रूप में देश के शिल्पियों के हुनर को नया बाजार दिया है। देश के सबसे बड़े औद्योगिक घरानों में शुमार मुकेश अंबानी की पत्नी नीता अंबानी अपने बेटे की शादी के लिए यह साड़ी खरीदने कुछ दिन पहले बनारस पहुंची थीं। नीता अंबानी साड़ी की दुकान से लेकर बुनकर के घर तक गईं। उन्होंने करघे पर बुनकरों की बुनाई करते हुए कारीगरी को भी देखा।

कश्मीर: कुलगाम में छह आतंकियों का सेना ने किया सफाया

जम्मू कश्मीर

दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में दो अलग-अलग जगहों पर सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। ताजा जानकारी के अनुसार, सुरक्षबलों ने दो आतंकियों को ढेर कर दिया है। इससे पहले शनिवार को चार आतंकी मार गिराए गए। ऐसे में कुलगाम में अबतक छह आतंकी मारे जा चुके हैं। हालांकि इन दोनों ऑपरेशन के दौरान जवान बलिदान हुए। जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) आरआर स्वैन ने कहा कि कुलगाम के पुलिस और सुरक्षाबलों की टीम को बड़ी सफलता मिली है। यहां दो मुठभेड़ में अब तक छह आतंकवादी मारे गए हैं। एक मुठभेड़ पूरी हो चुकी है और एक जगह मुठभेड़ चल रही है। उधर, जम्मू संभाग के जिला राजोरी में संदिग्ध रूप से चली गोली में एक जवान घायल हुआ है। उसे इलाज के लिए सैन्य अस्पताल ले जाया गया है। बताया जा रहा है कि जवान के पांव में गोली लगी है। जानकारी के अनुसार, जिला राजोरी के मंजाकोट स्थित सैन्य कैंप में संदिग्ध रूप से चली गोली में एक जवान घायल हुआ। गोली चलने की आवाज के साथ करीब आधे घंटे तक गोलीबारी होती रही। इसके बाद घायल जवान का पता चला और इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। इलाके की घेराबंदी कर तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। अभी तक यह साफ नहीं हुआ है कि ये जवान आतंकी हमले में घायल हुआ है या दुर्घटनावश चली गोली में। इस मामले में आधिकारिक बयान का इंतजार है।

बांग्लादेशी घुसपैठियों की खैर नहीं, सीमा पर एआई कैमरों से निगरानी

अगरतला

भारत-बांग्लादेश सीमा पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) युक्त कैमरे से निगरानी की जा रही है। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की ओर से इन विशेष कैमरों का उपयोग सुरक्षा बढ़ाने और घुसपैठियों की रोकथाम के लिए किया जा रहा है।

बीएसएफ के अधिकारियों का कहना है कि कैमरे और चेहरे की पहचान करने वाले उपकरणों सहित अत्याधुनिक तकनीक के उपयोग से सीमा पर निगरानी बढ़ाई गई है। इससे घुसपैठ, अपराध और अन्य अवैध गतिविधियों को रोका जाएगा।बीएसएफ के त्रिपुरा फ्रंटियर के महानिरीक्षक ने समाचार एजेंसी आईएएनएस को बताया कि संवेदनशील सीमा चौकियों पर जवानों की संख्या बढ़ा दी गई है और सीमावर्ती क्षेत्रों में दलालों और तस्करों के नेटवर्क पर नकेल कसने के लिए विशेष अभियान शुरू किए गए हैं।

'बीएसएफ की ऐसी सभी गतिविधियों के खिलाफ शून्य-सहिष्णुता की नीति है और फील्ड कमांडरों को दलालों को पकड़ने के लिए खुफिया-आधारित अभियान शुरू करने के लिए कहा गया है।' त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने भी बीएसएफ को निर्देश दिया कि घुसपैठ पर अंकुश लगाने के लिए राज्य में भारत-बांग्लादेश सीमा पर अपनी निगरानी बढ़ा दी जाए।

पूरी ईमानदारी व निष्ठा से करूंगा जिम्मेदारी का निर्वहन: कमलेश

गोरखपुर

भाजपा के क्षेत्रीय कार्यालय पर रविवार को आयोजित कार्यक्रम में भारत सरकार के वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी, ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान और गोरखपुर क्षेत्र के नव निर्वाचित सांसदों का स्वागत किया गया। क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानंद राय की अध्यक्षता में संपन्न हुए स्वागत कार्यक्रम में भाजपा के विधायक, नगर निकायों के अध्यक्ष, ब्लाक प्रमुख, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी, गोरखपुर क्षेत्र के पदाधिकारी, मोर्चों के क्षेत्रीय अध्यक्ष समेत बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता शामिल रहे।

टीडीपी तेलंगाना में पुराना गौरव वापस हासिल करेगी: चंद्रबाबू

हैदराबाद

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने रविवार को कहा कि तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) जल्द ही तेलंगाना में भी अपना पुराना गौरव वापस हासिल करेगी। साथ ही उन्होंने पिछले साल सितंबर में उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ प्रदर्शन करने के लिए लोगों को धन्यवाद दिया। टीडीपी कार्यकर्ताओं से नायडू ने कहा कि पार्टी का जन्म तेलंगाना में हुआ था और जल्द ही इसका पुनर्गठन किया जाएगा।

पिछले साल से नहीं लड़ रहे कोई चुनाव

गौरतलब है, टीडीपी ने कई कारणों से पिछले साल नवंबर में हुए विधानसभा का चुनाव नहीं लड़ा था। वहीं इस साल हुआ लोकसभा चुनाव भी नहीं लड़ा। पिछले साल विधानसभा चुनाव से पहले कसानी ज्ञानेश्वर के प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद से पार्टी वर्तमान में नेतृत्वविहीन है।

पार्टी को तेलंगाना में होना चाहिए

नायडू ने कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा, 'टीडीपी का जन्म तेलुगू लोगों के लिए हुआ है। इसलिए पार्टी को तेलंगाना में होना चाहिए। मैं आपसे पूछ रहा हूं कि तेलंगाना की धरती पर जन्मी पार्टी को राज्य में काम करना चाहिए या नहीं? पार्टी के लिए काम करने वाले कई लोग थे। हम बहुत जल्द तेलंगाना में पार्टी का पुनर्गठन करेंगे।'

राज्य में युवाओं को प्रोत्साहित करेगी टीडीपी

उन्होंने कहा कि वह तेलंगाना में पार्टी के पुराने गौरव को लाने के लिए काम करेंगे। टीडीपी राज्य में युवाओं और शिक्षित लोगों को प्रोत्साहित करेगी।

रेवंत रेड्डी से की मुलाकात: तेलंगाना के अपने समकक्ष ए रेवंत रेड्डी के साथ शनिवार को हुई बैठक के बारे में नायडू ने कहा कि आंध्र प्रदेश में अलग-अलग दल सत्ता में हैं। यहां जब तेलुगू लोगों के हितों की बात आती है तो साथ काम करने की जरूरत है।

बंद हो जाएंगी वोटरों को लुभाने वाली योजनाएं: उद्धव

छत्रपति संभाजीनगर

शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने रविवार को एकनाथ शिंदे सरकार पर महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले 'मुख्यमंत्री माझी लड़की बहन योजना' के जरिए महिला मतदाताओं को लुभाने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि यह योजना दो-तीन महीने में ही रुक जाएगी। ठाकरे ने छत्रपति संभाजीनगर में पार्टी कार्यकर्ता को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने किसानों के बिजली के बिल माफ करने की योजना की तर्ज पर उनके कर्ज को माफ करने की मांग दोहराई। केंद्र अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के हितों को नुकसान पहुंचाए बगैर मराठा और अन्य समुदायों के लिए आरक्षण की सुविधा के लिए संसद में कानून पारित कर 50 फीसदी आरक्षण की सीमा बढ़ाए।

मौसम का कहर पूर्वोत्तर पर टूट रहा

आठ साल के बच्चे को कीचड़ से भरे नाले में ढूंढ रहा था पिता, 72 घंटे बाद चार किलोमीटर गहराई में मिला शव

गुवाहाटी

मौसम का कहर पूर्वोत्तर पर टूट रहा है। असम में भारी बारिश के बाद आई बाढ़ से लोगों का बुरा हाल है। अबतक कईयों की मौत हो चुकी है। हालांकि, इस बीच यहां के गुवाहाटी से एक रौंगटे खड़े देने वाला मामला सामने आया है। एक आठ साल के बच्चे का शव करीब तीन दिन बाद राजगढ़ इलाके के नाले से करीब चार किलोमीटर नीचे से बरामद किया गया।

रविवार को मिला शव: रविवार को शव मिलने के बाद गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (जीएमसीएच) में ले जाया गया। बाद में माता-पिता ने अपने बच्चे की पहचान की। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि बचाव एजेंसियों ने पहाड़ी ज्योतिनगर से चार किलोमीटर से अधिक नीचे राजगढ़ इलाके में शव बरामद किया, जहां लड़का नाले में गिर गया था। माता-पिता ने शुरू में उनके साथ साझा की गई तस्वीरों के आधार पर शव की पहचान की और बाद में अस्पताल में जाकर भी पुष्टि की। दरअसल, असम के सबसे बड़े शहर गुवाहाटी के कुछ हिस्से बाढ़ की चपेट में हैं। यहां गुवाहाटी के पहाड़ी इलाके ज्योतिनगर में गुरुवार शाम को अभिनाश अपने पिता की स्कूटी से फिसलकर खुले नाले में गिर गया था।

सरकार में आते ही ओबीसी समाज को देंगे अधिकार: सुदेश महतो

रांची। आजसू पार्टी के अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने कहा कि इस राज्य की एक बड़ी आबादी के साथ इस राज्य की सरकार खिलवाड़ कर रही है। राज्य सरकार ने चुनावी घोषणा में वादा किया था कि जैसे ही सरकार में हम आएंगे छह माह के अंदर ओबीसी समाज का अधिकार देने का काम करेंगे लेकिन सरकार के विदाई वर्ष में भी इस राज्य के ओबीसी समाज को लॉलीपॉप दिखाने का काम किया।

सुदेश महतो रविवार को ओबीसी एकता अधिकार मंच के अरगोड़ा स्थित केंद्रीय कार्यालय के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे।

सीएम ने पानीपत में 32 परियोजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

पानीपत

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह ने कहा कि पिछले लगभग 10 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश में डबल इंजन की सरकार ने एक ऐसी व्यवस्था कायम की है, जिसमें हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य किया गया है और प्रदेश के विकास को नये आयाम दिये हैं। वर्तमान सरकार के लगभग 10 साल का कार्यकाल पिछली सरकारों के 48 वर्षों पर भारी पड़ा है। जितने विकास के कार्य इस सरकार के कार्यकाल में हुए हैं, उतने पहले कभी नहीं हुए।

मुख्यमंत्री आज जिला पानीपत में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थितजनों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने लगभग 227 करोड़ रुपये से अधिक की लागत की 32 परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया। इनमें 36 करोड़ 55 लाख रुपये की लागत की 19 परियोजनाओं का उद्घाटन और लगभग 191 करोड़ रुपये की लागत की 12 परियोजनाओं का शिलान्यास शामिल है। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने पानीपत शहरी विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों हेतु 10 करोड़ रुपये और पानीपत ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के लिए भी 10 करोड़ रुपये की राशि मंजूरी करने की घोषणा की।

मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर के बलबूते हरियाणा अपनी आर्थिक विकास दर 8 प्रतिशत वार्षिक बनाए हुए

नायब सिंह ने कहा कि इन्फ्रास्ट्रक्चर किसी भी देश व प्रदेश के भौतिक विकास का पैमाना माना जाता है। यही नहीं मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर वहां रहने वाले लोगों के जीवन.स्तर को ऊपर उठाने की पहली शर्त भी है। यह उद्योग और निवेश को आकर्षित कर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती देता है।

हरियाणा प्रदेश अपने मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर के बलबूते ही अपनी आर्थिक विकास दर 8 प्रतिशत वार्षिक बनाए हुए है, जबकि देश की औसत आर्थिक विकास दर 6.7 प्रतिशत है।

सीएम योगी द्वारा बाढ़ प्रभावित इलाकों में मुस्तैदी बढ़ाने के आदेश के बाद अधिकारियों ने चलाया रेस्क्यू ऑपरेशन

यूपी: बाढ़ में फंसे 87 लोगों की रेस्क्यू कर बचायी जान

लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा बाढ़ प्रभावित इलाकों में राहत कार्यों में तेजी लाने, पीड़ितों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के निर्देश के बाद अतिसंवेदनशील और संवेदनशील जिलों के अधिकारी हरकत में आ गये हैं। सीएम योगी के निर्देश के बाद अधिकारी अपने जिलों में बाढ़ की स्थितियों पर लगातार नजर बनाए रखे हैं। इसी क्रम में नेपाल में मूसलाधार बारिश के बाद अचानक पांच लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़े जाने से श्रावस्ती और कुशीनगर में बाढ़ में फंसे 87 लोगों को रेस्क्यू ऑपरेशन चलाकर सुरक्षित निकाला गया है। इस दौरान कुशीनगर में बाढ़ में फंसे 20 मवेशियों को भी बचाया गया। वहीं सीएम योगी ने नेपाल से छोड़े गये पानी से प्रभावित श्रावस्ती और कुशीनगर के जिलाधिकारियों को क्षतिग्रस्त फसल का 24 घंटे के अंदर सर्वे कर रिपोर्ट शासन को उपलब्ध कराने के निर्देश दिये हैं। इसके साथ ही सीएम योगी ने शासनस्तर के अधिकारियों को क्षतिग्रस्त फसल की सर्वे रिपोर्ट मिलते ही तत्काल मुआवजा देने का आदेश दिया है। हालांकि अभी इन जिलों में स्थिति सामान्य है, जबकि कुछ ही इलाकों में फसलों को नुकसान हुआ है।

रात आठ बजे मिली सूचना, सुबह 3 बजे 11 को सुरक्षित निकाला गया

राहत आयुक्त जीएस नवीन ने बताया कि शनिवार रात करीब आठ बजे राज्य स्तरीय इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर को श्रावस्ती के तहसील जमुनहा की ग्राम पंचायत गजोभरी के ग्राम मोहनपुर भरथा एवं केवटन पुरवा में नेपाल से अचानक छोड़े गये पानी में 11 लोगों के फंसे होने की सूचना मिली, जिसमें तीन बच्चे, पांच महिलाएं और 3 पुरुष शामिल थे। सूचना मिलते ही तत्काल श्रावस्ती जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी को जानकारी दी गयी। जिलाधिकारी अपनी टीम के साथ रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए मौके पर पहुंचे। जिला प्रशासन एवं फ्लड पीएसी की टीमों ने ज्वॉइंट रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया और लगभग आठ घंटे की कड़ी मेहनत के बाद सभी लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया।

इसके बाद सभी का चिकित्सकों की टीम द्वारा प्राथमिक उपचार भी कराया गया। साथ ही सभी पीड़ितों को राप्ती बैराज स्थित गेस्ट हाउस में पहुंचाया गया।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए लोगों को पौधा रोपण करना होगा : संदीप पटेल

एमएल पब्लिक स्कूल में आयोजित हुआ वनमहोत्सव कार्यक्रम किया गया वृक्षा रोपण

अखंड भारत संदेश

मेजा। क्षेत्र के उपरौड़ा सिरसा स्थित एमएल पब्लिक स्कूल में शनिवार को वन महोत्सव का आयोजन हुआ। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को अधिक से अधिक पौधरोपण के लिए प्रेरित किया गया। उल्लेखनीय है कि 1 जुलाई से 7 जुलाई तक वन महोत्सव का कार्यक्रम चल रहा है। इस अवसर पर अमरूद, आम एवं आंवला सहित 51 पौधों का रोपण किया गया और लोगों को जागरूक किया गया। वनमहोत्सव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक मेजा संदीप पटेल ने कहा कि भौतिक संसाधनों को पूरा करने के लिए लोग पेड़ पौधों को काटते जा रहे हैं। इससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है, इस संतुलन को बनाए रखने के लिए लोगों को अधिक से अधिक पौधरोपण करना होगा। इसी क्रम में वन क्षेत्राधिकारी मेजा अजय सिंह ने कहा कि पेड़ पौधों के बिना किसी भी जीव जंतु का जीवन संभव नहीं है इसलिए इनकी रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को शुभ और अशुभ अवसरों पर कम से कम एक पौधा लगाने का संकल्प लेना चाहिए। विद्यालय के प्रबंधक दुर्गा प्रसाद गुप्ता ने बताया कि कोविद संकट काल में ऑक्सीजन की कमी से त्राहिमाम करती जनता को यह सबक मिला था कि वृक्ष है तो जीवन है। इसलिए वृक्षारोपण के साथ-साथ हमें वृक्षों को बचाने पर भी ध्यान देना चाहिए। इस दौरान उन्होंने उपस्थित लोगों को ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने और उनकी देखरेख के लिए अपील किया।इस अवसर पर भास्कर श्रीवास्तव विद्यालय की शिक्षक शिक्षिकाओं सहित वन विभाग के अधिकारी कर्मचारी प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

बुजुर्ग महिला को ब्याज देने के लिए दबाव डाल रहे चौकी प्रभारी भुंडा, आडियो वायरल

करछना के भुवालपुर भुंडा गांव का मामला,महिला ने लगाई उच्च अधिकारियों से गुहार

प्रयागराज। करछना के भुंडा भुवालपुर गांव की रहने वाली फूल कली पत्नी स्व राम लौटन के बेटे सुरेश पाल ने अक्टूबर 2023 में गांव के ही एक व्यक्ति से पांच लाख 31 हजार रुपए अपनी मां की जमीन को बेचने के लिए लिया था। जानकारी होने पर युवक की मां ने जमीन बेचने से मना कर दिया और अपने बेटे से पैसा वापस करने को कहा। उनका बेटा सुरेश पाल पूरा पैसा लेकर गांव के उस व्यक्ति के पास गया तो उसने रुपए लेने से इंकार कर दिया। कहा कि 10% ब्याज सहित जोड़कर रुपए दोगे तब लूंगा, नहीं तो तुम्हारी मां की जमीन कब्जा कर लूंगा। बुजुर्ग महिला लगातार रुपए देने के लिए उच्च अधिकारियों से लेकर करछना पुलिस का चक्कर लगा रही है। शनिवार को सुबह रुपए देने वाले व्यक्ति ने भुंडा चौकी प्रभारी से मिलकर महिला के बेटे के पास फोन कराकर ब्याज सहित रुपए लौटाने की धमकी दिलवाई। कहा कि 10% ब्याज सहित रुपया नहीं लौटाओगे तो मुकदमा लिखकर जेल भेज दूंगा। चौकी प्रभारी का धमकी देने का ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हालांकि युनाइटेड भारत इस ऑडियो की पुष्टि नहीं करता। संजय कुमार सिंह,एसीपी करछना ने कहा कि इस मामले की जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

अटेंडेंस डिजिटलाइजेशन के विरोध में महिला शिक्षक संघ ने भरी हुंकार

प्रयागराज। रविवार को उत्तर प्रदेश महिला शिक्षक संघ की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती सुलोचना मौर्य जी के आवाहन पर एक बैठक लखनऊ में रखी गई ।जिसमें हमारी जिला प्रयागराज से जिला अध्यक्ष श्रीमती अनुरागिनी सिंह जी जिला कार्यकारिणी के साथ उपस्थित हुई। वहां पर विभिन्न जनपद के अध्यक्ष और कार्यकारिणी के सदस्य इकट्ठा हुए और इस बात पर चर्चा हुई कि जो डिजिटल अटेंडेंस मांगी जा रही है , उसका हम सब विरोध करते हैं और अटेंडेंस तब तक नहीं दी जाएगी, जब तक हमारी विभिन्न समस्याओं का समाधान नहीं कर दिया जाता है।भारी संख्या में महिला शिक्षिकाओं का समर्थन डिजिटल अटेंडेंस के विरोध में प्राप्त हुआ। इसके साथ ही अन्य विभिन्न मुद्दों पर भी चर्चा हुई है । प्रयागराज जिलाध्यक्ष ने जनपद की विभिन्न समस्याओं को लेकर प्रदेश अध्यक्ष को ज्ञापन भी सौंपा । इस बैठक में प्रतिभाग करने के लिए प्रयागराज से जिलाध्यक्ष अनुरागिनी सिंह जी के साथ ललिता तिवारी जी, प्रितपाल कौर जी प्रतिभा सिंह जी, पूनम सिंह जी और सरिता सिन्हा उपस्थित हुए।

दशरथ कुमार को सौंपी गई मेजा तहसील की कमान ग्रहण किया कार्यभार

अखंड भारत संदेश

मेजा। शासन के दिशा निर्देश पर मेजा की एसडीएम जयजीत कौर मिश्रा का स्थानांतरण कर दिया गया है। उन्हें यहां से स्थानांतरित कर बारा तहसील का एसडीएम बनाया गया है। वहीं अपर नगर मजिस्ट्रेट द्वितीय प्रयागराज उप जिलाधिकारी न्यायिक हंडिया दशरथ कुमार को वहां से स्थानांतरित कर मेजा का एसडीएम बनाया गया है। अब दशरथ कुमार मेजा के नए एसडीएम बनाए गए हैं। उल्लेखनीय है कि एसडीएम मेजा रहीं जयजीत कौर मिश्रा का कई महीनों से अधिवक्ता विरोध कर रहे थे। आए दिन एसडीएम के खिलाफ अधिवक्ता कार्यों से विरत रहे और प्रदर्शन करते रहे। रविवार को उनका शासन द्वारा स्थानांतरण किया गया। एसडीएम अधिकारी दशरथ कुमार मूल रूप से इटावा जिले के रहने वाले हैं और वह पदोन्नति पर 2019 बैच के पीसीएस अधिकारी हैं।

दो अलग अलग गांवों में मामूली बात को लेकर मार पीट सात के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके के दो अलग अलग गांवों में मामूली बात को लेकर मार पीट के दौरान दोनों पक्षों को मामूली चोटें आयी है। पुलिस ने दोनों मामलों में सात के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सकरामऊ निकासी अनिल कुमार सोनी पुत्र कैलाशनाथ सोनी का आरोप है कि मामूली बात को लेकर पडोसी ने उसे मारे पीटे और गालियां दी। पुलिस ने पप्पू सोनी, राहुल सोनी, प्यारेलाल सोनी,सिध्दू सोनी के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है।उधर ग्राम बुआपुर निवासनीय ननकी देवी पत्नी राम प्रसाद का आरोप है कि पडोसी अनायास उसे मारे पीटे।ननकी देवी ने मऊआइमा थाने में पिंटू साहू, अंशू साहू,संजू साहू के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करा दिया है।

शंकरगढ़ में राहुल गांधी के खिलाफ निकाला गया जुलूस, फूंका गया पुतला

प्रयागराज। क्षेत्र के रामभवन चौराहा में विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल कार्यकताओं ने राहुल गांधी का पुतला फूका और उनके खिलाफ थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपकर मुकदमा दर्ज करने की मांग की गई।लोकसभा में हिंदू समाज के खिलाफ गलत बयान के विरोध में काग्रेस पार्टी के नेता राहुल गांधी का रामभवन चौराहा शंकरगढ़ में प्रखंड अध्यक्ष प्रमोद चतुवेर्दी के नेतृत्व में पुतला फूका गया। विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल के सैकड़ों कार्यकर्ता महिला अस्पताल से जुलूस निकालकर राहुल गांधी मुदार्बाद का नारा लगाते हुए रामभवन चौराहा पहुंचे और पुतला दहन किया । पुतला दहन के बाद विहिप और बजरंग दल के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी थाने पहुंचे। उनके द्वारा थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपकर एफ आई आर दर्ज करने की मांग की गई। विहिप नगर अध्यक्ष कैलाश केसरवानी उर्फ राजू ने कहा कि 18 वीं लोकसभा में महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के बाद धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा करते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा हिंदुओं को बदनाम करने को लेकर हिंसक, उग्रवादी जैसे शब्द बोले गए। जिससे देश के बहुसंख्यक समाज को बहुत पीड़ा पहुंची है और हमारे धर्म को कलंकित करने का कार्य किया गया है । मौके पर मूल चंद गुप्ता,जिला सह मंत्री मनोज सिंह, आदर्श दुबे, राजकुमार सिंह, प्रखंड अध्यक्ष प्रमोद चतुवेर्दी, विहिप नगर अध्यक्ष कैलाश केसरवानी, पियूष केसरवानी, सह मंत्री कौसलेश, विकास सिंह, आदित्य, मनोज केसरवानी, सुमित कुमार, छोटू विश्वकर्मा,आशीष कुमार, अमित, जितेंद्र कुमार, पिंटू सिंह, पूर्व प्रधान अरुण सिंह आदि प्रमुख लोग मौजूद रहे।

मैनेजर को अनिवार्य सेवानिवृत करने पर जवाब दाखिल करे यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस

प्रयागराज। ब्रांच मैनेजर को अनिवार्य सेवानिवृत्ति देने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यूनाइटेड इंश्योरेंस इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड चेन्नई से जवाब तलब किया है। जवाब दाखिल करने के लिए चार सप्ताह की मोहलत दी है। मामले की सुनवाई अब 16 अगस्त को होगी। कोर्ट ने यह आदेश मैनेजर डॉ. गजेंद्र सिंह निवासी गाजियाबाद की अर्जी स्वीकार करते हुए दिया। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति अजीत कुमार कर रहे हैं।गाजियाबाद निवासी डॉ. गजेंद्र सिंह यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड में शाखा प्रबंधक पद पर कार्यरत थे। याची के अधिवक्ता सुनील चौधरी के अनुसार शाखा प्रबंधक गजेंद्र सिंह वर्ष 2000 में एक इंश्योरेंस कवर चेक इस विश्वास के साथ बनवाया था कि ग्राहक उसी दिन शाम को पैसा जमा कर देगा। ग्राहक समय से पैसा नहीं दे सका। दूसरे दिन आकर ग्राहक ने दूसरे चेक देकर उसी दिन इंश्योरेंस बनवा लिया, लेकिन चेक बाउंस हो गया। इसी दौरान गाड़ी कुछ दिन बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गई। ग्राहक ने गलत तरीके से मोटर दुर्घटना का दावा करके न्यायालय के माध्यम से कंपनी से सवा तीन लाख रुपये ले लिया। इस भुगतान को कंपनी ने बड़ी लापरवाही मानते हुए गजेंद्र सिंह की सेवा समाप्त कर दी। इसके खिलाफ याची ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। हाईकोर्ट की एकल और दो जजों की पीठ से याचिका खारिज होने के बाद गजेंद्र ने फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। सुप्रीम कोर्ट ने सेवा समाप्ति के आदेश को निरस्त करते हुए इंश्योरेंस नियमावली के तहत इससे छोटा दंड देने का निर्देश कंपनी को दिया। कंपनी ने कोर्ट के आदेश पर उसी दंड के बराबर गजेंद्र सिंह को अनिवार्य सेवानिवृत्त दे दी। कंपनी के इस आदेश को गजेंद्र सिंह ने फिर इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी। हाईकोर्ट ने चार सप्ताह में कंपनी से जवाब मांगा है।

क्षेत्र पंचायत सदस्य ने पति की तेरहवीं पर वृक्षों का वितरण कर पेश की मिशाल

मऊआइमा। मऊआइमा क्षेत्र के तिलई बाजार में क्षेत्र पंचायत सदस्य के पति के तेरहवीं कार्यक्रम के स्थान पर पेड़ो का वितरण करके एक नई मिसाल पेश की है। जो चर्चा का विषय बना हुआ है। बताया जाता है कि मऊआइमा तिलई बाजार मजरा घीनपुर निवासिनी उर्मिला देवी के पति बृजलाल मौर्य का 16 जून को देहांत हो गया था। वही रविवार को तेरहवीं कार्यक्रम के स्थान पर शोक सभा एवम् श्रद्धांजलि देने के बाद सैकड़ों लोगों को पेड़ का वितरित किया गया । वृक्ष वितरण की पहल से क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। उनके पुत्र सुरेश कुमार मौर्य ने बताया कि शोकाकुल परिवार को तेरहवीं कार्यक्रम करने से आर्थिक क्षति पहुंचती हैं। यही उसके स्थान पर वृक्षों का वितरण किया जाए तो लोगों की आर्थिक स्थिति भी ठीक होगी। और पेड़ लगाने से वातावरण भी शुद्ध रहेगा। इस मौके पर सोरांव विधायिका गीता पासी,जिला पंचायत सदस्य कमरुल हसन , पूर्व ब्लॉक प्रमुख सुधीर मौर्य,प्रवीण मौर्य, संगम लाल मौर्य, टी.एन.मौर्य, मुन्ना मौर्य, राम लखन मौर्य, विजय बहादुर मौर्य, के.के. मौर्य , सन्तोष मौर्य, राकेश मौर्य, रवि चंद्रा, श्याम बाबू, सुरेश कुमार समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

कथित दबंगों ने जेसीबी मशीन से गिराया गरीब का आशियाना

पीड़ित संतोष कुमार पटेल ने एसीपी मेजा से लगाई न्याय की गुहार

अखंड भारत संदेश

मेजा। गांव के कथित दबंगों द्वारा एक गरीब परिवार का कच्चा आशियाना जेसीबी से गिरवाये जाने का मामला प्रकाश में आया है। पीड़ित संतोष कुमार पटेल ने एसीपी मेजा को तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा तहसील क्षेत्र के बरहा कला गांव निवासी संतोष कुमार पटेल ने एसीपी मेजा रवि कुमार गुप्ता को दी गई शिकायत में इस बात का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसके पिता जवाहर लाल पटेल मृतक हो चुके हैं मृतक पिता की भूमि गाटा सं0 694क बरहा कला में स्थित है जिसमें उसका पुस्तैनी पैतृक कच्चा मकान बना हुआ है संतोष पटेल दो भाई है दोनो भाइयों का रहन सहन उनका पुस्तैनी घर है इतना ही एसीपी मेजा को दी गई तहरीर में उसने आरोप लगाया है कि बीते 4 जुलाई को उसके पड़ोसी सुरेश कुमार पटेल व गणेश कुमार पटेल पुत्रगण स्व0 केवला प्रसाद पटेल उसके पैतृक पुस्तैनी कच्चे घर को जेसीबी मशीन से गांव के कुछ दबंगों कैलाश प्रसाद पटेल पुत्र बंशधारी पटेल व प्रेम शंकर पटेल पुत्र अवध नारायण पटेल के उकसाने पर गिरा दिए थे। प्रकरण के बाबत संतोष की बातों को सच माना जाय तो उसके अनुसार उक्त दबंग लोग उसकी उपरोक्त भूमिधारी भूमि पर चकरोड बनवाना चाहते हैं और उसके मना करने पर मारपीट पर अमादा है। एसीपी मेजा से न्याय की गुहार लगाते हुए उसने यह भी लिखा है कि बिना किसी न्यायालय के आदेश के ही उक्त दबंगों ने बल पूर्वक उसका घर गिरवा दिये हैं जो कानूनन अपराध है। तहरीर में घर गृहस्थी का सारा सामान नष्ट होने का भी जिक्र किया गया है।

संचारी रोग जन जागरूकता कार्यक्रम का हुआ समापन

सोरांव। शनिवार को सोरांव ब्लाक अंतर्गत ग्राम पंचायत जैतवार डीह के पंचायत भवन पर तथा ग्राम पंचायत पंडिला के प्राथमिक विद्यालय पर संचारी रोग जन जागरूकता कार्यक्रम कृषि विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा कराया गया। जिसमें दर्जनों लोग उपस्थित रहे। जानकारी के अनुसार सरकार द्वारा संचालित संचारी रोग जागरूकता कार्यक्रम अभियान 1 जुलाई से 31 जुलाई तक मनाया जाना है। जिसको लेकर शनिवार को कृषि रक्षा इकाई सोरांव प्रभारी छोटे लाल यादव ने अपने क्षेत्र के जैतवार डीह और पंडिला में संचारी रोग जन जागरूकता कार्यक्रम भव्य रूप से किया गया। प्रभारी द्वारा इंसान में फैलने वाली बीमारी स्क्रेब तथा टाइफस नामक रोगों के बारे में विस्तार से जानकारी दिए। और बताया कि यह रोग चूहों के संक्रमण के कारण मनुष्य के शरीर तक पहुंचता है। जिससे मनुष्य के त्वचा रोग जैसी गंभीर बीमारी हो जाती है। इसलिए चूहा एवं छछूंदर को नियंत्रित करने के लिए उपस्थित सभी लोगों को जानकारी दिए।

मानस मंदिर से धूमधाम से निकली भगवान जगन्नाथ की भव्य रथयात्रा

मेजा। मानस मंदिर से रविवार को भगवान जगन्नाथ की भव्य रथयात्रा निकाली गई। रथयात्रा में मानस परिवार व भगवान के भक्तों ने पीले वस्त्र धारण कर रथयात्रा के साथ चल रहे थे। आगे-आगे डीजे की धुन पर भक्ति गीतों पर भक्त थिरक रहे थे। रथयात्रा मानस मंदिर से चलकर पावर हाउस शिव मंदिर व बड़े हनुमान मंदिर से होते पूरे चौराहे पर भ्रमण कर पुनः मानस मंदिर परिसर पहुंची। रथयात्रा निकलने से पहले मानस मंदिर में पूजा अर्चना की गई। मानस प्रचारिणी समिति के अध्यक्ष ई नित्यानंद उपाध्याय ने सभी भक्तों का आभार प्रकट किया। रथयात्रा चौकी को भव्य रूप से सजाया एवं सवारा गया था जिसपर भगवान जगन्नाथ विराजमान थे। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर चौकी प्रभारी अरविंद सोनकर मेजा पुलिस के साथ मुस्तैद रहे। इस मौके पर विजयानंद उपाध्याय, पप्पू उपाध्याय, विजयकांत मिश्र, सिध्दांत तिवारी, ओपी पाण्डेय, मुन्नन शुक्ला, बाबा तिवारी, रिंकू ओझा, मनीष उपाध्याय, आशीष उपाध्याय सहित सैकड़ों भक्त प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

अंधेरगर्दीः आधार केंद्रो पर मनमानी से जनता परेशान

अखंड भारत संदेश

वेंडर से संचालित एनपीआरसी स्तरीय आपरेटर्स त्रस्त,भ्रस्त्रचार का आरोप,प्रधान मंत्री,मुख्यमंत्री से जन प्रतिनिधियों ने की शिकायत

कोरांव। सरकार द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन तथा विद्यालयों और किसानों को आधार की अनिवार्यता को देखते हुए सरकार ने बैंको डाक खानों आदि तथा सहज जन सेवा केंद्रों पर आधार बनाने अप्डेटिंग आदि की सुविधा दी थी। किंतु अब सहज जन सेवा केंद्रों से अप्रेटर्स सेवा समाप्त कर दिया जिससे बैंको पर भीड़ लगने लगी। इन्ही सब सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने एनपीआरसी स्तरीय विद्यालयों से ऑपरेटर्स का चयन करने के लिए संभवतः श्री टान इंडिया लिमिटेड कंपनी को टेंडर दिया,किंतु संतोष जनक कार्य न होने से सरकार की छवि धूमिल हो रही।

ऐसा ही मामला जिलों में तैनात कथित रूप से एक लिमिटेड वेंडर द्वारा मनमानी किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। और उस वेंडर के यहां नियुक्त कुछ जिम्मेदार सुविधा शुल्क के कारण ऑपरेटरों का शोषण करते हुए पूरे महीने बंद विद्यालयों की छुट्टी की भांति आधार एपडेटिंग का कार्य ठप कर दिया। जिससे बैंको में आधार बनाने एपडेटिंग का कार्य से भीड़ ज्यादा लगने लगी और बैंक सेवाए प्रभावित होने लगी। जब कि ऐसी कोई सूचना वेंडर कंपनी ने ऑपरेटरों को नहीं दिया कि विद्यालयों के अवकाश तक आधार केंद्र बंद रखे जाएं। चर्चा है कि उक्त वेंडर के कुछ दलालों ने ऑपरेटरों से सुविधा शुल्क की मांग पूरी न किए जाने पर आधार बनाने अथवा अपडेट आदि की सेवाएं जारी रखने के लिए लॉगिंग भी नहीं करने दिया। उल्टा बिना दलालों की खिदमत किए केंद्रों का संचालन निरस्त कर दिए जाने की धमकियां दी जा रही। यह भी चर्चा है कि यदि किसी ऑपरेटर्स ने कहीं शिकायतें किया कराया तो निश्चित ऑपरेटर सेवा निरस्त किए जाने की धमकियां भी मिल रही। इलाके के आधार की जरूरत मंद लोगों को उक्त केंद्रों से काम न होने से ऑपरेटरों पर गुस्सा उतारा जा रहा है, नित्य आधार बनवाने वालों की भीड़ को ऑपरेटर कैसे झेलें कैसे निपटाएं कैसे किसे क्या जवाब दें कि आधार क्यों नहीं बन रहा। चर्चा है कि उक्त ऑपरेटरों को उक्त कंपनी द्वारा कई बार परीक्षा भी कराई,उपकरण भी खरीदवाए जाने को बाध्य किया गया। सुविधा शुल्क भी लिया गया। अब और सुविधा शुल्क न दिए जाने के कारण कथित रूप से आधार बनाने के लिए लॉगिंग नहीं करने दिया जा रहा। उक्त संबंध में हायर अथारिटी के अफसरों से जानकारी का प्रयास किया गया किंतु संपर्क नहीं हो सका। किंतु इस संबंध में अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल के महा मंत्री और सोशल एक्टिविष्ट ने प्रदेश के मुख्य सचिव लखनऊ और जिलाधिकारी प्रयागराज, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज को द्वारा उचित माध्यम मुख्य मंत्री जनसुनवाई पोर्टल से पत्र लिख कर उक्त अव्यवस्था और भ्रष्ट्राचार की जांच और कार्यवाही किए जाने की मांग सात जुलाई 2024 को किया है।

न्यूज झरोखा

धूमधाम से मनाया गया मो. हारून मेमोरियल इंटरमीडिएट कालेज में एनसीसी प्रमाण पत्र वितरण समारोह कार्यक्रम

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के यासीनपुर गाँव में स्थित मो० हारुन मेमोरियल इंटरमीडिएट कालेज में एनसीसी वितरण कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में एमएलसी मान सिंह यादव,हंडिया विधायक हाकिम लाल बिंद और धनूपुर ब्लॉक प्रमुख ज्योति यादव शामिल हुई। बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम पेश किया गया। पारंपरिक संस्कारों से परिपूर्ण अतिथियों का स्वागत किया गया। विधालय के प्रबंधक मो०हारुन के द्वारा आये सभी अतिथियों का जोरदार स्वागत किया गया। एनसीसी कैडेटों के द्वारा अतिथियों को सलामी दी गई। कार्यक्रम में धनुपुर ब्लॉक प्रमुख ज्योति यादव, ने एनसीसी करने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया ।उत्तम सिंह यादव, राजू पासी, श्रीकांत यादव ,जिला पंचायत सदस्य अशोक केसरवानी,असगर अली, उदय राज यादव ,चांद भाई ,आदि लोग मौजूद रहे।

एक वृक्ष मां के नाम कार्यक्रम के अन्तर्गत जिलाध्यक्ष ने किया वृक्षारोपण

नवाबगंज। डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जन्म जयंती पर भारतीय जनता पार्टी की गंगापार अध्यक्ष कविता पटेल ने नवाबगंज मंडल के एक्सेस इंटर नेशनल स्कूल में उनके चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष कविता पटेल ने एक वृक्ष मां के नाम कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूल परिसर में वृक्षारोपण भी किया। जिलाध्यक्ष गंगापार कविता पटेल ने कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हाईवे व सड़क बनाने में बहुत सारे पेड़ काटे गए जिससे पर्यावरण का काफी नुकसान हुआ है हम सबको कमसे कम एक पेड़ जरूर लगाना चाहिए और उसकी देखभाल भी करनी चाहिए जिससे आने वाले समय में हमे राहत मिल सके। इस अवसर पर विधालय प्रबन्धक संजय गुप्ता, प्रशांत गुप्ता,धनंजय दुबे, पवन गुप्ता, विनोद ओझा, उमेश तिवारी,आदि मौजूद रहे।

निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन

जसरा। रविवार को रस्तोगी नर्सिंग होम, जसरा में एक निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का नेतृत्व वरिष्ठ लेप्रोस्कोपिक सर्जन और स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल के सहायक प्रोफेसर डॉ. संतोष सिंह द्वारा किया गया। डॉ. सिंह ने बताया कि आज कुल 35 मरीजों को देखा गया और उन्हें निःशुल्क परामर्श दिया गया। उन्होंने बताया कि सेवा भारती प्रयागराज के मंत्री होने के नाते, उन्होंने हर रविवार को लोगों की निःशुल्क सेवा करने का निर्णय लिया है। डॉ. सिंह ने कहा, "सेवा परमो धर्म" के सिद्धांत पर चलते हुए समाज की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है और हम इसे पूरे समर्पण और निष्ठा के साथ निभाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। शिविर में आए हुए मरीजों ने इस पहल की सराहना की और डॉ. सिंह के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। रस्तोगी नर्सिंग होम जसरा में ऐसे शिविरों का आयोजन भविष्य में भी किया जाएगा ताकि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। उक्त अवसर पर श्यामधर पटेल, राजू पाठक,गिरिजा शंकर दुबे,सुशील,हरि कैलाश बिंद, आकाश पटेल, ज्ञान,कांति ,राम शिरोमणि ,चंद्र प्रकाश, राधे कृष्णा मिश्रा एवं कोमल आदि लोग उपस्थित रहे।

विशाल आटो सेल्स जंघई में ब्लाक प्रमुख द्वारा हीरो स्ट्रीम 125 सीसी लांच

जंघई। विशाल हीरो आटो सेल्स जंघई एजेंसी पर रविवार को हीरो कंपनी की स्ट्रीम 125 सीसी बाइक को ब्लॉक प्रमुख प्रतापपुर शैलेश यादव एवं समाजसेवी राकेश शुक्ला ने फीता एवं केक काट कर लांच किया। विशाल एजेंसी के प्रोपराइटर विनय विक्रम मुन्ना सिंह ने बाइक की गुणवत्ता माइलेज एवं बाइक संबंधित अन्य जानकारी उपस्थित लोगों को बताते हुए अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख एवं राकेश शुक्ला ने एक ग्राहक को नई हीरो स्ट्रीम बाइक की चाभी भी सौंपा। इस अवसर पर सुरेश तिवारी, रामप्रकाश पांडेय, भोला यादव, प्रज्जवल श्रीवास्तव श्रीराम फाइनेंस, प्रकाश दुबे हीरो फिनकार्प फाइनेंस, डॉ सौरभ तिवारी, रविंद्र मिश्रा, दिनेश यादव, संदीप सिंह, हिमांशू यादव, रमेश, प्रदीप, अंशु चौरसिया सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

जमीनी विवाद में विधि छात्र को सिर में मारी गोली, मौत

अखंड भारत संदेश

सोरांव। इलाके के अब्दालपुर खास अचकवापुर निवासी इंद्रजीत पटेल रविवार सुबह लगभग 7 बजे खेत जोतने के लिए ट्रैक्टर के लिए जा रहा था। जैसे ही इंद्रजीत गांव से कुछ दूर गया वैसे ही अवैध असलहा से लैस गांव का ही एक युवक उसके सिर में गोली मार दी।जिससे मौके पर इंद्रजीत की मौत हो गई। गोली की आवाज सुन मृतक के परिवार वाले मौके पर पहुंचे तो आरोप है कि उन लोगों को भी जान से मारने के लिए पिस्तल तान दी। सूचना पर पहुंची सोराव पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं आरोपी युवक को तमंचे के साथ गिरफ्तार करके थाने ले आई। मृतक की मां सविता देवी पत्नी देवतादीन की शिकायती पत्र पर पांच लोगों के खिलाफ सोरांव पुलिस मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।जानकारी के अनुसार इंद्रजीत पटेल 32 पुत्र देवतादीन निवासी अब्दालपुर खास अचकवापुर अपने तीन बहनों के बीच में अपने पिता का इकलौता पुत्र था। सुबह लगभग 7 बजे धान की रोपाई करने के लिए ट्रैक्टर बुलाने जा रहा था जैसे ही वहां गांव के बाहर पहुंचा ही था तभी पुरानी जमीन के रंजिश में आरोपी सर्वेश कुमार उर्फ बबई पुत्र राम सुमेर ने उसके सिर में गोली मार दी। जिससे मौके पर ही इंद्रजीत पटेल की मौत हो गई। गोली की आवाज सुन मृतक की बहन प्रतिमा व परिवार के लोग मौके पर पहुंचे तो आरोपी उन लोगों के ऊपर भी जान से मारने की नियत से पिस्तौल तान दिया। जिससे डर के मारे सभी मौके से भाग गए। इंद्रजीत पटेल महेंद्र लॉ कॉलेज के छठवें सेमेस्टर का विधि छात्र था। और वह राजनीति में भी सक्रिय था। इलाहाबाद हाईकोर्ट में प्रैक्टिस कर रहा था। हत्या की सूचना मिलते ही सोरांव पुलिस संग जिले के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे। तो आरोपी डबल पिस्टल से लैस होकर अपने घर के बाहर टहल रहा था। और जो कोई उसके तरफ जाता उसको गोली मारने की बात करता था। तभी सूचना पर पहुंचे पुलिस उपायुक्त गंगानगर अभिषेक भारती ने आरोपी को जिंदा पकड़ने के लिए पुलिस बल को आदेश दिए। योजना बद्ध तरीके से सोरांव पुलिस ने आरोपी को तमंचे के साथ गिरफ्तार कर लिया। वही मृतक की मां सविता देवी पत्नी देवतादीन ने गांव के ही सर्वेश कुमार उर्फ बबई पुत्र राम सुमेर सहित चार लोगों के खिलाफ शिकायती पत्र देकर हत्या का केस दर्ज करवा दिया है। उधर मृतक के किसान पिता संग परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। वहीं थाना प्रभारी सतीश कुमार का कहना है कि शांति व्यवस्था के लिए गांव में पुलिस बल तैनात किया गया है। आरोपी को पकड़कर पूछताछ जारी है। ..इस बाबत पुलिस उपायुक्त गंगानगर अभिषेक भारती का कहना है कि मृतक और आरोपी के घर वालों से करीब 14 साल से जमीनी विवाद चल रहा था। इसी बात को लेकर अभियुक्त ने गोली मारी है। अभियुक्त को गिरफ्तार करके विधिक कार्यवाही की जा रही है।

माफिया अतीक के भाई अशरफ की कुर्क जमीन पर बना लिया मकान, कर दी प्लॉटिंग, एफआईआर दर्ज

प्रयागराज। पूरामुफ्ती में भूमाफिया का चौंकाने वाला कारनामा सामने आया है। शाहा उर्फ पीपलगांव में माफिया अतीक अहमद के भाई खालिद अजीम उर्फ अशरफ की कुर्क जमीन पर अवैध तरीके से मकान बना लिया। यही नहीं, प्लॉटिंग की भी कर दी गई। जानकारी पर प्रशासनिक अमले में हड़कंप मचा। इसके बाद आननफानन में अज्ञात पर एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।अतीक की तरह ही अशरफ भी चिह्नित माफिया था। 2008 में पुलिस ने पूरामुफ्ती(तत्कालीन धूमनगंज) में स्थित शाहा उर्फ पीपलगांव में उसकी अपराध से अर्जित दो संपत्तियों को चिह्नित किया। इनमें से एक आराजी संख्या 1115, रकबा 0.4680 हेक्टेयर और दूसरी आराजी संख्या 808, रकबा 0.1140 हेक्टेयर शामिल है। राजस्व अभिलेखों में यह दोनों जमीनें अशरफ के नाम पर दर्ज थीं। 14 जुलाई 2008 को गैंगस्टर एक्ट की धारा 14(1) के तहत इन दोनों जमीनों को कुर्क कर दिया गया, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 42 बिस्वा थाप्रशासनिक अमले में पिछले दिनों तब हड़कंप मचा जब यह सूचना मिली कि कुर्क जमीन पर मकान बना लिए गए हैं और प्लाटिंग भी की जा रही है। आननफानन में अफसरों ने संबंधित लेखपाल महेंद्र कुमार व चौकी प्रभारी से स्थलीय निरीक्षण कर रिपोर्ट देने को कहा। स्थलीय निरीक्षण में सूचना सही पाई गई। आराजी संख्या 1115 में तीन मकान बने पाए गएयही नहीं, शेष भूमि पर प्लॉटिंग किया जाना भी पाया गया। यह जानकारी अफसरों को मिली तो आननफानन में कार्रवाई के निर्देश दिए गए। इसके बाद अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। डीसीपी नगर दीपक भूकर ने बताया कि जैसे ही इस मामले की सूचना मिली, तत्काल एफआईआर दर्ज कर ली गई। जांच शुरू कर दी गई है। जो भी दोषी होगा, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। निर्माण के चार साल बीते,कैसे नही लगी भनक सूत्रों का कहना है कि माफिया की कुर्क जमीन पर जो मकान बने पाए गए हैं, उनमें से एक के निर्माण को चार साल बीत चुके हैं। इसी तरह एक अन्य मकान को एक साल का समय हो चुका है। सवाल यह है कि आखिर कैसे इसकी भनक जिम्मेदारों को नहीं लग सकी। गौरतलब है कि गैंगस्टर एक्ट में कुर्क संपत्ति की देखरेख के लिए प्रशासक नियुक्त किया जाता है। कार्रवाई का आदेश देने वाले डीएम या पुलिस कमिश्नर की ओर से इसे नियुक्त किया जाता है। प्रशासक को यह सुनिश्चित करना होता है कि कुर्क की गई जमीन पर अतिक्रमण न हो पाए। सवाल यह उठता है कि माफिया की कुर्क जमीन पर अवैध कब्जा व निर्माण होता रहा तो आखिर प्रशासक को इसका पता कैसे नहीं चला।

आशीर्वाद देने निकले भगवान जगन्नाथ

प्रयागराज। रविवार को उड़ीसा की तरह प्रयागराज में भी इस बार तीन रथ निकले गए बड़े रथ पर भगवान जगन्नाथ बहन सुभद्रा और बड़े भाई बल भद्र भव्य स्वरूप के साथ जनमानस को आशीर्वाद देने निकले बाहर से आए हुए कारीगर ने रथ को तैयार किया है भगवान का श्रृंगार मुकुट जयपुर के कारीगरों ने तैयार किया है। महोत्सव समिति की रथ यात्रा हीवेट रोड स्थित जगन्नाथ मंदिर शिव दुर्गा व हनुमान मंदिर महापालिका स्कूल मोहतसिमगंज से पूरी भव्यता के साथ निकाली गई भगवान जगन्नाथ के पोशाक में 16 प्रकार के रत्न लगे हुए है जिस रथ पर भगवान जगन्नाथ सवार थे वह रथ 16 फीट लंबा 12 फीट चौड़ा है गुंबद पर नीला चक्र सुशोभित है राम दरबार की भव्य झांकी महाराष्ट्र के कलाकारों द्वारा डांडिया का प्रदर्शन वाराणसी के डमरु ग्रुप के कलाकार के द्वारामहाकाल की झांकी गुरमीत सिंह के द्वारा भजन की प्रस्तुति भक्तों के आकर्षण के केंद्र थे भक्तगण 100 फीट लंबी नाग वासुकी रस्सी से भगवान का रथ खींच रहे थे भगवान जगन्नाथ के रथ की आरती और स्वागत किया जा रहा था जॉनसेन गंज ओम संस्था गौरी शंकर द्वारा प्रसाद वितरण किया गया प्रयाग व्यापार मंडल द्वारा आरती की गई और समिति के लोगों को माला पहनाकर स्वागत किया गया। दर्शन यात्रा में राजेश केसरवानी पंडित दिगंबर त्रिपाठी गौरी शंकर अरुण केसरवानी सोहेल अहमद शगुन भैया अनूप केशरवानी भरत कनौजिया गौरी शंकर वर्मा गोपाल मिश्रा विजय चौरसिया नीरज साहू नीतू रावत शंकर लाल कुशवाहा मोहम्मद आमिर आकाश चौरसिया आनंद शुक्ला पंकज शुक्ला पाषर्दगढ़ दर्शन यात्रा में साथ चल रहे थे एसीपी विनोद कुमार सिंह व कोतवाली की पुलिस दर्शन यात्रा को सकुशल संपन्न कराया।

सपा के प्रदेश अध्यक्ष का आगमन कल सोमवार को

प्रयागराज। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री श्यामलाल पाल 8 जुलाई सोमवार को प्रयागराज आएंगे। जिला मीडिया प्रभारी दान बहादुर मधुर के अनुसार प्रदेश अध्यक्ष श्री श्यामलाल पाल दोपहर बारह बजे विधानसभा क्षेत्र प्रतापपुर के देवली गाँव में पार्टी के जिला सचिव नन्हे विश्वकर्मा के आवास पर आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में पहुंचेगे। सायं 7 बजे सोहबतियाबाग स्थित एक गेस्ट हॉउस में डॉ रामराज पाल के निजी कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे।

पुराने यमुना पुल पर विपरीत दिशा से आने के कारण लगता है जाम

नैनी। नैनी विपरीत दिशा से आने के कारण लगता है जाम पुराने यमुना पुल पर रविवार को भीषण जाम लगा रहा। पुराने यमुना पुल पर शहर की ओर जाने वाले रास्ते पर विपरीत दिशा से आने वाले ई रिक्शा और बाइक सर्वार के चलते घंटों जाम की स्थिति बनी रही। जाम में फंसकर हजारों राहगीर घंटों परेशान रहे। लेकिन इनकी सुनने वाला कोई भी जिम्मेदार मौजूद नहीं रहा। नतीजतन लोगों को जाम में बेहाल होना पड़ा। यहां तक की जाम में मरीजों को ले जा रही एंबुलेंस भी फंसी रहीं।

ऐतिहासिक दिव्य भव्य होगा 2025 महाकुंभ : डिप्टी सीएम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि महाकुंभ 2025 ऐतिहासिक दिव्य और भव्य होगा। डिप्टी सीएम ने ये बातें रविवार को जनपद प्रयागराज के उमरपुर नीवा स्थित श्री नर्मदेश्वर शिव मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा एवं मूर्ति स्थापना अनुष्ठान में सम्मिलित होने के दौरान कही। उन्होंने कहा कि महाकुंभ 2025 की दिव्यता भव्यता ऐतिहासिक होगी और लगभग 50 करोड़ लोगों के आने की संभावना है। महाकुंभ से संबंधित कार्यों पर निगाह रखी जा रही है और संबंधित योजनाओं को समय से पूरा करने का निर्देश भी अधिकारियों को दिया गया है। अनुष्ठान में वैदिक विधि विधान से श्री नर्मेदश्वर शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा की गई। अनुष्ठान के बाद सर्किट हाउस पहुंचे डिप्टी सीएम ने वहां एकत्र जनता की समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को समस्या निस्तारण का निर्देश दिया। इस बीच चायल विधायक पूजा पाल के भाजपा में शामिल होने एवं हाथरस कांड पर मीडिया द्वारा सवाल पूछे जाने पर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि धार्मिक आयोजन पर राजनीतिक सवाल उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि भगवान भोलेनाथ का पूजन हवन- यज्ञ अनुष्ठान कर श्रद्धालुओं, स्थानीय जनों व प्रदेशवासियों के अच्छे स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए प्रार्थना की। वे लगभग 20 वर्ष बाद नीवा गांव आए हैं। इससे पहले बमरौली एयरपोर्ट पर फूलपुर भाजपा सांसद प्रवीण पटेल, महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्र, महापौर गणेश केसरवानी, अवधेश चंद्र गुप्ता, विधायक गुरु प्रसाद मौर्य, जिलाध्यक्ष यमुनापार विनोद प्रजापति, जिलाध्यक्ष गंगापार श्रीमती कविता पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष वीके सिंह, केपी श्रीवास्तव, एम एल सी, निर्मला पासवान रवि केसरवानी, अविनाश दुबे, मुरारी लाल अग्रवाल, नवाब खान, राजेश गोंड, आनंद दुबे, शिवा त्रिपाठी, संजय श्रीवास्तव, विजय गुप्ता, मनीष गुप्ता विवेक मिश्र आदि उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक में मूलभूत नागरिक सुविधाओं पर हुई चर्चा

नैनी। नैनी ददरी वार्ड 40 के समर्पित कांग्रेस कार्यकर्ताओं की एक बैठक रविवार को पीडीए कॉलोनी नैनी मे वरिष्ठ कांग्रेसी नेता डॉ रईसयय अहमद के आवास पर सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता सुनील श्रीवास्तव एवं संचालन मुकेश कुमार गुप्ता ने किया। इस अवसर पर डॉ रईस अहमद ने जनता के मूलभूत सुविधाओं तथा नागरिक समस्याओं के प्रति चर्चा करते हुए कहा कि हम सब को जागरूक रहते हुए संगठित होकर जनसमस्याओं के समाधान हेतु यथासंभव प्रयासरत रहना चाहिए। वहीं दिनेश अम्बेदकर ने नगर निगम सीमा विस्तारित क्षेत्रों में बिजली, पानी, सड़क, सफाई व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त करते कहा कि कुम्भ मेला के समय बाहर से आने वाले तीर्थयात्री नैनी क्षेत्र के गली मोहल्लों में अपने परिचितों के यहां ठहरने आते हैं जहां खस्ताहाल गलियों से आने-जाने में घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बैठक में नौशाद पठान, मीना जायसवाल, अंजुम नाज, सुषमा विश्वकर्मा आदि ने भी विचार व्यक्त किया।

अरैल में निकाली गई भगवान जगन्नाथ की शोभायात्रा

नैनी। नैनी अरैल महर्षि महेश योगी आश्रम से भगवान जगन्नाथ जी निकले नगर भ्रमण पर महर्षि महेश योगी आश्रम के प्रभारी सुनील श्रीवास्तव के नेतृत्व में जगन्नाथ जी नगर भ्रमण के लिए जगन्नाथ मंदिर के पुजारी बीरची सतपतिके पूजा अर्चना के पश्चात महर्षी आश्रम के प्रभारी सुनील श्रीवास्तव मंदिर प्रभारी धर्मेंद्र श्रीवास्तव के नेतृत्व में सैकड़ो की संख्या में भक्तों ने भगवान जगन्नाथ जी का रथ को खींचकर अपने को धन्य बनाया। इस अवसर पर पूर्व कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख संजय श्रीवास्तव आचार्य विमल मिश्रा आचार्य ऋषि त्रिवेदी पहलाद नायक अवनीश शास्त्री जितेंद्र दास जयप्रकाश तिवारी आचार्य सैकड़ो की संख्या में भक्तगण मौजूद थे।

पत्रकार विकास परिषद का हुआ विस्तार शम्भूनाथ बने जिला प्रभारी संजय बने जिला संयोजक

पत्रकार विकास परिषद के राष्ट्रीय सचिव/प्रदेश प्रभारी द्वारा किया सम्मानित

प्रयागराज। पत्रकार विकास परिषद भारत के प्रदेश कार्यालय में पत्रकार विकास परिषद के राष्ट्रीय सचिव/प्रदेश प्रभारी डीके मिश्र एवं प्रदेश पूर्वांचल सचिव डॉ अरविंद कुमार द्वारा पत्रकार विकास परिषद भारत उत्तर प्रदेश इकाई चित्रकूट में ज़िले की कमेटी को विस्तार दिया गया जहां जिला प्रभारी का कार्यभार शम्भूनाथ गोस्वामी को सौंपा गया वही जिला संयोजक संजय विश्वकर्मा को नियुक्त किया गया और प्रदेश कार्यालय में प्रशस्ति पत्र.डायरी.पेन देकर सम्मानित किया गया। वही चित्रकूट के जिला प्रभारी एवं जिला संयोजक ने राष्ट्रीय सचिव व प्रदेश प्रभारी डी के मिश्र का आभार व्यक्त करते हुए कहा की संगठन के दिशा निदेशों के अनुरूप कार्य करेंगे और संगठन द्वारा जो जिम्मेदारी दी गई है पूरी निष्ठा ईमानदारी के साथ संघर्ष करते हुए पत्रकार विकास परिषद भारत परिवार को मजबूती के साथ आगे बढ़ाने का कार्य किया जायेगा।

अस्पताल संचालिका से दुराचार करने वाले युवक को भेजा जेल

फाफामऊ। अस्पताल संचालिका से दुराचार करने वाले युवक को पुलिस ने रविवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मलाक हरहर स्थित एक अस्पताल संचालिका को उसी के बिरादरी का फर्जी नाम बताकर युवक ने अस्पताल संचालिका से दोस्ती की थी। बाद में युवक ने शादी का झांसा देकर अस्पताल संचालिका के साथ कई बार दुराचार किया था। युवती गर्भवती हो गई तो उसका गर्भपात करा दिया। जिस पर अस्पताल संचालिका ने फाफामऊ थाने में आरोपी युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। रविवार को फाफामऊ पुलिस थाना प्रभारी प्रवीण कुमार गौतम के नेतृत्व में मुखबिर की सूचना पर दुराचार करने वाले आरोपी मोहम्मद असद उर्फ सेबू उर्फ अशहद निवासी कैंट बेली को मलाक हरहर चौराहे से गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी करने के बाद जेल भेज दिया।

तहसील परिसर में फर्जी अधिवक्ताओं पर चलेगा हंटर

बगैर सीओपी के किसी अधिवक्ता को नहीं बनवाया जायेगा चैंबर

अखंड भारत संदेश

सोरांव। बार एसोसिएशन सोरांव के कार्यकारिणी की एक अहम बैठक शनिवार को सभागार में आहूत की गई। जिसकी अध्यक्षता बार एसोसिएशन के अध्यक्ष कमलाकांत मिश्रा एडवोकेट ने किया। वहीं पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम बहादुर सिंह और महामंत्री रमेश नारायण मिश्र द्वारा कहा गया कि तहसील परिसर में अधिवक्ता के भेष में आ रहे फर्जी अधिवक्ता किसानों और पीड़ितों को ठगने का कार्य कर रहे हैं। जिससे तहसील की छवि धूमिल हो रही है। तथा तहसील परिसर में आए दिन अधिवक्ता संग वादकारियों की बाइक व साइकिल की चोरी का घटना होना भी आम बात हो गई है। इसलिए कार्यकारणी ने फर्जी अधिवक्ताओं पर अंकुश लगाने के लिए एक परिचय पत्र भी जारी करेगा। जिससे सही अधिवक्ताओं की पहचान हो सकेगी। तथा बगैर पंजीकृत अधिवक्ताओं को पहचान करने में भी आसानी होगी। फर्जी अधिवक्ताओं के पहचान की जिम्मेदारी कार्यकारणी के अधिवक्ताओं की होगी। जो भी फर्जी अधिवक्ता विधि व्यवसाय करते पकड़ा जाएगा कार्यकारणी उस पर अंतिम निर्णय लेगी। फर्जी अधिवक्ता चेतावनी की सूचना सोमवार को सार्वजनिक चस्पा कर दिया जायेगा। तथा बगैर सीओपी के जो अधिवक्ता विधि व्यवसाय कर रहे हैं। कार्यकारणी ऐसे अधिवक्ताओं को चैंबर बनवाने के पक्ष में नहीं दिखा। बैठक में संयुक्त मंत्री प्रकाशन रमेश चंद्र पटेल एडवोकेट संयुक्त मंत्री प्रशासन प्रदीप केसरवानी, कनिष्ठ उपाध्यक्ष बृजेश कुमार शुक्ला व मनोज यादव,संजय पटेल एडवोकेट, वरिष्ठ कार्यकारणी सदस्य बाल गोविंद यादव, राजेश कुमार यादव व हरिश्चंद्र एडवोकेट संग कार्यकारणी के विद्वान अधिवक्तागण मौजूद रहे।

4 करोड़ के मकान की 20 लाख में रजिस्ट्री कराई

टीचर के साथ धोखाधड़ी, सिविल लाइंस में केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज में एक टीचर के साथ धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। सिविल लाइंस थाने में शिक्षिका ने किराएदार के खिलाफ धोखाधड़ी कर मकान हड़पने का मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस तहरीर पर आरोपी किराएदार के खिलाफ केस दर्ज कर जांच कर रही है। सिविल लाइंस में ताशकंद मार्ग की रहने वाली सुधा शुक्ला मुंबई में शिक्षिका हैं। उनके पति भी मुंबई में नौकरी करते हैं। इसके चलते वे अक्सर बाहर रहते हैं। यहां उनकी बुजुर्ग सास रहती हैं। इसका फायदा उठाकर मकान में रहने वाले किराएदार बीके पांडेय ने बुजुर्ग महिला के साथ धोखाधड़ी कर चार करोड़ रुपए के मकान की 20 लाख में रजिस्ट्री करा ली।

खाते से रकम भी निकाल ली : इतना ही नहीं झांसा देकर दिए गए 20 लाख रुपए भी खाते से निकाल लिया। इसकी जानकारी होने पर कोर्ट में मुकदमा किया गया। सुधा के मुताबिक 13 मई को वह आई तो देखा कि किराएदार ने उनके कब्जे वाले हिस्से का ताला तोड़कर अपना ताला लगा दिया है। इतना ही नहीं उन्हें घर में घुसने नहीं दिया। तब पीड़िता ने सिविल लाइंस थाने में तहरीर दी।

जिंदा को मृतक प्रमाण पत्र जारी करने वाले सचिव को बचाने में जुटे अफसर

डीपीआरओ ने डीडीओ को लिखा है पत्र

करछना। ब्लाक क्षेत्र के एक गांव में जिंदा व्यक्ति को मृतक बताकर मृत्य प्रमाण जारी करने के आरोपित सचिव कमल सिंह को अफसर बचाने में जुटे हैं। जिला पंचायत राज अधिकारी ने इस मामले में जिला विकास अधिकारी को पत्र भी लिखा है। इसके बाद भी राजनीतिक रसूख के कारण सचिव पर कार्रवाई नहीं हो सकी। करछना ब्लाक के महेवा गांव के भोलानाथ पुत्र बाबूलाल का आरोप है कि उसे जिंदा रहते सचिव कमल सिंह ने मृत बता दिया था। भोलानाथ के नाम से मृत्यु प्रमाण पत्र भी जारी कर दिया गया। भोलानाथ ने उच्च अधिकारियों को खुद के जिंदा होने का सबूत देते हुए जांच और कार्रवाई की मांग की। जिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी को जानकारी हुई तो उन्होंने जांच का निर्देश दिया। करछना के एडीओ पंचायत की जांच में सचिव कमल सिंह को दोषी पाया गया। पूरी रिपोर्ट बनाकर जिला पंचायत राज अधिकारी को भेजी गई। डीपीआरओ ने सचिव कमल सिंह पर कारवाई के लिए 11 जून 2024 को जिला विकास अधिकारी को पत्र लिखा। लगभग एक माह बीतने के बाद भी आरोपी सचिव पर कोई कारवाई नहीं हो सकी। अब एक बार फिर से पीड़ित भोलानाथ ने आरोपी सचिव कमल सिंह पर कारवाई को लेकर मुख्यमंत्री और अधिकारियों को पत्र लिखा है। इस संबंध में डीडीओ भोला नाथ कनौजिया का कहना है कि तथ्यों की जांच की जा रही है। मामले में जल्द ही कार्रवाई की जाएगी।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय और दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय गया के बीच समझौता ज्ञापन

प्रयागराज। प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सगीता श्रीवास्तव एवं दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविधालय, गया, बिहार में स्थित केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. एन. सिंह के मार्गदर्शन में आज दोनों विश्वविधालय के कुलसचिव कर्नल राजीव कुमार सिंह एवं कुलसचिव प्रो. एन. के. शुक्ल ने दोनों विश्वविधालय के मध्य समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इन दो प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा किए गए इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य आपसी प्रयासों के माध्यम से शैक्षिक एवं शोध परिदृश्य को बढ़ाते हुए अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देना है। यह रणनीतिक साझेदारी पारस्परिक रूप से शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविधालय , प्रयागराज एवं शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविधालय, गया के मध्य अकादमिक सहयोग एवं शोध पर केंद्रित है। इस समझौता ज्ञापन (एमओयू) में उल्लिखित सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में संकाय सदस्यों और शोधार्थियों का आपसी आदान-प्रदान शामिल है, जिससे दोनों विश्वविद्यालय एक-दूसरे की शैक्षणिक और अनुसंधान क्षमताओं से लाभान्वित हो सकेंगे। यह सहयोग अकादमिक डेटा, वैज्ञानिक जानकारी, बौद्धिक संपदा, लेख और प्रकाशनों को साझा करने तक फैला हुआ है, जिससे ज्ञान और संसाधनों के समृद्ध आदान-प्रदान की सुविधा मिलती है। इसके अतिरिक्त, उन्नत शिक्षण पद्धतियों और शैक्षणिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए स्कूली शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के लिए संयुक्त शैक्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस समझौते के तहत सुलभ और उच्च गुणवत्ता वाली ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए दोनों विश्वविद्यालय शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षाशास्त्र के विभिन्न विषयों पर व्यापक खुली ऑनलाइन पाठ्यक्रम (टडडउ२) के विकास पर जोर देंगें साथ ही दोनों संस्थानों के आपसी हित के विषयों पर संयुक्त सम्मेलन और संगोष्ठियाँ का आयोजित करेंगे साथ देश की शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु अकादमिक चर्चा और सहयोग के लिए मंच तैयार करेंगे। विद्यार्थियों का विनिमय कार्यक्रम इस एमओयू का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो दोनों संस्थानों के विद्यार्थियों को विविध शैक्षिक वातावरण और संस्कृतियों का अनुभव करने का अवसर प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, दोनों विश्वविधालय विद्यार्थियों के इंटर्नशिप और परियोजना प्रशिक्षण के लिए सहायता प्रदान करेगें, व्यावहारिक कार्य अनुभव प्रदान करेगें और रोजगार क्षमता बढ़ाने में एक दुसरे का सहयोग करेंगें। यह सहमति ज्ञापन अकादमिक उत्कृष्टता और नवाचार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करेगा, क्योंकि इलाहाबाद विश्वविद्यालय और दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपनी सामूहिक शक्तियों और संसाधनों का लाभ उठाने के लिए हाथ मिलाया है। इस सहयोग से छात्रों, शिक्षकों और व्यापक शैक्षणिक समुदाय को पर्याप्त लाभ मिलने, प्रगति को बढ़ावा देने और ज्ञान साझा करने और बौद्धिक विकास की संस्कृति को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

मदरसा से भागे तीन नाबालिग जंक्शन पर मिले

प्रयागराज। सहरसा (बिहार) के रहने वाले तीन बच्चे प्रयागराज जंक्शन पर मिले। प्लेटफॉर्म छह पर हाथ में बैग लिए बच्चों से आरपीएफ के जवानों ने पूछताछ की तो तीनों ने अपना निवास सहरसा बताया। तीनों ने कहा कि वे मदरसा से भागे हैं। आरपीएफ के उप निरीक्षक गौरव, हेड कांस्टेबल प्रवीण कुमार और महिला कांस्टेबल पूजा गुप्ता ने आगे पूछताछ की तो तीनों ने अपना नाम, पता और उम्र सही बताया, लेकिन मदरसे का नाम नहीं बता सके। तीनों बच्चों ने अपना नाम मोहम्मद मिजान (13), मोहम्मद सुफियान (सात) और मोहम्मद इकबाल (आठ) बताया। तीनों सहरसा के बालम घडिया गांव अपना पता बताया। नाराज होकर भागने वाले बच्चों के बैग में पुराने कपड़े, नमकीन, बिस्किट और किताबें मिलीं। तीनों बच्चे किसी का मोबाइल नंबर भी नहीं बता पाए। पूछताछ के बाद बच्चों को रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट लाकर भोजन दिया गया। इसके बाद तीनों बच्चों को चाइल्ड लाइन को सौंप दिया गया।

27 परीक्षा केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सम्पन्न हुई सीटेट की परीक्षा

पहली बेला में 75 और दूसरी बेला में 63 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

हर परीक्षा केन्द्र पर तैनात रहे सीबीएसई के पर्यवेक्षक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के 27 परीक्षा केन्द्रों पर सेंट्रल टीचर्स एलिजबिलिटी टेस्ट (सीटेट) की परीक्षा दो पालियों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सम्पन्न हुई। हर परीक्षा केन्द्र पर सीबीएसई के पर्यवेक्षक तैनात रहे और दिल्ली से आई सीबीएसई की टीम परीक्षा केन्द्रों की निगरानी करती रही। परीक्षा में शामिल होने वाले सभी परीक्षार्थियों की परीक्षा केन्द्रों पर बायोमैट्रिक अटेण्डेंस ली गई।

पहली बेला में 540 परीक्षार्थियों में 465 तथा दूसरी बेला में 540 में 477 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। सीबीएसई के पांच अधिकारी दिल्ली से शनिवार को ही प्रतापगढ़ आ गये थे जिन्होंने केन्द्र व्यवस्थापकों की न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल में हुई बैठक में भाग लेकर केन्द्र व्यवस्थापकों को दिशा निर्देश जारी किये थे। प्रश्न पत्रों को न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल में तथा संगम इंटरनेशनल स्कूल में दो स्थानों पर रखा गया था। भोर में चार बजे सीबीएसई के अधिकारियों ने संगम इंटरनेशनल स्कूल से बाक्सों में रखे पेपर उठाया और परीक्षा केन्द्रों पर पहुंचा दिया। सीबीएसई के सिटी कोआर्डिनेटर वीके सोनी व न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल की चेयरपर्सन डा0 शाहिदा ने बताया कि सभी परीक्षा केन्द्रों की उत्तर पुस्तिकाएं न्यू एंजिल्स स्कूल में शाम तक पहुंच गई थीं। 27 परीक्षा केन्द्रों में तीन परीक्षा केन्द्र तिलक इंटर कालेज, संत अंथोनी इंटर कालेज व श्रीराम बालिका इंटर कालेज यूपी बोर्ड के परीक्षा केन्द्र थे। शेष 24 परीक्षा केन्द्र न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, संस्कार ग्लोबल, नागेश दत्त पब्लिक स्कूल लालगंज, डाल्फिन पब्लिक स्कूल आदि सभी स्कूल सीबीएसई बोर्ड के थे। सभी परीक्षा केन्द्रों पर सकुशल परीक्षा सम्पन्न हुई। परीक्षा सम्पन्न होने के बाद जिले में हुई वर्षा से लोगों को आने-जाने में कठिनाई का सामना करना पड़ा।

बायोमैट्रिक मशीन से अटेण्डेंस देते परीक्षार्थी।

लगातार हो रही वर्षा से किसानों के चेहरे खिले

धान की रोपाई शुरु, तापमान लुढ़का

अखंड भारत संदेश

खेत में धान की रोपाई करती महिलाएं।

प्रतापगढ़/पट्टी। जिले में तीन दिनों से लगातार हो रही वर्षा से जहां गर्मी व उमस से लोगों को राहत मिली है, वहीं किसान खुश दिखाई दे रहा है। धान की रोपाई के लिये उसके खेतों में पानी लबालब है। ऐसे में अच्छी तरह से वह धान की रोपाई कर पा रहा है।मौसम विभाग की मानें तो आज 42 मिलीमीटर वर्षा हुई। सुबह हल्की बारिश हुई लेकिन अपरान्ह तीन बजे से साढे चार बजे तक तेज वर्षा हुई जिससे अधिकतम तापमान 33.6 और न्यूनतम तापमान 25.4 पर रहा। पट्टी संवाददाता के मुताबिक तहसील क्षेत्र इलाके में बीते 24 घंटे से रुक-रुक कर हो रही जोरदार बारिश से मौसम सुहाना नजर आ रहा है। वही जोरदार बारिश होने के बाद किसानों ने रोपाई जोर से शुरू कर दी है। बता दें मानसून की दस्तक के बावजूद भी जून माह में बूंद भर बारिश न होने से किसान मायूस नजर आ रहे थे। जुलाई माह में बीते 24 घंटे से इलाके में रुक-रुक कर हो रही जोरदार बारिश से किसानों के चेहरे खिल उठे हैं और किस जोर-शोर से धान की रोपाई करने में जुट गए हैं। क्षेत्र के किस का कहना है कि बीते 24 घंटे से हो रही बारिश से खेतों में पानी की कमी से निजात मिली है और धान की रोपाई में आ रही बाधाओं से छुटकारा मिला है।

65 बच्चों को दी गयी स्वर्णप्राशन की खुराक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आरोग्य भारती काशी प्रांत की प्रतापगढ़ इकाई द्वारा रविवार को पुष्य नक्षत्र में निःशुल्क स्वर्णप्राशन शिविर में 65 बच्चों के उत्तम शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए स्वर्ण-भस्म, घृत एवं मधु जैसे घटकों से युक्त औषधि पिलाई गई। सिद्धि चाइल्ड एन्ड पॉली क्लिनिक पर आयोजित इस शिविर का आरोग्य भारती के जिला अध्यक्ष डा सुधांशु उपाध्याय ने भगवान धन्वंतरि के चित्र पर पुष्प अर्पित कर शुभारम्भ किया। बाल रोग विशेषज्ञ डा विभाकर मिश्रा ने बताया कि बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास तथा इम्युनिटी बढ़ाने के लिए हर माह कैंप लगाकर बच्चों को आयुर्वेद में वर्णित स्वर्णप्राशन की खुराक निःशुल्क दी जा रही है। अगला स्वर्णप्राशन शिविर 4 अगस्त को आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर डा सुधांशु उपाध्याय, डा विभाकर मिश्रा, शनि प्रजापति, शिवाकांत मिश्रा, अनीस अंसारी मौजूद रहे।

पत्रकार महासंघ के चुनाव में विकास मिश्र अध्यक्ष व साकेत बने महामंत्री

भा0 रा0 पत्रकार महासंघ की कार्यकारिणी का हुआ निर्विरोध निर्वाचन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की तहसील इकाई की कार्यकारिणी के सभी पदो पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ। संघ के सभी सदस्यों ने विकास मिश्र को अध्यक्ष व साकेत मिश्र को महामंत्री चुना। रविवार को तहसील सभागार में गहमागहमी के बीच हुए चुनाव में रविवार को अध्यक्ष समेत सभी पदों के लिए एक एक ही नामांकन होने के चलते पदाधिकारियों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

अध्यक्ष पद पर विकास नारायण मिश्र तथा जितेन्द्र तिवारी ने नामांकन दाखिल किया था। हालांकि नामवापसी के समय जीतेन्द्र तिवारी ने अपना नामांकन पत्र वापस ले लिया। इसके बाद विकास मिश्र निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए। प्रदेश उपाध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल की देखरेख में हुए चुनाव में चुनाव परिणामों की घोषणा चुनाव समिति के संयोजक डॉ0आशीष सिंह ने किया। निर्वाचन में आशुतोष आशु वरिष्ठ उपाध्यक्ष, लवलेश शुक्ल उपाध्यक्ष, राजू तिवारी कोषाध्यक्ष, जाकिर अली आय-व्यय निरीक्षक, आनन्द त्रिपाठी संगठनमंत्री, मुकेश सिंह संयुक्त मंत्री तथा मुकेश तिवारी मीडिया प्रभारी निर्वाचित हुए। वहीं प्रान्तीय प्रतिनिधि अनिल त्रिपाठी महेश, गौरी शंकर त्रिपाठी, उमेश त्रिपाठी तथा मंडलीय प्रतिनिधि आईपी मिश्रा, प्रमोद सिंह, अशोक धर दुबे, जिला प्रतिनिधि राघवेन्द्र मिश्र रामू व संजयमणि शुक्ल चयनित हुए। चुनाव समिति के संयोजक डॉ0आशीष सिंह व सदस्य चन्द्रशेखर तिवारी,अखिलेश मिश्र, सुरेन्द्र तिवारी सागर ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को निर्वाचन प्रमाण पत्र सौंपा। नवनिर्वाचित अध्यक्ष विकास मिश्र ने पत्रकारों के मानसम्मान के लिए संघर्ष तथा महामंत्री साकेत मिश्र ने संगठन की मजबूती का भरोसा दिलाया। वरिष्ठ पत्रकार शैलेन्द्र मिश्र, सुनील सिंह, विनोद सिंह, राजकुमार मिश्र, शत्रुघ्न पाण्डेय ने पत्रकारों की सुरक्षा तथा सुविधाओं को लेकर एजेण्डे पर प्रकाश डाला। निर्वाचन के बाद साथी पत्रकारों ने विजयी पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर खुशी जताई। एक दूसरे का मुंह भी मीठा कराकर निर्वाचित पदाधिकारी भी खुशियां साझा करते दिखे। इस मौके पर मनोज त्रिपाठी, सुशील सिंह बघेल, संतोष तिवारी, राहुल मिश्र, शिवकरन चतुर्वेदी, अनूप त्रिपाठी आदि रहे।

पत्रकार महासंघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारीगण।

ईओ के निलम्बन के बाद किसी की नहीं हुई तैनाती, पालिका का कार्य प्रभावित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बारिश के मौसम में अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका राम अचल कुरील को शासन से निलंबित किया गया है। निलंबन के बाद नए अधिकारी को शासन ने तैनात नहीं किया जिससे नगर पालिका का काम प्रभावित हो रहा है। बता दें कि 29 जून से अधिशाषी अधिकारी का पद रिक्त चल रहा है। इस समय बारिश के चलते शहर में लगातार जल जमाव की समस्या से शहरी जूझ रहे हैं। नालों नालियों के निर्माण और रिपेयरिंग के हो रहे काम बाधित हो गया है। बिना अधिशाषी अधिकारी के हस्ताक्षर इस्टीमेट पर नहीं हो पा रहा है।

नवाबगंज थाने में पुलिस की कार्यशैली को लेकर भाजपाईयों ने जताया विरोध

भाजपा मंडल उपाध्यक्ष से अभद्रता को लेकर दिखा आक्रोश

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज पुलिस की कार्यशैली को लेकर रविवार को भाजपा जिलाध्यक्ष ठाकुर प्रकाश सिंह व कुसुवापुर मंडल अध्यक्ष मोहित मिश्रा की अगुवाई में नवाबगंज थाने में भाजपा कार्यकर्ताओ के ऊपर पुलिस की कार्यशैली को लेकर विरोध जताते हुए प्रदर्शन किया और कहा कि नवाबगंज पुलिस द्वारा भाजपा कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न किया जा रहा है।

पुलिस कार्यशैली को लेकर आक्रोश जताते भाजपा कार्यकर्ता।

भाजपाईयों का आरोप था कि चेकिंग के दौरान पिछले दिनों मंडल उपाध्यक्ष मोहित मिश्रा के साथ पुलिस ने अभद्रता किया। नवाबगंज पुलिस भाजपा कार्यकर्ताओ को टारगेट करके उनके ऊपर फर्जी उत्पीड़नात्मक कारवाईं करने से बाज नही आ रही है। पुलिस की इस कारवाई को लेकर भाजपा कार्यकताओ में आक्रोश फैल गया। इसी तरह अन्य मामले में पीड़ित पक्ष को थाने का चक्कर काटने के बाद उनको न्याय नही मिल रहा है। मुख्यमंत्री पोर्टर की शिकायत को अनदेखी किया जा रहा है, जिससे पीड़ित थाने जाने से पीछे हट रहे हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं ने कहा कि अगर पुलिस की कार्यशैली ठीक न हुई तो उसके विरोध में थाने परिसर में प्रदर्शन किया जाएगा। इस मौके पर जिलाध्यक्ष ठाकुर प्रकाश सिंह, मंडल अध्यक्ष मोहित मिश्रा व महेश सिंह, उदय शंकर मिश्र, अमरजीत सिंह, उमाशंकर पटेल, प्रदीप गुप्ता प्रधान कोराली, शुभम सोनकर मंडल उपाध्यक्ष प्रकाश मौर्य, रमाकांत, भारतलाल पटेल, सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

बीएसए ने किया प्रधानाध्यापक को निलंबित

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास खंड रामपुर संग्रामगढ़ के महमदपुर खास में तीन वर्षों से तैनात प्रधानाध्यापक विकास चंद्र पांडे को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़ भूपेंद्र सिंह ने 5 जुलाई को निलंबित कर दिया। सूत्रों की माने तो प्राथमिक विद्यालय में रहकर इनके द्वारा कोविड-19 में आई धनराशि को बच्चों के खाता में प्रेषित नहीं करना और अप्रैल 2023 के पूर्व एम डी एम खाते का संचालन ग्राम प्रधान के साथ न किया जाना एवं वित्तीय अनियमित की स्थिति उत्पन्न करना समेत कई मामलों को संज्ञान में लेते हुए बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़ ने निलंबित कर दिया। विभाग की इस कारवाई से अन्य शिक्षकों मे हड़कंप मच हुआ है।

रिक्त सदस्य पद के उप निर्वाचन के लिये मतदान पार्टी हुई रवाना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश के दिशा निर्देश के क्रम में जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव रंजन के कुशल नेतृत्व एवं अपर जिलाधिकारी प्रतापगढ़/उप जिला निर्वाचन अधिकारी त्रिभुवन विश्वकर्मा के निर्देशन में नगर पंचायत प्रतापगढ़ सिटी के वार्ड संख्या-6 बागमिर्जा के रिक्त सदस्य पद के उप निर्वाचन हेतु 08 जुलाई 2024 को होने वाले मतदान हेतु स्टेटिक मजिस्ट्रेट/नायब तहसीलदार सदर प्रतापगढ़ आनंद कुमार अपने साथ मतदान कार्मिकों को लेकर बूथ के लिए रवाना हुए। इस अवसर पर प्रभारी सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि आप सभी शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव संपन्न कराएंगे। इस अवसर पर एआरपी धर्मेन्द्र ओझा,मतदान अधिकारी, सुरक्षाकर्मी एवं संतोष कुमार आदि उपस्थित रहे।

मतदान कार्मिकों के संग रवाना होती पालिंग पार्टियां।

दो दिन में ताबड़तोड़ पांच घरों में चोरी

आये दिन हो रही चोरियो से आक्रोश

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जनपद के संग्रामगढ़ थाना क्षेत्र मे आये दिन हो रही चोरियो से ग्रामीणो मे आक्रोश पनप रहा है लोग अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे है पुलिस गस्त के होते हुए भी चोर पुलिस का लुका छिपी खेल चालू है। मालूम हो कि सग्रामगढ़ थाना के स्टेट बैंक संग्रामगढ़ बाजार के पास कमलेश यादव पुत्र रामपाल यादव पनिगो मानिकपुर निवासी बिल्डिंग जुड़ाई की दुकान खोल रखी है। शुक्रवार की बीती रात अज्ञात चोरो ने पीछे दीवार के सहारे दुकान के अंदर घुसकर अंदर रखा कटर मशीन बिल्डिंग का कटा 80 किलो मोटा लोहा उठा ले गये। इतना ही नहीं, पिछले सप्ताह चोरों ने थाना क्षेत्र के कालू सिंह का पुरवा मे दीवार फादकर संगम लाल पटेल के घर से 20 हजार नगदी व सोने चांदी के लाखो रुपये के जेवरात चुरा ले गये। इसी गांव के रमेश कुमार शुक्ला व हरदेव पटेल के घर मे दीवार फांद कर घर मे घुस गये और कीमती सामान चुराकर ले गये घटना की जानकारी जब सुबह परिजनों को हुई तो हड़कंप मच गया और घटना की तहरीर पुलिस को दी। चोरो की आमद होने से ग्रामीण लोग रात जागकर अपने घरो की रखवाली कर रहे है। ग्राम वासियो ने नवागत पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार से संग्राम गढ़ थाना क्षेत्र में आये दिन हो रही चोरियो पर अंकुश लगाने की गुहार लगाई है।

प्राइवेट स्कूलों के पैकेज से हलाकान में अभिभावक

अखंड भारत संदेश

जरा बच्चों के बस्ते व अभिभावकों के खर्चे हो हल्के

पट्टी, प्रतापगढ़। सरकार निशुल्क शिक्षा के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करने का काम कर रही है।सरकार का यह कहना भी है कि प्राथमिक शिक्षा प्रत्येक बच्चों का मूल अधिकार है। इस अधिकार से कोई भी बच्चा वंचित न रहे पर सरकारी स्कूलों की दशा दिन-प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है। ऐसे में गरीब परिवार के बच्चे भी प्राइवेट स्कूलों की तरफ रुख कर रहे हैं, पर प्राइवेट स्कूल संचालक अभिभावकों की जेब काटने में लगे हुए हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद स्कूल खुलते ही बच्चों के लिए उनके यहां भारी भरकम पैकेज तैयार रखा है जिसका वहन करना गरीब व असहाय अभिभावकों के खर्चे से इतर है लेकिन प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए अभिभावक पेट की रोटी काट कर बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने की जुगत में लगे हुए हैं। कुछ स्कूल तो बाहरी दुकानों पर सेटिंग कर किताबों के लागत मूल्य पर 50 से 60 प्रतिशत वापसी लेने की पॉलिसी चला रखे हैं। उनके स्कूल की किताबें केवल उसी सेटिंग की दुकान पर ही उपलब्ध होगी अन्यत्र आप कहीं भी उसे खरीद नहीं सकते और बचे हुए कुछ विद्यालय तो यह सारा सिस्टम अपने स्कूल में ही बना रखा है। स्कूल में ही ड्रेस, पेन, पेंसिल, कॉपी, किताब आदि सामान वहीं से प्राप्त करना अनिवार्य होता है। किताबें भी इतनी संख्या में लेनी है कि बच्चों के बस्ते इतने वजनी हो जाते हैं कि बच्चा अपने बस्ते का बोझ उठा ही नहीं सकता है लेकिन किताबें खरीदना बच्चों के लिए अनिवार्य है। यह सब इसलिए होता है क्योंकि जितनी संख्या में किताबें होंगी उतना ही बचत होगा। किसी किसी विद्यालय में कक्षा एक में पढ़ने वाले बच्चों को लगभग 8 से 9 किताबें खरीदनी पड़ती है जबकि सरकार रटने वाली शिक्षा को कमकर रचनात्मक शिक्षा पर जोर दे रही है। यदि एक भी सामान लेने से अभिभावक मना कर देता है तो दुकानदार पूरा सामान वापस लेकर संबंधित स्कूल में बच्चों की शिकायत भी कर देते हैं। मजबूरी में अभिभावकों को अपनी गाढ़ी कमाई से मनमाने मूल्य पर अपने बच्चों के लिए खरीदते हैं। जिम्मेदार भी इन स्कूलों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही नही उठाते जिसके चलते इनके हौसले बुलंद हैं।

मां के नाम पौधरोपित कर करें उसकी देखभालः डीएफओ

एक पौध मां के नाम रोपित करने का क्लब का अभियान निरंतर जारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। वन महोत्सव सप्ताह के अंतर्गत एलायंस क्लब इंटरनेशनल द्वारा चलाए जा रहे पौधरोपण/पौध वितरण अभियान में आज सिविल लाइन, दहिलामऊ, स्टेडियम, चिलबिला आदि जगहों पर पौधरोपित कर पौधवितरण भी किया गया। आज क्लब के पदाधिकारियों के साथ आमजनमानस में भी अपने-अपने मां के नाम एक-एक पौधरोपित कर दूसरों को भी पौधरोपित करने के लिए प्रेरित किया गया।

पौधरोपण अभियान में पौधरोपण करते डीएफओ।

क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने कहा कि आज चिलबिला, स्टेडियम नगर में पौधवितरित कर सभी से अनुरोध किया गया कि आप सब इस अभियान में जुड़कर मां के नाम एक-एक पौधरोपित कर उसकी सुरक्षा करें। जैसे मां ने हम सब का किया था यही पौधे ही कल हमें व हमारे बच्चों को जीवन देंगे। पर्यावरण को बचाना हम सब की जिम्मेदारी भी है और कर्तव्य भी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीएफओ जे0पी0 श्रीवास्तव ने कहा कि आप सब मां के नाम पौधा जरूर रोपित करें यही सभी जनमानस से अपील है। अभियान में आज सहयोग करने वालों में आशीष शुक्ला, जिला क्रीड़ा अधिकारी पूनम लता राज, पूर्व क्रीड़ा अधिकारी, वॉलीबॉल कोच मुन्ना तिवारी, डॉ0 दयाराम मौर्य, परियोजना अधिकारी शिवम यादव, डिप्टी रेंजर केपी यादव, छेदीलाल, संतोष कुमार, देवानंद, आदर्श कुमार, विवेक कुमार, शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा, अर्चना खंडेलवाल, सुधा अग्रवाल, पूनम गुप्ता, रेखा उमरवैश्य, ज्योति आदि अभियान में लगकर जगह-जगह पौधरोपण/पौध वितरण कर रहे हैं।

पोस्टमार्टम के बाद घर पहुंचा किशोर का शव, परिजनों का बुरा हाल

हत्या कर कुएं में फेंकी गयी थी लाश, पुलिस ने सात संदिग्धों को उठाया

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। हत्या कर कुएं में फेंके गए किशोर का शव पोस्टमार्टम के बाद घर पहुंचा तो परिजनों में कोहराम मच गया। घर से थोड़ी दूर पर परिजनों ने शव को दफन कर दिया। इस दौरान भारी फोर्स मौजूद रही। पट्टी कोतवाली के जलालपुर किठौली गांव निवासी अवधेश के बेटे उमेश 11 साल को एक जुलाई कि रात अगवा कर हत्या कर लाश घर से पांच सौ मीटर दूर कुएं फेंक दिया था।

शुक्रवार दोपहर पुलिस ने शव को कुएं से निकलवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।शनिवार शाम चार बजे पोस्टमार्टम के बाद किशोर का शव घर पहुंचा तो परिजनों में कोहराम मच गया। घर से थोड़ी दूर पर परिजनों ने लाश को दफना दिया। जिससे पुलिस ने राहत की सांस ली। इस दौरान पट्टी पुलिस मौजूद रही। पट्टी पुलिस ने इस मामले में गांव के सात संदिग्धों को कोतवाली लाकर पूछताछ कर रही है। किशोर की मां सरस्वती ने कहा कि मेरे बेटे को मेरे सामने ही आरोपितो ने मार डाला। लेकिन सवाल यह है कि आरोपितों ने जब सरस्वती के सामने उसके बेटे की हत्या की तो यह बात उसने घटना की रात सूचना पर घर पहुंची पुलिस को क्यों नहीं बताई।क्यों गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई।इस बात की चर्चा लोगों की जुबान पर दिन भर रही। ग्रामीणों का कहना है कि इस मामले में बच्चे की मौत का रहस्य मां सरस्वती व उसी दिन संदिग्ध दशा में घायल पड़ोसी युवक के बीच में है।पुलिस मामले की खुलासा करेगी तो सच सामने आ जाएगा।

बिजली के करेंट से गाय की मौत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे के आलापुर निकट रविवार की सुबह बिजली के गिरे नगे तार की करेंट की चपेट मे आने से मौके पर मौत हो गई जिसकी जानकारी मिलते ही आलापुर की बिजली सप्लाई पावर हॉउस से बन्द कर दी गई बिजली के तार मे फसे गाय को बाहर निकालकर आपूर्ति बहाल की गई।

पत्रकार के पिता के निधन पर प्रमोद-मोना ने जताया शोक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। हिंदी दैनिक समाचार के ब्यूरो चीफ गिरजेश तिवारी के पिता पंडित इंद्रपाल त्रिपाठी का बीती रात प्रयागराज में इलाज के दौरान निधन हो गया। सूचना पर राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी, नेता कांग्रेस विधान मंडल दल, रामपुर खास से विधायक आराधना मिश्रा मोना सहित कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉ0 नीरज त्रिपाठी ने गहरी संवेदना व्यक्त की है। इस दौरान शोक संवेदना व्यक्त करने वालों में मुख्य रूप से सांसद प्रमोद तिवारी के मीडिया प्रभारी एडवोकेट ज्ञान प्रकाश शुक्ल, कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष डा0वी0के0सिंह व कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी ने भी शोक संवेदना व्यक्त की है। उधर धर्माचार्य ओम प्रकाश पाण्डेय ने भी वरिष्ठ पत्रकार गिरजेश तिवारी के पूज्य पिता पंडित इंद्रपाल तिवारी के निधन पर शोक जताया है। उन्होंने विनम्र श्रद्धांजलि दी और परिजनों को इस दुःख की घड़ी को सहन करने की क्षमता प्रदान करने की कामना की।

प्रदेश के उप मुख्यमंत्री नर्मदेश्वर शिव मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा में हुए सम्मिलित

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने रविवार को उमरपुर नीवा में स्थित नर्मदेश्वर शिव मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा एवं मूर्ति स्थापना कर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त किया तथा हवन-यज्ञ अनुष्ठान कर श्रद्धालुओं, स्थानीय जनों व प्रदेशवासियों के अच्छे स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए प्रार्थना की। उप मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि उनके मन में सदा यह भाव रहता है कि प्रयागराज एवं कौशाम्बी को अलग-अलग करके विकास की योजना नहीं बननी चाहिए,बल्कि सम्मिलित रूप से बननी चाहिए, और उसको लगभग हम लोगों ने एक स्वरूप देने का प्रयास किया हैं। उन्होंने जनपद प्रयागराज एवं कौशाम्बी के अधिकारियों को निर्देशित किया कि टीम लगाकर एक सप्ताह के अन्दर कार्ययोजना तैयार कर नीवा के सम्पूर्ण विकास के लिए क्या-क्या कार्य किया जा सकता है,उन विकास कार्यों को पूर्ण करने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास रहेंगा कि एक प्रस्ताव जल्दी से जल्दी बन जाय, जिससे नीवा प्रयागराज का हिस्सा हो जाय। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास रहेंगा कि नीवा पर्यटन केन्द्र के रूप में भी विकसित हो। उन्होंने कहा कि जनपद प्रयागराज में अनेक विकास के कार्य हो रहें हैं इस अवसर पर सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल विधायक पूजा पाल, महापौर गणेश केशरवानी,महानगर अध्यक्ष राजेन्द्र मिश्रा,जिलाध्यक्ष यमुनापार विनोद प्रजापति,जिलाध्यक्ष गंगापार श्रीमती कविता पटेल एवं जिलाध्यक्ष भाजपा कौशाम्बी धर्मराज मौर्य उपस्थित रहें।

हाई टेंशन तार की चपेट में आए दो युवक हालत गंभीर

कौशाम्बी। जिले में बिजली विभाग की लापरवाही के चलते झूलती हुई हाई टेंशन तार की चपेट में दो युवक आ गए। दोनों युवक पिकप गाड़ी को धक्का मार रहे थे। झूलती हुई हाई टेंशन तार के संपर्क में पिकप गाड़ी आ गई जिसके कारण दोनों युवक गंभीर रूप से झुलस गए। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने दोनो युवकों को अस्पताल में भर्ती कराया जहां पर उनका इलाज चल रहा है। घटना कोखराज थाना क्षेत्र के टेंगाई गांव की है जहां खेत में धान की रोपाई के लिए राहुल और रूपेश धान की बेहन पिकअप में लादकर खेत ले जा रहे थे। बारिश के चलते गाड़ी कीचड़ में फंस जाने से दोनों युवक गाड़ी में धक्का लगा रहे थे। वहीं 11000 वोल्टेज की तार गुजरी हुई थी जहां पर धक्का लगाते समय दोनों युवक करंट की चपेट में आकर झुलस गए। दोनो को ग्रामीणों ने इलाज हेतु जिला अस्पताल पहुंचाया गया।

न्यूज झरोखा

जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने किया पौधारोपण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने शनिवार को समाधान दिवस में फरियाद सुनने के बाद तहसील परिसर चायल में पौधारोपण किया इस मौके पर पौधारोपण से होने वाले फायदे के बारे में अधिकारियों ने उपस्थित लोगों को बताया पौधारोपण के बाद अधिकारियों ने जनपदवासियों को अधिक से अधिक पौधारोपण करने के प्रति जागरूक किया।

मूरतगंज से हर्रायपुर रोड बनी पार्किंग, रोजाना हजारों छात्रों को आवागमन में दिक्कतों से जूझना पड़ता है

हर्रायपुर कौशाम्बी। सदीपन घाट थाना के अंतर्गत मूरतगंज चौकी क्षेत्र के मेला बाग के पीछे रामवन गमन मार्ग के निर्माण में लगी डामर गिट्टी प्लांट के चलते सैकड़ों ट्रके मूरतगंज से हर्रायपुर मार्ग में पूरे दिन सड़क पर खड़े रहते हैं जिससे आवा गमन बाधित होता है लेकिन सड़क को पार्किंग बनाने पर रोक के बावजूद पुलिस मजबूर दिखाई पड़ रही है स्कूल के छात्र-छात्राओं सहित हजारों लोगों का इस सड़क पर पूरे दिन आना-जाना लगा रहता है लेकिन सड़क पर सैकड़ो वाहन खड़ा रहने से आवागमन में दिक्कत होती है सड़क निर्माण में लगे ठेकेदार द्वारा सड़क को पार्किंग बना दिए जाने के चलते हजारों ग्रामीण का आना-जाना दुश्वार हो चुका है सड़क पर वाहन खड़ा करना अपराध है पुलिस के कानून में भी इस बात का उल्लेख है प्रतिदिन पुलिस इस रोड पर आती जाती है लेकिन ठेकेदारों पर कार्यवाही करने की जुर्रत चौकी पुलिस नहीं कर पा रही है आखिर ठेकेदारों पर सड़क कब्जा करने के मामले में इन पर मुकदमा क्यों नहीं दर्ज कराया जा रहा है आम जनता दिक्कतों से जूझ रही है लेकिन ठेकेदारों की मनमानी लगातार जारी है इन पर कब रोक लगाई जाएगी यह सवाल खड़ा है।

आशुलिपिक पेशकार एवं चपरासी के पद पर चयन के लिए साक्षात्कार 8 जुलाई को

कौशाम्बी स्थायी लोक अदालत, कौशाम्बी में आशुलिपिक के लिए 01 पद, पेशकार के लिए 01 पद तथा चपरासी के लिए 01 पद, कुल 03 पदों पर जो, कि जिला न्यायालय अथवा कलेक्ट्रेट के सेवानिवृत्त कर्मियों में से अधिकतम 02 वर्ष के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे, आवेदकों का दिनांक 08 जुलाई 2024 को सायं 4:30 से साक्षात्कार का आयोजन किया जाना सुनिश्चत है। यह जानकारी अपर जनपद न्यायाधीश/सचिव,जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पूर्णिमा प्रांजल ने देते हुए समस्त आवेदकगण को सूचित किया है कि अपने समस्त मूल योग्यता प्रमाण पत्र के साथ नियत साक्षात्कार तिथि को स्थान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण,कौशाम्बी के कार्यालय में उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

मोहर्रम का चांद दिखा मजलिसों व मातम का दौर शुरू

बीबी को पुरसा देने के लिए घरों में बिछेगा फर्श अजा, दस दिनों तक अलम ताबूत तो कही निकला जाएगा जुलजनाह

कौशांबी। मोहर्रम का चांद शविवार को नजर न आने के चलते सोमवार को मोहर्रम की पहली तारीख से गांव गांव कस्बे से लेकर शहर में जगह-जगह गम-ए-हुसैन मनाने को मजलिसों और मातम का दौर शुरू हो गया है। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के चाहने वाले दस दिन बहत्तर की शहादत पर गिरया करेगें, और पूरे दो माह आठ दिन घरों में किसी प्रकार की खुशियां नही मनाई जाएंगे शादी विवाह जैसी कामों को भी दो माह आठ दिन तक नहीं किया जाएगा। करारी कस्बा के नयागंज से शुरू हुआ मजलिसों मातम का दौर कस्बों में विभिन्न स्थानों पर ताजिये बनाना भी शुरू हो गए हैं। इमाम चौक पर पूरी रात फतिहा और नजर नियाज का सिलसिला चलेगा। शहरों से लेकर गांव-गांव की गालियों में गूंजेगा हुसैन या हुसैन की सदा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने इंसाफ की लड़ाई लड़ कर बहत्तर के साथ शहीद हुए। आज पूरे दुनिया में सिर्फ.हुसैन हुसैन की सदा आ रही है।याजीद का कोई नाम लेने वाला नही बचा यजीद का काम था लोगों पर जुल्म सितम करना। मौलाना सैयद जाहिद हुसैन रिजवी ने मजलिस में खिताब करते हुए कहा कि अगर हम सब हकी की इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के चाहने वाले हैं। तो ना ही किसी के मालो दौलत पर नजर रखें और ना ही किसी का माल गज्ब करें। उन्होंने कहा अगर किसी मोमिन ने सारी जिंदगी अल्लाह की दरगाह में अपने आप को मशगूल रखा हो और अगर उसकी नीयत किसी के माल और दौलत पर पड़ जाए तो यह समझ लो उसके सारी जिंदगी अल्लाह की बारगाह में मजगूलियत का कोई फायदा नहीं रहेगा। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपने हक और इंसाफ की लड़ाई के लिए 72 साथियों के साथ शहीद हो गए जालिम यजीद की बय्यत नहीं की, दुनिया में दिखा दिया कि शहीद होकर भी जुल्मों सितम को खत्म किया जा सकता है। शोज खानी जनाब एहसन ने किया वही तंजीम रजा ने नौहा पढ़ा कहती थीं रो रो जैनब अब्बास जल्द आओ सीने पे शिमर बैठा खंजर चला रहा है। अंजुमने अब्बासिया करारी के नौहख्वानो नौहा पढ़ा अजा का आगया मौसम तुम्हे जहरा दुआ देंगी,करो शब्बीर का मातम तुम्हे जहरा दुआ देंगी।

मरीजों को बेहतर से बेहतर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराई जाए : डीएम

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने रविवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र,करारी का सांय 6:00 बजे औचक निरीक्षण कर स्वास्थ्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने प्रसव कक्ष के निरीक्षण के दौरान एडमिशन रजिस्टर तथा प्रसव पजिंका का अवलोकन किया। फमिसिस्ट से स्टाक बुक (मेडिसिन) के बारे में जानकारी तथा आवश्यक मेडिसिन की उपलब्धता की जानकारी भी प्राप्त किया। उन्होंने प्रभारी चिकित्सा अधिकारी से प्रतिदिन ओपीडी की जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि मरीजों को बेहतर से बेहतर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराई जाए निरीक्षण के दौरान अधीक्षक मो. आदिल, चिकित्सा अधिकारी खुशनुमा बानो, फार्मासिस्ट धमेन्द्र सिह उपस्थित रहे। लेबर रूम मे स्टाफ नर्स साधना सिंह उपस्थित पायी गयी।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, करारी का डीएम ने किया निरीक्षण

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, करारी स्थित प्रसव केन्द्र का निरीक्षण कर स्वास्थ्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया।जिलाधिकारी ने चिकित्सालय की साफ- सफाई, प्रसव पंजिका तथा एडमिशन रजिस्टर का अवलोकन कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने ड्?यूटी पर उपस्थित ए0एन0एम0 प्रीती देवी को प्रसूता को निर्धारित समयावधि 48 घंटे तक अस्पताल में रुके रहने के लिए निर्देशित किया।

करारी थाना का निरीक्षण कर डीएम ने व्यवस्थाओं का लिया जायजा

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने रविवार को थाना करारी का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान अपराध रजिस्टर का अवलोकन करते हुए थाना प्रभारी से गुंडा एक्ट एवं गैंगस्टर एक्ट के अपराधियों के विषय में जानकारी तथा आज किए गए कार्यवाही के संबंध में भी जानकारी प्राप्त किय। उन्होंने थाना समाधान दिवस रजिस्टर का अवलोकन करते हुए थाना प्रभारी से कहा कि थाना समाधान दिवस में प्राप्त होने वाली शिकायतों का निस्तारण समयबद्ध तथा नियमानुसार सुनिश्चित किया जाये। इसके साथ ही महिला हेल्प डेस्क का भी निरीक्षण किया गया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। उन्होंने थाना प्रभारी से कहा कि आगामी त्यौहार के दृष्टिगत क्षेत्र में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखा जाय,यदि कोई व्यक्ति माहौल खराब करने का प्रयास करता है तो उसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही किया जाये।

सेंट फ्रांसिस स्कूल बेरुआ में सम्पन्न हुआ वृक्षारोपण कार्यक्रम

छात्रों ने लिया प्रदूषण मुक्त पृथ्वी बनाने का संकल्प

विश्व युवक केंद्र, वसेरा द्वारा एक मासीय पर्यावरण जागरूकता अभियान का हुआ समापन

एक पौध माँ के नाम प्रधानाचार्य जेराल्ड पी. डिसूजा को पर्यावरण प्रहरी सम्मान 2024 से किया गया सम्मानित

भरवारी कौशाम्बी। विश्व युवक केंद्र दिल्ली तथा वसेरा प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में चलाया जा रहा विश्व पर्यावरण दिवस 2024 एक मासीय जागरूकता तथा वृक्षारोपण अभियान का समापन सेंट फ्रांसिस स्कूल बेरुआ में सम्पन्न हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य जेराल्ड पी डिसूजा को पर्यावरण के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिये वसेरा द्वारा पर्यावरण प्रहरी सम्मान 2024 से अंगवस्त्र तथा सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने वृक्ष रैली निकाल कर वृहद वृक्षारोपण का कार्य किया। वृक्षारोपण के पश्चात भूमि पुनर्स्थापना मरुस्थलीकरण, सूखा लचीलापन विषय पर परिचर्चा संवाद आयोजित हुआ। इसमें छात्र-छात्राओं द्वारा बढ़ते तापमान के कारण इस वर्ष मई- जून में जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को साझा किया।जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए छोटी नदियों, परंपरागत जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन, वृक्षो की कटान कम करने तथा वृक्षारोपण अभियान निरंतर चलाने का सुझाव दिया।सभी छात्र-छात्राओं ने हमारी धरती, हमारा भविष्य के लिये अपने-अपने घरों में माँ के नाम एक पौध लगाने, पृथ्वी को प्रदूषण मुक्त बनाने तथा छोटी नदियों, जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन के माध्यम से भूमि पुनर्स्थापना, मरुस्थलीकरण, सूखा लचीलापन, जलवायु परिवर्तन पर काम करने का संकल्प लिया। इसके पश्चात विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के थीम पर निबन्ध तथा चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। छात्राओं में अनुष्का वर्मा , निष्ठा , आंशिक मिश्रा, आस्था खरे तथा छात्रों में सुधीर कुमार निर्मल,शाश्वत, विभोर मोदनवाल तथा श्रेयांश को प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया वृक्षारोपण अभियान में सम्मिलित सभी छात्र-छात्राओं को सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। बसेरा के सेक्रेटरी देवेन्द्र कुमार शर्मा ने विश्व युवक केंद्र के प्रति वसेरा को पर्यावरण अभियान के लिए अपना सहयोगी चुनने पर आभार प्रकट किया। उन्होंने बताया कि बच्चे ही हमारे भविष्य है, आने वाली पीढ़ी को धरोहर के रूप में स्वच्छ पर्यावरण देना हम सभी की जिम्मेदारी है। आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण के प्रति चिंता विद्यालय द्वारा सर्वोत्तम प्रदान की जा रही शिक्षा का परिणाम है।सभी शिक्षण संस्थानों में माह में एक दिन इसी तरह विभिन्न विषयों पर परिचर्चा आयोजित किया जाना चाहिए।विद्यालय के प्रधानाचार्य ने स्मृति चिन्ह देकर वसेरा के सचिव का स्वागत किया।

बेखौफ काटे जा रहे हरे फलदार पेड़

लकड़ी माफिया से वन विभाग व पुलिस की साठगांठ की चर्चा तेजी पर

धरती पर जितने पौधारोपण का दावा सरकार कर रही है उसका एक चौथाई हिस्सा भी जमीन पर दिखाई नहीं पड़ रहा

कोखराज कौशाम्बी। योगी सरकार वृहद पौधारोपण करने की बात कर रही है लेकिन स्थानीय पुलिस प्रशासन लकड़ी माफियाओं को संरक्षण देकर हरियाली को नष्ट करने में लगे हैं जिससे वृहद पौधारोपण करने की बात बेमानी साबित हो रही है कहने के लिए सरकार प्रति वर्ष लगभग 20 लाख पौधा रोपण कर रही है लेकिन सच्चाई यह है कि धरती पर जितने पौधारोपण का दावा सरकार कर रही है उसका एक चौथाई हिस्सा भी जमीन पर दिखाई नहीं पड़ रहा है जिससे सरकार के दावे पर सवाल खड़े हो गए हैं जो बड़ी जांच का विषय है लेकिन योगी सरकार में जांच के नाम पर केवल तमाशा हो रहा है दोषी अधिकारी और माफियाओं को दंड नहीं मिल रहा है कंप्यूटर में पौधारोपण हो रहा है जमीनी हकीकत में पौधारोपण नहीं हो रहा है दूसरी तरफ हरे भरे पेड़ों को लकड़ी माफिया काटकर हरियाली नष्ट करने में लगे हैं और विभाग के अधिकारी तमाशा देख रहे हैं कोखराज थाना क्षेत्र के अली गंज रसूलपुर राला सैलाबी काकराबाद विदनपुर आदि ग्राम में इन दिनों लगातार हरे फलदार आम नीम महुआ के पेड़ो को लकड़ी माफिया द्वारा प्रतिदिन काटा जा रहा है लेकिन वन विभाग के कर्मचारियों और चौकी पुलिस को केवल घूंस से मतलब रह गया है और वही हल्का क्षेत्र के दरोगा का कहना है कि हमे कोई जानकारी नहीं है आखिर राजू नाम के लकड़ी माफिया को इन दिनों पेड़ काटने के पीछे कौन बल दे रहा है लकड़ी माफिया अब अधिकारियों को भी अपने आगे कुछ नहीं समझता है पेड़ काटने का सिलसिला रोज जारी हैं रविवार की सुबह लकड़ी माफिया राजू अली गंज में एक हरे विशाल महुआ के पेड़ को आधा दर्जन मजदूरों से कटवा कर वाहन से उठा ले गया लेकिन पुलिस व वन विभाग को लकड़ी माफिया के पेड़ कटान की भनक तक नहीं लगी जिससे हरियाली पर गहरा संकट मंडराने लगा हैं सवाल उठता है कि क्या जिम्मेदार अधिकारी इन लकड़ी माफिया को रोक लगा पायेंगे या इसी तरह हरे पेड़ो को काटने के लिए लकड़ी माफिया को खुला छूट देंगे।

पूर्व विधायक के लोग कब्रिस्तान की जमीन पर कब्जा करने का कर रहे प्रयास

एसडीएम के आदेश के बावजूद पूर्व विधायक के लोग जमीन पर चला रहे थे ट्रैक्टर

कौशाम्बी। जिले के नगर पालिका परिषद भरवारी की अध्यक्ष कविता पासी और उनके लोगों द्वारा सरकारी जमीन पर कब्जा किया जा रहा है सरकारी जमीन पर कब्जा करने वालो पर योगी सरकार के सख्त आदेश और कार्यवाई का खौफ नहीं दिख रहा है। कब्रिस्तान की जमीन पर भी कब्जा करने से यह लोग बाज नहीं आ रहे हैं। प्रशासन के आदेश के बावजूद भाजपा नेता और पूर्व विधायक के लोग जबरन कब्रिस्तान की जमीन पर ट्रैक्टर चला रहे थे। जमीन के जिम्मेदारों को पता चला तो एक महिला मौके पर पहुंची और बहस करने के बाद पूर्व विधायक के लोग ट्रैक्टर लेकर और फावड़ा छोड़कर फरार हो गए। मामला नगर पालिका परिषद भरवारी के वार्ड नंबर 24 शहीद गुलाब सेन नगर के बिसुई का है जहां भरवारी कस्बे की पुरानी बाजार मोहल्ले की रहने वाली महमूदा बेगम पत्नी कुतुबुद्दीन ने पुलिस को शिकायती पत्र देते हुए आरोप लगाया है कि गुलाब बिहार कालोनी के बाहर उनकी पुश्तैनी कब्रिस्तान की जमीन है, जिसमें बसपा के पूर्व विधायक दयाराम पासी और उनकी बहू नगर पालिका की अध्यक्ष भाजपा नेता कविता पासी के लोग जबरन कब्जा करने का काम कर रहे हैं। महिला ने आरोप लगाया कि पूर्व विधायक दयाराम के लोग रविवार को सुबह से ही कब्रिस्तान की जमीन पर ट्रैक्टर चला रहे थे, जैसे ही उनको जानकारी मिली वह मौके पर पहुंची और जमीन पर ट्रैक्टर चला रहे मजदूरों और अन्य लोगो ने पूर्व विधायक दयाराम का नाम बताया और उनके बेटे आशीष से बात करने को कहा उसके शोर मचाने पर और कागजात मांगने पर उन लोगो ने फोन पर किसी से बात की और सभी लोग ट्रैक्टर लेकर भाग गए। महिला ने आरोप लगाया कि इसके पूर्व भी पूर्व विधायक दयाराम उनकी पारिवारिक पुश्तैनी कब्रिस्तान की जमीन पर जबरन कब्जा करने का प्रयास कर चुके है, जिसकी शिकायत एसडीएम से करने पर यथास्थित बनाए रखने का आदेश भी दिया गया, लेकिन इसके बावजूद पूर्व विधायक दयाराम एवं नगर पालिका परिषद भरवारी की अध्यक्ष कविता पासी के पति भाजपा नेता आशीष कुमार जबरन कब्रिस्तान की जमीन पर कब्जा करने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। महिला ने बताया कि पूर्व विधायक दयाराम ने उस जगह पर 4 बिस्वा जमीन की रजिस्ट्री कराई थी, जिसको उन्होंने कई लोगो के हाथ बेच भी दिया है। इसके बावजूद अब वह कब्रिस्तान की बेशकीमती जमीन पर जबरन कब्जा करना चाहते हैं। उसने डायल 112 को फोन लगाया लेकिन फोन नहीं लगा, जिसके बाद पुलिस को शिकायती पत्र दिया है और कार्यवाई की मांग की है इस सम्बंध में नगर पालिका भरवारी की अध्यक्ष के पति आशीष कुमार से बात की गई तो उन्होंने बताया कि वहां हमारी जमीन है। महिला गलत आरोप लगा रही है। एसडीएम से कह कर उक्त जमीन की नाप कराई जाएगी जिसकी जमीन जहां होगी उसको मिल जाएगी।

चोरी गई दो नाली बंदूक और जेवर मंझनपुर पुलिस ने किया बरामद

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के खोजवापुर गांव से 14 दिन पहले श्याम सुंदर सिंह पुत्र तीरथ लाल सिंह की दो नाली बंदूक कारतूस और उनके घर से सोने चांदी के जेवर कर उठा ले गए थे पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर खोजबीन शुरू की सूचना पर पुलिस ने सरवन उर्फ समाइया पुत्र कंधई लोध वा रवि नंदन पुत्र राम मिलन लोध निवासी गुवारा तैयबपुर थाना करारी को सैबसा थाना करारी से गिरफ्तार कर जब कड़ाई से पूछताछ किया तो दोनाली बंदूक कारतूस की चोरी और जेवराज की चोरी का खुलासा हो गया है पुलिस ने सोने के मंगलसूत्र कान का झुमका दो नाली बंदूक और कारतूस पकड़े गए आरोपियों के कब्जे से बरामद कर लिया है पूछताछ में आरोपियों ने एक अन्य आरोपी का नाम घटना में शामिल होने की जानकारी पुलिस को दी है अन्य व्यक्ति की पुलिस तलाश कर रही है पकड़े गए दोनों आरोपियों को पुलिस ने लिखा पढ़ी करने के बाद अदालत में पेश किया है जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है।

पुलिस ने बरामद की चोरी गई बाइक

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली के टेवा निवासी संदीप कुमार पुत्र रामबाबू केसरवानी की मोटरसाइकिल चोर उठा ले गए थे मामले में कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया था मुखबिर की सूचना पर कोतवाली पुलिस ने रमेश पासी पुत्र इंदल पासी निवासी ओसा के कब्जे से चोरी की मोटरसाइकिल बरामद कर ली है पूछताछ में उसने बताया कि अपने भाई बैजू पासी के साथ उसने चोरी की घटना को अंजाम दिया था पुलिस बैजू पासी की तलाश कर रही है और रमेश पासी के बिरुद्ध लिखा पढ़ी करके उसे जेल भेज दिया है।

पैनल अधिवक्ता के लिए साक्षात्कार 09, 10 तथा 11जुलाई को

कौशाम्बी। उ.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ माननीय अध्यक्ष/जनपद न्यायाधीश, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी के निदेर्शानुसार गरीब, निर्धन, असहाय व्यक्तियों, कारागार में निरूद्ध बन्दियों को विधिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (निःशुल्क और सक्षम विधि सेवायें विनियम-2010) के अन्तर्गत पैनल अधिवक्ता का पैनल तैयार किया जाने के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे। आवेदकों का दिनांक 09 जुलाई 2024, 10 जुलाई 2024 तथा 11 जुलाई 2024 को साय 04:30 बजे से साक्षात्कार का आयोजन किया जाना सुनिश्चत है। यह जानकारी अपर जनपद न्यायाधीश/ सचिव,जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पूर्णिमा प्रांजल ने देते हुए आवेदकगण को सूचित किया है कि अपने समस्त मूल योग्यता प्रमाण पत्र तथा उ०प्र० बार काउन्सिल द्वारा जारी मूल पंजीयन प्रमाण पत्र व परिचय पत्र के साथ नियत साक्षात्कार तिथि को स्थान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी के कार्यालय में उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

शिक्षा विभाग के मुंह पर तमाचा मारता स्कूल का बदहाल रास्ता

स्कूल के रास्ते पर भरा बारिश का पानी, स्कूली बच्चे पानी से होकर पहुंचते है स्कूल, प्रशासन मूकदर्शक

कौशाम्बी। जिले में जनसमस्याओं से मुंह मोड़ प्रशासन और जनप्रतिनिधि अपने में मस्त रहते है और आम जनता जनसमस्याओं के साथ ही अपना जीवन जीने में जुटी रहती है,वही प्रशासन की अनदेखी के चलते ग्रामीण जनसमस्याओं से घिरे रहते है और समस्याओं से जूझते रहते है। ताजा मामला मांझपुर तहसील क्षेत्र के लहना गांव का है जहा के प्राथमिक स्कूल को जाने वाले रास्ते पर बारिश के सीजन में हमेशा पानी भरा रहता है,इस पानी भरे रास्ते से गुजरकर कई गांव के लोग आवागमन करते है और आए दिन दुर्घटना के शिकार हो जाते है। वही गांव में स्थित प्राथमिक विद्यालय को देखे तो इस विद्यालय के बाहर और रास्ते में बारिश का पानी भर जाने से स्कूल आने वाले स्कूली बच्चों को बहुत अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है,स्कूली बच्चे बारिश के पानी से भरे हुए रास्ते से होकर ही स्कूल पहुंचते है और आए दिन गिरकर उनको चोट लगती और कही उनके बसते कॉपिया भीगकर खराब हो जाती है।ग्रामीणों ने इसकी कई बार प्रशासन से शिकायत की लेकिन आजतक इस समस्या का निराकरण नहीं हो सका है।ग्रामीणों ने नवागत डीएम मधुसूदन से इस समस्या से निजात दिलाने की गुहार लगाई है।

संपादक की कलम से

आर्थिक और बैंकिंग क्षेत्र को नयी सरकार से उम्मीदें

नरेंद्र मोदी के 2014, 2019 और अब 2024 में प्रधानमंत्री बनने के बाद विकास के मोर्चे पर और बेहतरी आने की उम्मीदें हैं. क्योंकि 2014 और 2019 की अवधि में स्वास्थ्य, शिक्षा, आधारभूत संरचना, ऊर्जा, सेवा आदि क्षेत्रों को विकसित करने एवं सुधार लाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किये गये हैं. इस क्रम में सबसे कारगर और समीचीन कदम आर्थिक और बैंकिंग क्षेत्र में उठाये गये हैं. वर्ष 2014 से 2023 के दौरान भारत आर्थिक रूप से विश्व में एक मजबूत देश बनकर उभरा है. इसलिए, देशवासियों को लग रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई में भारत 2027 में पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था, 2030 में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 2047 में विकसित देश बन सकता है.

वर्ष 1947 से ठीक 60 वर्षों के बाद भारत की जीडीपी 2007 में एक ट्रिलियन डॉलर की हुई और 2014 में दो ट्रिलियन डॉलर की हो गयी तथा 2019 में तीन ट्रिलियन डॉलर की. वर्ष 2014 में भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गयी थी, जबकि 2019 में यह दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गयी. वित्त वर्ष 2023-24 की मार्च तिमाही में 7.8 प्रतिशत की दर से जीडीपी में वृद्धि दर्ज हुई और समग्र रूप से वित्त वर्ष 2023-24 में विकास दर 8.2 प्रतिशत रही, जबकि वित्त वर्ष 2022-23 में यह सात प्रतिशत रही. ह्यद इंडियन इकोनॉमीः ए रिव्यूह्न रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 में लगातार चौथे वर्ष भारत की जीडीपी वृद्धि दर सात प्रतिशत से अधिक रह सकती है. वर्ष 2023 में भारत में बेरोजगारी दर 8.7 प्रतिशत रही थी, जबकि 2022 में 7.3 प्रतिशत. चूंकि अभी भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूती से आगे बढ़ रही है. इसलिए, 2024 से 2027 तक बेरोजगारी दर के आठ प्रतिशत से कम रहने का अनुमान है. भारत में मुद्रास्फीति दर 2023 में 5.5 प्रतिशत रही है, जबकि 2022 में यह 6.7 प्रतिशत रही थी.

मई 2024 में खुदरा महंगाई 4.75 प्रतिशत रही, जो 12 महीने का निचला स्तर था. वर्ष 2024 से 2027 के दौरान इसके क्रमशः 4.6, 4.1, 4.1 और 4.0 प्रतिशत रहने का अनुमान है. इस आधार पर कहा जा सकता है, भारतीय अर्थव्यवस्था आसानी से 2027 तक पांच ट्रिलियन डॉलर की बन सकती है. ह्यद इंडियन इकोनॉमीः ए रिव्यूह्न रिपोर्ट में कहा गया है कि सरकार द्वारा किये जा रहे आर्थिक सुधारों के चलते ही भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकी है. इस रिपोर्ट में यह संभावना भी जतायी गयी है कि भारत की जीडीपी 2030 तक सात प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है. वैश्विक रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल ने भी भारत के वित्तीय क्षेत्र में आयी मजबूती और सरकार द्वारा किये गये हालिया संरचनात्मक सुधारों के कारण इस दावे की पुष्टि की है. एसएंडपी ग्लोबल ने अपनी ग्लोबल क्रेडिट आउटलुक 2024 की रिपोर्ट ह्यन्यू रिस्क, न्यू प्लेबुकह्न में कहा है कि भारत की नॉमिनल जीडीपी 2022 में 3.5 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर की हो जायेगी

हाल के महीनों में भारतीय बैंकों का प्रदर्शन एशिया में अपने समकक्ष बैंकों की तुलना में सबसे अच्छा रहा है. देश के तीन बड़े बैंकों- भारतीय स्टेट बैंक, एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक- ने 2023 में दुनिया के शीर्ष 50 बैंकों की सूची में अपनी जगह बनायी है. एसएंडपी ग्लोबल की रिपोर्ट के अनुसार, वित्तीय स्थिति में सुधार, मजबूत आर्थिक स्थिति, कर्ज में तेज वृद्धि, एनपीए में कमी और मुनाफे में इजाफे से भारतीय बैंक मजबूत हुए हैं. इस रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में बैंकों की संपत्ति 50.5 प्रतिशत बढ़कर 1.51 लाख करोड़ डॉलर हो गयी है. हाल के महीनों में भारतीय बैंकों द्वारा दिये जा रहे कर्ज में तेज वृद्धि हुई है. उनतीस दिसंबर, 2023 तक यह 15.6 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गयी थी, जो एक वर्ष पहले 14.9 प्रतिशत थी.

वित्त वर्ष 2023-24 में बैंक ऑफ बड़ौदा और केनरा बैंक ने 10,000 करोड़ से अधिक मुनाफा कमाया है. भारतीय स्टेट बैंक ने तो इस अवधि में 61,077 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया है, जो सरकारी बैंकों की कुल कमाई के 40 प्रतिशत से अधिक है. बारह सरकारी बैंकों में से केवल पंजाब एंड सिंध बैंक के मुनाफे में कमी आयी है. इकत्तीस मार्च, 2024 को सरकारी बैंकों का संचयी लाभ 1.4 लाख करोड़ रुपये के स्तर को पार कर गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 35 प्रतिशत अधिक है. वित्त वर्ष 2023-24 में सभी बैंकों का एनपीए भी घटकर 1.70 प्रतिशत के स्तर से नीचे आ गया.

विकसित देश बनने के कुछ मानक हैं. इस क्रम में भारत में औद्योगीकरण, शिक्षा, आधारभूत संरचना, यंत्रीकरण, डिजिटलाइजेशन, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र को मजबूत करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है. लोगों की जीवन प्रत्याशा और शिक्षा में सुधार आ रहा है. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, पीएम स्वनिधि, सेल्फ हेल्प ग्रुप आदि की मदद से देश में समावेशी विकास को बल मिल रहा है. बड़ी संख्या में लोग आत्मनिर्भर हुए हैं. विगत वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकलने में सफल रहे हैं. इस तरह, प्रति व्यक्ति आय के मानदंड को छोड़कर भारत अन्य मानकों पर खरा उतरकर विकसित देश की श्रेणी में जरूर खड़ा हो सकता है. (ये लेखक के निजी विचार हैं.)

स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान

ऑनलाइन हेल्थ इंश्योरेंसः फायदे, सावधानियां और भारत में बेस्ट प्लान्स

देश में स्वास्थ्य सेवा की स्थिति बेहतर करने के प्रयासों को प्रभावी बनाने के लिए केंद्र सरकार ने तीन महत्वपूर्ण पहलों की घोषणा की है. आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के आकलन के लिए एक वर्चुअल नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस स्टैंडर्ड की स्थापना, सार्वजनिक स्वास्थ्य स्तर में सुधार एवं निगरानी के लिए नया डैशबोर्ड तथा खाद्य पदार्थ बेचने वाले वेंडरों के लिए त्वरित लाइसेंस और पंजीकरण की व्यवस्था इन पहलों में शामिल हैं. उल्लेखनीय है कि सरकार 1.73 लाख से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिरों को स्थापित कर चुकी है. एम्स संस्थानों तथा मेडिकल कॉलेजों में सीटों की संख्या में हाल के वर्षों में उत्साहजनक बढ़ोतरी हुई है. साथ ही, जन औषधि केंद्रों के माध्यम से लोगों को गुणवत्तापूर्ण दवाइयां उचित मूल्य पर उपलब्ध करायी जा रही हैं. ऐसे प्रयासों के लाभ सही ढंग से लोगों को मिलें, इसके लिए निगरानी और आकलन की व्यवस्था आवश्यक है.

डिजिटल तकनीक पर आधारित होने से यह व्यवस्था पारदर्शी भी होगी तथा इसमें समय एवं अन्य संसाधनों का व्यय भी कम होगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है. इसे हासिल करने के लिए यह जरूरी है कि स्वास्थ्य पर खर्च बढ़े और स्वास्थ्य सेवाएं सस्ती दरों पर पूरी आबादी को उपलब्ध हों. इस संबंध में आवंटन में उत्तरोत्तर वृद्धि तथा अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों, बीमा सुविधा आदि के विस्तार से उम्मीदें बंधी हैं. लेकिन चुनौती बहुत बड़ी है. हाल में सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का एक व्यापक सर्वेक्षण कराया है. इसमें स्वास्थ्य केंद्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर, डॉक्टरों एवं नर्सों की उपलब्धता, साजो-सामान की स्थिति आदि के बारे में जानकारी जुटायी गयी है.

इस सर्वेक्षण में पाया गया है कि लगभग 80 प्रतिशत केंद्र निर्धारित मानकों एवं स्तरों पर खरे नहीं उतरे हैं. सरकार ने अपने पहले 100 दिन के कार्यकाल के लिए जो प्राथमिकताएं तय की है, उसमें एक यह भी है कि 70 हजार स्वास्थ्य केंद्रों को सार्वजनिक स्वास्थ्य स्तर के अनुरूप बनाया जायेगा. इस लक्ष्य को पूरा करने में प्रस्तावित डैशबोर्ड बहुत सहायक होगा. भारत में दो लाख से अधिक स्वास्थ्य सेवा केंद्र हैं, जिनमें जिला अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और आयुष्मान आरोग्य मंदिर मंदिर शामिल हैं।

बरसात के पानी का पोल - खोल अभियान

@ राकेश अचल

बरसात ईडी और सीबीआई से ज्यादा मजबूत जांच एजेंसी है। बरसात का पानी देश में समानदृष्टि से निर्माण कार्यों में हुई धांधली की पोल खोलता है। बरसात का पानी जो भी करता है दलगत राजनीति से ऊपर उठकर करता है। बरसात का न किसी गंठबंधन के साथ तालमेल है और न कोई कॉमन मिनिमम प्रोग्राम। बरसात तो आती है और अपना काम कर वापस लौट जाती है दोबारा आने के लिए। इस बरसात ने केंद्र से लेकर राज्य सरकारों तक की पोल खोली है। बरसात का ये पोल-खोल अभियान अभी जारी है।

देश में बरसात कमोवेश हरेक हिस्से में होती है। कहीं कम, तो कहीं ज्यादा। बरसात को अपना काम करने के लिए न जनादेश की जरूरत पड़ती है और न किसी अध्यादेश की। बरसात का नियंता तो इंद्र है। इंद्र देवता है। खुश भी करता है और कुपित भी होता है। जब संयम से बरसता है तो किसानों के चेहरे खिल उठते हैं, क्योंकि बरसात के पानी से ही खेत सोना उगलते हैं और जब कुपित होता है तो जल-प्लावन कर असंख्य जानें ले लेता है। इस लिहाज से बरसात का, बादलों का नियंता बहुरूपिया है हमारे नेताओं की तरह। इंद्र की फितरत सैकड़ों, हजारों सालों से नहीं बदली। देश-दुनिया में सरकारें बदलतीं है किन्तु इंद्र नहीं बदलता। द्वापर में इंद्र का मान -मर्दन करने के लिए कृष्ण थे। उन्होंने गोवर्धन को अपनी लाठी पर ऊपर उठाकर बचा लिया था, लेकिन कलियुग में इंद्र तो है किन्तु कोई कृष्ण नहीं है।

देश में निर्माण कार्यों के जरिये नेता, इंजीनियर और ठेकेदार खूब कमाते-खाते हैं लेकिन इन सबकी पोल बरसात के जरिये इंद्र ही खोलते है। इस बार सबसे पहले बिहार की पोल खुली। एक के बाद एक कर कोई एकदर्जन पुल गिर गए। किसी का कुछ नहीं बिगड़ा। कुछेक इंजीनियर निलंबित किये गए। उन्हें बरसात के बाद बहाल कर दिया जाएगा। जो पुल बहे वे बदनसीब थे। सरकार इसमें क्या कर सकती है। सरकार का काम पुल बनाना है और बरसात का काम पुल गिराना और बहाना है। यदि पुल बहेंगे नहीं तो नए कहाँ से बनेंगे। आज के नेता शेरशाह सूरी या कोई अंग्रेज तो नहीं हैं जो ऐसे पुल बनवा दें जो सदियों तक चलें ? हमारे देश में मुगलों और अंग्रेजों के जमाने के तमाम पुल अभी भी पूरी निष्ठा से अपना काम कर रहे हैं।

देश में बहने या गिरने का काम केवल पुल ही नहीं करते, हवाई अड्डे की छतें और केनोपी भी करतीं हैं। देश की राजधानी दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय इंदिरागांधी हवाई अड्डे की केनोपी टपक रही हैं। कर पार्किंग की छत बैठ गयी है। इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और अयोध्या में बनाये गए नए-नवेले हवाई अड्डे निर्माण कार्यों की पोल खोल रहे हैं। रेलवे स्टेशनों की तिवारें ही नहीं रामलला के नवनिर्मित मंदिर की छत भी टपक रही है। लेकिन किसी का न तो रोम फड़क तरह है और न कोई इस बारे में सोच रहा है।

सरकार का बस चले तो वो इस तरह का पोल-खोल अभियान चलने वाले इंद्र को स्वर्ग से

गिरफ्तार कर हवालात में डाल दे, लेकिन ये हो नहीं सकता। कोई ईडी या सीबीआई वाला स्वर्गारोहण कर इंद्र की गिरफ्तारी करने का करिश्मा नहीं दिखा सकता। बैशाखियों पर टिकी सरकार के पास भी ऐसी कोई ताकत नहीं है जो वो इंद्र को हटक सके। बरसात को होने से रोक सके। सरकारें अपना काम कर रहीं है और बरसात अपना काम कर रही है। सरकार बरसात से नहीं डरती और बरसात सरकार से नहीं डरती। असम से अयोध्या तक, दिल्ली से पटना तक देश के किसी भी हिस्से में जाइये, आपको बरसात सरकार के निर्माण कार्यों की पोल खुलती दिखाई देगी। पुल ही नहीं सड़कें भी सरकार की पोल खोलतीं है। बरसात में नदीं ही नाले भी उफन कर दिखा देते हैं। लेकिन सरकार न नदी का कुछ बिगाड़ सकती है और न नालों का। पानी बरसाने वाले बादलों के खिलाफ तो कुछ कर पाना मुमकिन ही नहीं हैं केंद्र की सरकार 23 जुलाई से बरसात की परवाह किये बिना ही केंद्रीय बजट ला रही है। ये सीतारामी बजट होता है। देश के पास श्रीमती निर्मला सीतारामन जैसा कोई दूसरा है ही नहीं। वे लगातार चमत्कार करती आ रहीं हैं इसलिए उन्हें एक बार फिर मौका दिया गया है। बजट के मामले में निर्मला जी का स्मार्थन उनके अपने पति देव भी नहीं करते ऐसे में जनता उनके बजट का समर्थन क्यों करने लगी ?

एक जमाना था जब मुगल हों अंग्रेज हों या देशी राजे-महाराजे हों कम से कम निर्माण कार्यों में तो कमाई नहीं करते थे। घटिया सामग्री का इस्तेमाल नहीं करते थे, यदि करते होते तो ग्वालियर के पास नूराबाद में शेरशाह सूरी के जमाने का बना पुल, कोलकता में हुबली पर बना अंग्रेजों के जमाने का पुल और तो और छोड़िये 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में बदनाम हो चुके सिंधिया खानदान द्वारा बनाये गए पुल और बाँध आज भी काम कर रहे हैं। पिछले 75 साल में बनाया गया कोई भी पुल और सड़क पुराने जमाने के निर्माण कार्य का मुकाबला नहीं कर सकता। जाहिर है कि तब में और अब में बहुत अंतर आ चुका है। ईमानदारी का इंडेक्स भी लगातार गिरा है। पिछले दस साल में तो इस इंडेक्स में इतनी गिरावट आई है की पूछिए मत! आप पूछेंगे भी तो हम बता नहीं पाएंगे, क्योंकि सब कुछ असीमित है।

बरसात देश और दुनिया के असंख्य लोगों को प्रभावित करती है। भारत में भी यही हाल है। असम के 30 जिलों के लाखों लोग राहत शिविरों में है। चारधाम यात्रा स्थगित कर दी गयी है। दिल्ली जलमग्न है। अयोध्या हो या काशी सब जगह पानी ही पानी है सिवाय सरकारों और नेताओं की आखों के। सरकारें देखकर भी कुछ देखना नहीं चाहतीं और नेताओं को पानी हवाई जहाज में बैठकर देखने में मजा आता है। वे हवाई सर्वे करते हैं फिर राहत बांटे-बटवाते हैं। राहत कार्य भी निर्माण कार्यों की तरह कमाई का एक दूसरा जरिया होते हैं। टीडीपी और जेडीयू तो इस बार सरकार का हिस्सा बनकर उसे निचोड़ लेने पर आमादा हैं, क्योंकि ऐसा मौका फिर कहा मिलेगा ? दस साल में पहली मर्तबा भाजपा लंगड़ी- लूली हुई है। इसलिए सब मिलजुलकर अपना-अपना उल्लू सीधा कर लेना चाहते हैं।

इस बार चौमासा कहिये या मानसून सीजन कहिये में अभी तक केवल और केवल पानी से लड़े काले बादल ही गुरगुराते दिखाई दिए है। इंद्रधनुष तो दिखाई ही नहीं दिया। कहीं खुशी है तो कहीं गम भी है। बरसात न आये तो आलू,प्याज और टमाटरों को अपने भाव बढ़ाने का मौका ही कहाँ मिले ? बरसात सबका ख्याल रखती है। जमाखोरों का भी, जो इस मौसम में मुनाफा नहीं कमा पाटा उसके लिए कोई दूसरा मुफीद मौसम होता ही नहीं है। मुझे तो बरसात का मौसम बेहद सुहाना लगता है। मन बाग-बाग हो जाता है। आपकी आप जानें। मुझे तो बरसात ईडी और सीबीआई से भी ज्यादा भरोसे की लगती है, कम से कम समय पर पोल तो खोलती है। आइये बरसात का इंद्र का अभिनंदन करें। पकौड़े तलने के राष्ट्रहितैषी अभियान में प्राण-पन से जुट जाएँ।

बेनिफिट्स आफ रेन

बारिश के मौसम पर यूं तो बहुत कुछ लिखा गया है लेकिन कतील शिफाई कुछ यूं लिखते हैं -' दूर तक छाए थे बादल और कहीं साया न था इस तरह बरसात का मौसम कभी आया न था।' आजकल संपूर्ण भारत में जगह जगह खूब बारिश हो रही है। आदमी पहले गर्मी से परेशान था, आजकल बारिश से। पहले लोग बारिश आने के लिए यज्ञ और हवन करते हैं और बाद में बारिश रोकने के लिए। बड़ा झंझट है बारिश का। बारिश आती है तो लोग घरों के अंदर घुसते हैं और बारिश का पानी नालियों में घुसना पसंद नहीं करता, पानी नालियों से बाहर बिखरता है। दरअसल ,बारिश का पानी पालीथीन बैग्स व कचरे के साथ खेलता है।

अजी ! कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि बारिश प्रेमी-प्रेमिका के रोमांस का ही सीजन नहीं है। नालियों का पानी भी सड़क व गलियों से अच्छा खासा रोमांस करता है। बारिश से नालियां, सड़कें, खडडे पानी से भर जाते हैं और हमारी गाड़ियां गंदी हो जाती है। कपड़े भी गंदे हो जाते हैं। अजी ! बारिश के अपने फायदे हैं।कार वाशिंग करने वालों, लांड्री वालों व ठेकेदारों को काम मिलता है। बेरोजगारी का नामोनिशान तक नहीं बचता। वैसे बारिश का सबसे ज्यादा फायदा सड़कों व पुलों का ठेका लेने वालों को होता है। सड़कें और पुल बारिश में बह जाते हैं और ठेकेदारों को अनाप-शनाप काम पर काम मिलता है। फटाक से देश से बेरोजगारी दूर होती है। पकौड़े तलने वालों को भी बारिश में अच्छा खासा काम मिल जाता है। आइसक्रीम बेचने वाले पकौड़ा व्यवसाय की ओर पलायन करने लगते हैं। भरी गर्मी में बारिश आने से चाय और कॉफी वालों का मंद पड़ा धंधा चमकने लगता है। इससे प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है। यहां तक कि फिल्म इंडस्ट्री वालों को बारिश में गाने फिल्माने का काम मिल जाता है। उन्हें आर्टिफिशियल बारिश का झंझट नहीं पालना पड़ता। इतना ही नहीं अभिनेत्रियों और अभिनेताओं को मेकअप को धोने का भी झंझट नहीं करना पड़ता। बारिश में मेकअप अपने आप धुल जाता है। एक फायदा बारिश का यह भी है कि बारिश में पानी मुफ्त में मिलता है, पानी के टैंकर गिराने के लिए पैसे नहीं देने पड़ते। साबुन और वाशिंग पाउडर इंडस्ट्री का खूब माल बिकने लगता है। बारिश में पानी के लिए मोटर भी नहीं चलानी पड़ती। आदमी को भगवान को ही अरदास करनी पड़ती है कि 'भगवान जी अब तो मोटर बंद कर दीजिए, पानी फुल हो गया है।' बारिश का एक मजा यह भी है कि आप नावों को ही नहीं कारों, मोटरसाइकिलों व अन्य साधनों को भी तैरता हुआ देख सकते हैं। वैसे बारिश का एक फायदा यह भी है कि हम सड़कों को धान रोपाई व स्वीमिंग के लिए भी काम में ले सकते हैं।

और तो और थोड़ी बहुत बारिश में कैब वाले स्वयं को भगवान मान बैठते हैं। बारिश का एक आनंद यह भी है कि आपको बार-बार बाथरूम के अंदर जा कर नहाना नहीं पड़ता। बारिश का फायदा क्रिकेट मैच में भी होता है। गीली आउटफील्ड के कारण बालरों को कम ओवर करने पड़ते हैं, इससे वे थकते नहीं हैं। बहुत बार न जीतने वाली टीम भी बारिश के कारण जीत जाती है। अधिक बारिश से स्कूलों में बच्चों की छुट्टियां भी हो जाती हैं। बारिश के कारण 'लू' लापता हो जाती है तो इधर छाते व रेनकोट बेचने वालों की मौसमी बेरोजगारी दूर हो जाती है। हमारे शहर में भी इन दिनों गर्मी राहत कैंप लगा हुआ है, व्यंग्य लिखने से आजकल काम नहीं चल रहा है, इसलिए बारिश के इस मौसम में हम भी पकौड़े तलने जा रहे हैं। जय राम जी की। गुस्ताखी माफ।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर कालमिस्ट व युवा साहित्यकार उत्तराखंड।

ब्रिटेन के नए निजाम का भारत के प्रति रुख

- अरविंद जयतिलक
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

ब्रिटेन में 14 साल बाद लेबर पार्टी की सत्ता में शानदार वापसी हुई है। हाउस ऑफ कॉमन्स के कुल 650 सीटों में लेबर पार्टी को कुल 412 सीटें मिली है। ऐतिहासिक जीत के साथ कीर स्टार्मर ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री होंगे। सत्ताधारी कंजर्वेटिव पार्टी को 121 सीटों पर संतोष करना पड़ा है जो अब विपक्ष की भूमिका में दिखेगी। अब सवाल यह है कि ब्रिटेन में बदले निजाम का भारत पर क्या असर होगा? क्या कीर स्टार्मर भारत को लेकर पुरानी पॉलिसी में बदलाव लाएंगे? फिलहाल इसकी संभावना कम है। महंगाई की बोझ तले दबे ब्रिटेन को अपनी आर्थिक स्थिति और फूड सप्लाई चेन को मजबूत करना शीर्ष प्राथमिकता में है। ऐसे में उसके लिए भारत से बेहतर रिश्ते बनाए रखना आवश्यक है। किसी से छिपा नहीं है कि रुस-यूक्रेन युद्ध से ब्रिटेन की फूड सप्लाई चेन बिगड़ चुकी है।

दूसरी ओर यूरोपियन यूनियन से बाहर निकलने के बाद ब्रिटेन के पास अपने पुराने सहयोगियों के साथ बेहतर संबंध बनाए रखने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। यूरोपीय यूनियन से अलग होने के बाद ब्रिटेन एक ऐसे मोड़ पर है जहां एक ओर अवसर है तो दूसरी ओर सघन चुनौतियां भी है। इन परिस्थितियों के बीच वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के तौर पर उभर रहे भारत को लेकर ब्रिटेन की लेबर पार्टी का नजरिया नकारात्मक रखना कुल्हाड़ी पर पांव रखने जैसा होगा। फिलहाल ब्रिटेन की ओर से सकारात्मक संकेत ही मिल रहे है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिटेन के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री को बधाई दी है और बातचीत के दरम्यान दोनों नेताओं ने मुक्त व्यापार समझौते (फ्री टेज्ड एग्रीमेंट-एफटीए) पर आगे बढ़ने पर सहमति जताई है। ब्रिटेन की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि प्रधानमंत्री स्टार्मर ऐसा समझौता करने को तैयार हैं जो दोनों पक्षों के लिए काम करेगा। ध्यान देना होगा कि जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक द्वारा मुक्त व्यापार समझौते (फ्री टेज्ड एग्रीमेंट-एफटीए) की समीक्षा की गई थी। तब दोनों नेताओं ने इस महत्वकांक्षी समझौते को मूर्त रुप देने की हामी भरने के साथ व्यापार,

निवेश, विज्ञान और तकनीक जैसे व्यापक क्षेत्रों में भी आपसी सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया था। याद होगा जब ऋषि सुनक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने थे तब भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई देते हुए उम्मीद जतायी थी कि दोनों देश शीध्र ही फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) को मूर्त रुप देंगे। कीर स्टार्मर के प्रधानमंत्री बनने पर भी वैसा ही रुख अपनाते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने इस मसले पर आगे बढ़ने की उम्मीद जताई है।

गौर करें तो सैद्धांतिक तौर पर फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) की नींव पूर्व प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने 2021 में अपनी भारत यात्रा के दौरान रखी थी। उनके बाद लिज ट्रस ने इस प्रस्तावित टेज्ड समझौते का समर्थन कर इस दिशा में आगे बढ़ने पर जोर दिया। देखना दिलचस्प होगा कि इस मसले पर ब्रिटेन के नए निजाम का रुख क्या होता है। फिलहाल गौर करें तो आज भारत और ब्रिटेन के बीच द्विपक्षीय व्यापार तकरीबन चार लाख करोड़ रुपए का है। ऐसे में प्रस्तावित टेज्ड समझौता मूर्त लेता है तो निःसंदेह दोनों देशों को टैक्स में बड़ी राहत मिलेगी। मुक्त व्यापार करार के तहत व्यापार में दो भागीदार देश आपसी व्यापार वाले उत्पादों पर आयात शुल्क में अधिकतम कटौती करते हैं जिसका फायदा दोनों देशों को मिलता है। अगर फ्री टेज्ड समझौते पर दोनों देश आगे बढ़ते हैं तो दोनों देशों के आर्थिक भागीदारी को नई ऊंचाई मिलेगी। इससे द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि होगी और बड़े पैमाने पर लोगों को रोजगार मिलेगा। फ्री ट्रेड समझौते पर ब्रिटेन का भारत के साथ आना इसलिए भी उम्मीद जगाने वाला है कि आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है।

भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश बन चुका है। वर्ष 2030 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन सकता है। एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक अर्थव्यवस्था के आकार में भारत 2027 में जर्मनी से और 2030 में जापान से आगे निकल जाएगा। ऐसे में ब्रिटेन का भारत के साथ ट्रेड डील को लेकर गंभीर होना लाजिमी है। चूंकि भारत ने हमेशा से ब्रिटेन को यूरोपीय संघ के देशों के साथ व्यापार के मामले में एक ह्यमुख्य द्वारह्न के रुप में देखा है ऐसे में मुक्त व्यापार समझौता न केवल ब्रिटेन बल्कि भारत के लिए भी फायदे का सौदा होगा।

ब्रिटेन ने 2004 में भारत के साथ एक रणनीतिक साझेदारी शुरू की थी। इस रणनीतिक साझेदारी के तहत ब्रिटेन आतंकवाद, परमाणु गतिविधियों और नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम में भारत के साथ है। दोनों देशों द्वारा भरोसा जताया जा चुका है कि 2030 तक आपसी संबंधों को रणनीतिक साझेदारी में बदलना उनकी शीर्ष प्राथमिकता में होगा। जहां तक द्विपक्षीय व्यापार का सवाल है तो ब्रिटेन भारत का विश्व में दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी देश है। दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार जो 2018-19 में 16.7 अरब डॉलर, 2019-20 में 15.5 अरब डॉलर था वह अब बढ़कर 40 अरब डॉलर यानी चार लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच चुका है। इससे दोनों देशों के तकरीबन 5 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिला है। गौर करें तो ब्रिटेन में लगभग 800 से अधिक भारतीय कंपनियां हैं जो आईटी क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इस संदर्भ में टाटा इंग्लैंड में नौकरियां उपलब्ध कराने वाली सबसे बड़ी भारतीय कंपनी का दर्जा हासिल कर चुकी है। भारतीय कंपनियों का विदेशों में कुल निवेश 85 मिलियन अमेरिकी डॉलर के पार पहुंच गया है। दूसरी ओर ब्रिटेन से भारत के बीपीओ क्षेत्र में आउटसोर्सिंग का काम भी बहुत ज्यादा आ रहा है। आउटसोर्सिंग दोनों देशों के लिए लाभप्रद है। एक ओर यह ब्रिटिश कंपनियों की लागत कम करता है वहीं लाखों शिक्षित भारतीयों के लिए रोजगार का अवसर उपलब्ध कराता है। ब्रिटेन में बड़ी तादाद में अनिवासी भारतीयों की मौजुदगी है। यह संख्या लगभग 2 मिलियन तक पहुंच चुकी है। भारतीय लोग दुनिया के अन्य देशों की तरह ब्रिटेन की आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था को भी शानदार गति दे रहे हैं। पिछले दो दशकों में आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए दोनों देशों ने कई तरह की पहल की है। नतीजा ब्रिटेन में परियोजनाओं की संख्या के मामले में भारत दूसरे सबसे बड़े निवेशकर्ता देश के रुप में उभरा है।

अच्छी बात है कि आर्थिक साझेदारी को गति देने के साथ-साथ दोनों देश स्वास्थ्य, शिक्षा, तकनीक और इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने पर सहमति जता चुके हैं। अब यह ब्रिटेन के मौजूदा प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर पर निर्भर करता है कि वह भारत के साथ आर्थिक-सामरिक रणनीतिक साझेदारी को कितना महत्व देते हैं। अगर प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर टेज्ड समझौते के साथ-साथ माइग्रेशन और मोबिलिटी पार्टनरशिप समझौते पर भी अपनी स्वीकृति की मुहर लगा देते हैं तो निःसंदेह भारत के प्रशिक्षित लोगों को ब्रिटेन जाने की राह और आसान हो जाएगा। वैसे उम्मीद किया जाना चाहिए कि ब्रिटेन के नए निजाम में नरमी से भारतीयों को फायदा मिलना तय है। उम्मीद है कि नए प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर पुरानी पॉलिसी पर ही आगे बढेंगे जो कंजर्वेटिव सरकार के समय थी। वैसे देखें तो कंजर्वेटिव सरकार इमिग्रेशन कानून को लेकर ज्यादा सख्त थी। उसका खामियाजा भारतीय मूल के लोगों को भुगतना पड़ा। चूंकि कीर स्टार्मर चुनाव के दरम्यान इस मसले पर नरमी के संकेत दे चुके हैं ऐसे में माना जा रहा है कि भारतीय मूल के लोगों को इस मसले पर राहत मिलनी तय है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो आतंकवाद से निपटने, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की दावेदारी का समर्थन, पर्यावरण, रक्षा उपकरणों व अत्याधुनिक हथियारों का साझा उत्पादन तथा अफगानिस्तान के हालात जैसे कई अन्य मसलों पर भी दोनों देशों की सोच एक जैसी है। कई वैश्विक मंचों के जरिए दोनों देश अनेकों बार अपने-अपने विचार साझा कर चुके हैं। अब देखना दिलचस्प होगा कि ब्रिटेन के नए निजाम कीर स्टार्मर भारत के साथ दोस्ती को कितना परवान चढ़ाते हैं।

स्काई ग्लास ब्रिज में मौजूदा डीएफओ का भी हुआ खेल, निर्माण कंपनी को हो गये भुगतान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पाठा क्षेत्र में पर्यटन विकास को सरकार के प्रयास के चलते ईको पर्यटन विकास बतौर काम हो रहे हैं। जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही से पर्यटन विकास कार्यों में पलीता लग रहा है। कार्यों में निर्माण के पहले ही भुगतान होने से तुलसी जलप्रपात में निर्माणाधीन स्काई ग्लास ब्रिज सीढ़ियों के नीचे प्लेटफार्म पर आई दरारों को लेकर गुणवत्ता पर सवाल खडे हुए हैं।

रविवार को स्काई ग्लास ब्रिज निर्माण पूरा होने से पहले कार्यदाई संस्था को पूरा भुगतान होने पर विभागीय अधिकारियों पर सवाल खडे हुए हैं। मारकुंडी थाना क्षेत्र में तुलसी जलप्रपात में प्रदेश का पहला स्काई ग्लास ब्रिज बन रहा है। तीन करोड़ 70 लाख लागत से वन विभाग ने पवनसुत कांस्ट्रक्शन कंपनी गाजीपुर को काम दिया था। लोस चुनाव से पहले वन विभाग के दावे थे कि ब्रिज का निर्माण पूरा हो चुका है। चार दिन पहले बारिश से ब्रिज की सीढ़ियों के नीचे प्लेटफार्म पर दरारें दिखी तो प्रशासन में हडकंप मच गया। ब्रिज निर्माण गुणवत्ता पर सवाल उठे। वन विभाग के अधिकारी ये कहते हुए बचाव करने लगे कि काम अभी पूरा हुआ। ब्रिज हैंडओवर भी नहीं हुआ।

स्काई ग्लास ब्रिज।

हैंडओवर से पहले गुणवत्ता की जांच करायेंगे। ब्रिज निर्माण करने वाली कंपनी को वन विभाग के पूर्व अधिकारियों ने मार्च 2023 तक पूरा भुगतान तीन करोड 70 लाख कैसे कर दिया। जबकि ब्रिज निर्माण की शुरुआत हुई थी। सवाल है कि उस दौरान ब्रिज का प्लेटफार्म बन रहा था, तो भुगतान कैसे हो गया। ब्रिज प्लेटफार्म में दरारें आने से सवाल खडे हो गये हैं।

भुगतान के नियमों की अनदेखी हुई है। किसी भी निर्माण में कार्यदाई संस्था को निर्माण पूरा होने से पहले भुगतान नहीं होता। संबंधित विभाग हैंडओवर व सत्यापन के बाद भुगतान करता है। सेवानिवृत्त होने से पहले डीएफओ ने क्यों भुगतान किया। वन विभाग के डीएफओ की नजरें शासन से आवंटित बजट पर टिकी थी। इसी के चलते कार्य की वित्तीय व भौतिक प्रगति अनदेखी कर किश्तों में कार्य करा रही कंपनी को कैसे पूरा भुगतान कर दिया। निचले स्तर पर सुपरविजन करने वाले अधिकारी व कर्मचारी भी चुप रहे। पुल निर्माण शुरू होने से लेकर दो डीएफओ सेवानिवृत्त हो चुके हैं। देखा जाये तो ये ब्रिज पाठा में अब तक हुए अन्य निर्माणों की भांति कमीशनखोरी का शिकार हो गया।डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए ब्रिज का निरीक्षण किया। स्काई ग्लास ब्रिज में दरारें खुद देखी हैं। निरीक्षण दौरान कमियां मिली हैं। सही कराने के निर्देश डीएफओ एनके सिंह को दिये हैं। एनके सिंह भी बडे खिलाडी हैं, उनका पेट कुछ ज्यादा बडा है। ब्रिज की कमियां दुरुस्त कराई जा रही हैं।

व्यवस्था में कोढ की भांति जमे हैं लिपिक

तबादले के बाद भी नहीं हो रहे कार्यमुक्त

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। आकांक्षी जिले में नीति आयोग के निर्देशों का कहीं भी पालन नहीं हो रहा। चकबन्दी विभाग के अपर आयुक्त अनुराग पटेल ने तीस जून 2024 को जिले में कलेक्टेट्रट में कार्यरत लवलेश कुमार व भरतलाल का तबादला कर दिया है। अभी तक इन्हें कार्यमुक्त नहीं किया गया। रविवार को चकबन्दी विभाग में कार्यरत लवलेश कुमार व भरतलाल का तबादला तीस जून को अपर आयुक्त चकबन्दी अनुराग पटेल ने बांदा व महोबा किया था। ये दोनों कर्मचारी कलेक्टेट्रट में लम्बे अरसे से कार्यरत हैं। इन्हें अभी तक कार्यमुक्त नहीं किया गया, जबकि नीति आयोग के स्पष्ट निर्देश हैं कि किसी भी कर्मचारी को तीन वर्ष से ज्यादा समय तक तैनात न किया जाये।

इसके बाद भी कलेक्टेट्रट में सात से दस साल तक लिपिक लगातार कार्य कर रहे हैं। इनके पटल तक नहीं बदले गये। जिले की व्यवस्था में ये लिपिक कोढ हैं। अफसरों की दलाली से लेकर घूस की रकम पहुंचाने का कार्य यही लिपिक कर रहे हैं। इन लिपिकों के नीति आयोग के अनुसार तबादला न करने से भाजपा को लोकसभा चुनाव में तगडी पराजय मिली है। ये लिपिक भ्रष्टाचार की जड हैं।

सीएम की घोषणा बाद भी भइयाराम को नहीं मिले एक नये

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पौधरोपण सप्ताह के सातवें दिन चित्रकूट के ट्री मैन के नाम से विख्यात 40 हजार पौधे लगाने का रिकॉर्ड बनाने वाले भइयाराम को साल पहनाकर पौधा भेंटकर सपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य अनुज सिंह यादव ने सम्मानित किया।

रविवार को प्रदेश कार्य समित सदस्य अनुज सिंह यादव ने कहा कि भइयाराम जैसे लोगों से समाज को सीख लेकर पर्यावरण बचाने का संकल्प लेना चाहिये। बिना संसाधन के 40 हजार पौधों की सेवाकर भइयाराम ने अपना जीवन पौधों के नाम कर दिया, जो सम्मान

भइयाराम को सम्मानित करते सपा नेता।

भइयाराम को सरकार से मिलना चाहिये, वह सम्मान इन्हें नहीं मिल सका। पिछली बार मुख्यमंत्री योगी चित्रकूट आये थे, तब भइयाराम को 4500 रुपये मासिक मानदेय देने की घोषणा की थी। आज तक उन्हें 45 पैसे तक नहीं मिले। ये सरकार पर्यावरण प्रेमियों को हताश व निराश करने वाली है। इस सरकार ने पिछली बार जितने पौधे लगाये थे, उनमें एक भी पौधा जिंदा नहीं बचा। सिर्फ कागजों में लाखों जिंदा दिखाकर पौधरोपण के नाम पर करोड़ों का घोटाला किया है। आज जितने प्राकृतिक संसाधन हैं, उनमें सत्ता संरक्षित माफिया दोहन कर रहे हैं। चाहे वे नदियां हो, जंगल हों या पहाड़ हो। इस मौके पर पूर्व प्रधान राम प्रसाद वर्मा, रोहित यादव, कुलदीप आचार्य, गौतम वर्मा, सागर यादव, बब्बू सिंह आदि मौजूद रहे।

प्रसूता की जांच बाद भी हुई मौत

चित्रकूट। प्रसूता की हालत अचानक बिगड़ने से परिजन जिला अस्पताल ले गये। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। प्रसूता की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को शव सौंप दिया। ये मामला कोतवाली कर्वी क्षेत्र के खुटहा गांव का है। बताया गया कि सुधा देवी (24) पत्नी लवकुश को प्रसव पीड़ा होने पर परिजन शनिवार को सवेरे जिला अस्पताल ले गये। डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना से परिजनों में शोक छा गया। परिजनों ने बताया कि 29 जून 2023 को शादी हुई थी। मायका बेलमा मैहर में है। अचानक ब्लड प्रेशर बढ़ने से जानकीकुंड व जिला अस्पताल में जांच हो रही थी। प्रसूता के भाई सुरेश रजक ने बताया कि प्रसव पीड़ा होने पर ससुरालीजन उसे अस्पताल लेकर आ रहे थे, रास्ते में उसकी मौत हो गई।

शिक्षक नेता अशर्फीलाल सिंह के सांसद ने जाने हाल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बांदा-चित्रकूट नवनिर्वाचित सांसद श्रीमती कृष्णा पटेल ने जिले के वरिष्ठ शिक्षक अशर्फीलाल सिंह के आवास जाकर हाल-चाल जाने। जीत के प्रति क्षेत्रवासियों का आभार जताया। सांसद ने कहा कि ये जीत बांदा-चित्रकूट की जनता की है। दोनों जिले के विकास में भाजपा ने जैसी अव्यवस्था फैलाये थी, उससे तंग जनता ने सपा को पूरे प्रदेश में भारी जीत दिलाई है।

रविवार को सांसद श्रीमती कृष्णा पटेल शिक्षक नेता अशर्फीलाल सिंह पटेल के घर पहुंची। उन्होंने कहा कि सपा की बांदा-चित्रकूट में ऐतिहासिक जीत हुई है। यहां के विकास के मार्ग

शिक्षक नेता के हाल जानती सांसद।

प्रशस्त होंगे। जन समस्याओं का समाधान होगा। वे सप्ताह में तीन दिन चित्रकूट में रहकर जन समस्यायें सुनेंगी। जिले के विकास कार्यों में योगदान रहेगा। इस मौके पर उन्होंने शिक्षक नेता का स्वास्थ्य जाना। युवा समाजसेवी बीपी पटेल को जन्मदिन की बधाई दी। इस मौके पर पूर्व मंत्री शिवशंकर पटेल, सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव, अंबेडकर सपा लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव मानसिंह पटेल, सत्यनारायण पटेल, सीताराम रैकवार, मनफूल सिंह पटेल, अनिल सिंह, सुनील सिंह, धर्मेंद्र सिंह, ओमप्रकाश, संजय अवस्थी, पूर्व कानूनगो महेन्द्र सिंह मौजूद रहे।

सांसद प्रतिनिधि को लेकर मची खींचतान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा से बांदा-चित्रकूट की नवनिर्वाचित सांसद कृष्णा देवी/शिवशंकर पटेल के प्रतिनिधि बनाने को लेकर आपस में जंग छिड गई है। सोशल मीडिया में कार्यकर्ताओं ने सांसद पर जातिवाद करने के आरोप लगाये हैं।

सांसद प्रतिनिधि बनने को लेकर सपाइयों में जंग छिडने का खुलासा रविवार को हुआ। बताया गया कि सांसद कृष्णा पटेल ने अभी तक किसी को अधिकृत तौर पर प्रतिनिधि घोषित नहीं किया। कुछ सपाइयों में प्रतिनिधि पद को लेकर खींचतान शुरू हो गई है। सोशल मीडिया में प्रतिनिधि पद पर हायतौबा मची है। कुछ लोगों ने बताया कि मनफूल पटेल को सांसद ने प्रतिनिधि घोषित किया है, जबकि सांसद ने अधिकृत तौर पर किसी को प्रतिनिधि न बनाने की बात कही है। मनफूल पटेल का सपाई पुरजोर विरोध जता रहे हैं। सपाइयों का मानना है कि सांसद प्रतिनिधि किसी यादव को बनाना चाहिए, ताकि आपसी तालमेल बना रहे। इसे लेकर शहर में व अन्य सियासी दलों में चर्चाओं का बाजार गर्म है।

आनलाइन हाजिरी का जारी रहेगा विरोध, सांसद को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अंतर्जनपदीय शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष कमलेश पाण्डेय ने ऑनलाइन हाजिरी के विरोध का सिलसिला जारी रखने का ऐलान करते हुए सांसद श्रीमती कृष्णा पटेल को सौंपे ज्ञापन में आर-पार की लडाई का ऐलान किया है।

रविवार को अंतर्जनपदीय शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष कमलेश पाण्डेय की अगुवाई में शिक्षकों ने सांसद श्रीमती कृष्णा पटेल को सौंपे ज्ञापन में कहा कि मूलभूत सुविधाओं व मांगों

सांसद को ज्ञापन देते शिक्षक।

पर विचार बाद ऑनलाइन हाजिरी का आदेश सार्थक हो सकता है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि ये व्यवस्था बेसिक शिक्षकों पर ही क्यों लागू हो रही है। पोर्टल पर हाजिरी कंट्रोल रूम से जांच क्या कम है। प्रदेश उपाध्यक्ष राधेश्याम पटेल तूफानी ने कहा कि शिक्षकों का कार्य क्षेत्र उनके निवास से 50 से 60 किमी दूरी पर हैं। इस दशा में एक ही समय पर पूरे सत्र प्राकृतिक आपदाओं का सामना करते हुए हाजिर होना संभव नहीं है। जिलाध्यक्ष मनोज सोनी ने कहा कि जब तक हाफ सीएल, ईएल चिकित्सा व्यवस्था व सामूहिक बीमा की व्यवस्था नहीं होती, तब तक ऑनलाइन हाजिरी किसी दशा में मंजूर नहीं है। मौजूदा आदेश निरर्थक हैं। संगठन इस व्यवस्था का विरोध करता है। ज्ञापन देने में जिला महामंत्री बीके मिश्रा, मोतीलाल सिंह, प्रद्युम्न, नवनीत निगम, रामचरित मिश्रा, सुंदरलाल, राजेश कुमार, परमानंद, राजाराम, रामबाबू प्रजापति, पवन प्यासी, कुशल सिंह समेत सैकड़ों शिक्षक शामिल रहे।

महाविद्यालय में प्रोफेसरों ने रोपे पौधे

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। महामति प्राणनाथ महाविद्यालय मऊ में वन महोत्सव एक से सात जुलाई तक मनाया जा रहा है।

रविवार को बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी के भूगर्भ विभागाध्यक्ष प्रो एमएम सिंह व बुंदेलखंड कॉलेज झांसी के प्राचार्य प्रो संतोष कुमार राय ने महाविद्यालय परिसर में अभियान के तहत पौधरोपण किया।

इस मौके पर महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ एस कुरील व प्रबंधक सुन्दरलाल सुमन मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि

पौधारोपण करते प्रचार्य प्रो. संतोष कुमार राय।

जीवन में सभी लोगों को वृक्षों को लगाना चाहिए। वृक्ष लगाने व संवर्धन करने के बहुत फायदे हैं। आगामी पीढी को वृक्षों से बहुत लाभ मिलेंगे।

पुलिस ने एक वांछित- 12 वारंटी दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में पुलिस ने एक वांछित व 12 वारंटी को दबोचा है।

रविवार को मानिकपुर थाने के निरीक्षक अपराध प्रभुनाथ यादव ने दरोगा यूटी पवन चैधरी, सिपाही जलील अहमद, प्रमोद पासवान के साथ वन्य जीव अधिनियम के वारंटी दुजुवा पुत्र भुलई कोल, पप्पू पुत्र श्यामलाल कोल, भलिया पुत्र अतिमुनि, किशोरा पुत्र मोहन कल्याणपुर को गिरफ्तार किया।

पुलिस गिरफ्त में वारंटी।

प्रभारी निरीक्षक सरधुवा आशुतोष तिवारी ने सिपाही शक्ति सिंह, राहुल पुरी के साथ हादसे के वारंटी चुन्नूलाल उर्फ अनिल पुत्र बैजनाथ खोंपा को गिरफ्तार किया। सरधुवा थाने के निरीक्षक अपराध अंजनी कुमार सिंह ने दरोगा राजेश कुमार राय व सिपाही दिनेश कुमार के साथ मारपीट, गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी के वारंटी लच्छी उर्फ राममिलन पुत्र बबुआ चांदी बोधन पुरवा को गिरफ्तार किया। चैकी प्रभारी शिवरामपुर सत्यमपति त्रिपाठी ने सिपाही नरेन्द्र कुमार, सत्यम पटेल के साथ जालसाजी के वांछित प्रदीप कुमार पुत्र स्व रामनाथ लगुनावारी थाना मोहम्मदाबाद जिला फरुर्खाबाद व एनसीआर के वारंटी सुरेश कुमार पुत्र राम प्रसाद खुटहा को गिरफ्तार किया। चैकी प्रभारी जिला अस्पताल राहुल सिंह ने सिपाही संजीव सोनी के साथ छेडछाड व एससी/एसटी एक्ट वारंटी पंकज सिंह पुत्र राजेन्द्र प्रसाद सिंह सोनेपुर को गिरफ्तार किया। भरतकूप थाने के दरोगा रामकुमार ने सिपाही विवेक सिंह के साथ मारपीट व गाली-गलौज के वारंटी शरीफ अली, शफीक अली पुत्र तेज अली खम्हरिया को गिरफ्तार किया। प्रभारी चैकी खंडेहा विनय विक्रम सिंह ने दरोगा यूटी दिव्यांश पाण्डेय, सिपाही मनीष यादव के साथ विद्युत अधिनियम के वारंटी शिवबाबू पुत्र मोतीलाल खप्टिहा को गिरफ्तार किया। रैपुरा थाने के दरोगा अजय बहादुर सिंह ने सिपाही नन्हे यादव के साथ दहेज एक्ट के वारंटी लवकुश पुत्र कंधई नुनमई को गिरफ्तार किया।

बहिलपुरवा पुलिस के सामने एसडीएम के आदेश हैं बेमानी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बहिलपुरवा थाना पुलिस के आगे एसडीएम मानिकपुर का आदेश बेमानी है। थाना पुलिस विवाद खत्म करने की बजाय बढाने में लगी है।

ये मामला है मानिकपुर तहसील के बड़ी मडैयन गांव का। गांव के इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ता जगदीश सिंह बुंदेला ने बताया कि एसडीएम मानिकपुर ने 11 जून 2024 को बहिलपुरवा थानाध्यक्ष को आदेश दिया था कि धारा 145/146 सीआरपीसी के तहत प्रतिवादीगण की वादग्रस्त भूमि पर कोई निर्माण न होने दिया जाये। दौरान मुकदमा दोनों पक्षों से आदेश का पालन कराया जाये। गाटा संख्या 330 मि रकबा 0324 में किसी प्रकार का निर्माण कर नवैयत न बदली जाये। थानाध्यक्ष बहिलपुरवा रामसिंह व हल्का प्रभारी अनुभव पटेल पर आरोप हैं कि विपक्षी से लेन-देनकर दरवाजे के सामने पक्की दीवार खड़ी करा दिया है। अधिवक्ता जगदीश सिंह बुंदेला ने कहा कि उन्होंने पुलिस अधीक्षक से इस बारे में बात की है। पुलिस अधीक्षक ने मामले की जांच कराकर कार्यवाही को कहा है। बहिलपुरवा पुलिस

दरवाजे के सामने खडी हो रही दीवार।

विवाद खत्म करने की बजाय बढ़ाकर अवैध धन वसूली में जुटी है। पुलिस के रवैये से जनता में आक्रोश उभर रहा है।

कांगेसियों ने सांसद का किया स्वागत, इंडिया गठबंधन की प्रदेश में बनेगी सरकार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल की अगुवाई में इंडिया गठबंधन/सपा सांसद श्रीमती कृष्णा देवी/शिवशंकर पटेल का स्वागत धतुरहा चैराहा स्थित रेस्टोरेंट हाल में हुआ। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने सांसद को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। पूर्व मंत्री शिवशंकर पटेल का अवधेश करवरिया ने माला पहनकर स्वागत किया।

रविवार को स्वागत की कड़ी में मौजूद कांग्रेसियों ने सांसद का स्वागत किया। सांसद ने कहा

सांसद का स्वागत करते कांग्रेसी।

कि वे सबके बीच की हैं। जहां जरूरत समझें, वे हमेशा संघर्ष को खड़ी रहेंगी। जिस तरह जनता जनार्दन व इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों ने सफलता दिलाई है, वे हमेशा सुख-दुख में खड़ी रहेंगी। जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने जीत की बधाई दी। कार्यकर्ताओं का सांसद ने आभार जताया। जिलाध्यक्ष ने कहा कि सभी लोगों को एकजुट होकर राहुल गांधी के हाथों को मजबूत कर इंडिया गठबंधन की 2027 में प्रदेश में सरकार बनानी है। सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर यादव ने कहा कि सभी लोगों की मदद से इंडिया गठबंधन प्रदेश में सरकार बनायेगी। पूर्व प्रत्याशी रंजना बरातीलाल पांडे ने सांसद को कामतानाथ की चित्र भेंटकर स्वागत किया। इस मौके पर पीसीसी सदस्य सत्यनारायण कोल, जिला सचिव विजयमणि त्रिपाठी, राजेश पटेल, राकेश वर्मा, अनिल गुप्ता, अवधेश, रावेंश, हेमराज त्रिपाठी, शिवगुलाम वर्मा, मेनका कोल, बोधन, कालीचरण राजपूत, तीरथ सिंह, राम त्रिपाठी, राम अवतार, रणजीत सिंह, सविता पाल, अजीत कुमार शुक्ला, अरुणेंद्र मिश्रा, शिवशंकर खंगार, कामता द्विवेदी, दिवाकर त्रिपाठी, अजय द्विवेदी, भोला नामदेव, कंचन पटेल, प्रदीप पटेल, कमलाकांत शुक्ला, चुनबाद प्रसाद, रामेश्वर गौतम, गिरिजा देवी, उधो विश्वकर्मा, कुलदीप मिश्रा, धीर सिंह, रामस्वरूप पटेल, महेंद्र सिंह, आदि मौजूद रहे।

मानिकपुर थाने में हुआ वृक्षारोपण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक से सात जुलाई तक जारी एक वृक्ष मां के नाम वृक्षारोपण अभियान के तहत प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर विनोद कुमार शुक्ला ने वनाधिकारी रेंज मानिकपुर प्रथम व अन्य कर्मचारियों की मौजूदगी में थाना परिसर में वृक्षारोपण किया। इस मौके पर थाना मानिकपुर के कर्मचारी व वन विभाग के कर्मचारियों ने थाना परिसर में वृक्षारोपण किया।

जज ने गोपनीय दस्तावेजों के मामले में ट्रंप के सहायक के खिलाफ आरोपों को खारिज करने से किया इनकार

वाशिंगटनः डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ वगीर्कृत दस्तावेजों के मामले की अध्यक्षता कर रहे संघीय जज ने शनिवार को पूर्व राष्ट्रपति के सह-प्रतिवादी के खिलाफ आरोपों को खारिज करने से इनकार कर दिया. ट्रंप के निजी सहायक वॉल्ट नौटा के वकीलों ने अमेरिकी जिला जज ऐलीन कैनन से उनके मुवक्किल के खिलाफ अभियोग खारिज करने का अनुरोध किया था। उन्होंने अन्य बातों के अलावा यह तर्क दिया कि नौटा पर अभियोजकों की जांच में अपर्याप्त सहयोग के कारण और निजी दुश्मनी के कारण आरोप लगाया गया था, जिसके बारे में उनका कहना है कि अभियोजकों ने नौटा के एक वकील के खिलाफ रंजिश रखी थी. विशेष वकील जैक स्मिथ की टीम ने सभी दावों का खंडन किया है, और कैनन ने शनिवार को अपने चार-पृष्ठ के आदेश में कहा कि नौटा ने मामले को खारिज करवाने के लिए आवश्यक उच्च मानदंडों को पूरा नहीं किया है।

नौटा और एक अन्य सह-प्रतिवादी, मार-ए-लागो संपत्ति प्रबंधक, कार्लोस डी ओलिवेरा पर ट्रंप के साथ मिलकर जांचकताओं से सबूत छिपाने का आरोप है, क्योंकि वे वगीर्कृत दस्तावेजों को पुनः प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे, जिन्हें ट्रंप के राष्ट्रपति पद के समाप्त होने के बाद फ्लोरिडा के पाम बीच की संपत्ति में ले जाया गया था. तीनों लोगों ने खुद को निर्दोष बताया है. मामले में कोई सुनवाई की तारीख तय नहीं की गई है।

ट्रंप ने भी मामले को खारिज करने की मांग की है. कैनन ने अपने आदेश के समापन पर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि इस आदेश को प्रतिवादी ट्रंप के चयनात्मक और प्रतिशोधी अभियोजन के आधार पर अभियोग को खारिज करने के प्रस्ताव या न्यायालय के समक्ष लंबित किसी अन्य प्रस्ताव के गुणों पर टिप्पणी के रूप में नहीं समझा जाएगा।

ऑस्ट्रियाई चांसलर नेहमर ने पीएम मोदी की आगामी वियना यात्रा को बताया 'स्पेशल ऑनर' -

वियना : ऑस्ट्रियाई चांसलर कार्ल नेहमर ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वियना की आगामी यात्रा को 'स्पेशल ऑनर' करार दिया. उन्होंने कहा कि वह इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. पीएम मोदी अपनी दो देशों की यात्रा के दूसरे चरण में 9 जुलाई को मॉस्को से ऑस्ट्रिया पहुंचने वाले हैं. यह 41 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की ऑस्ट्रिया की पहली यात्रा होगी। वियना प्रवास के दौरान पीएम मोदी ऑस्ट्रिया के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वान डेर बेलेन से मुलाकात करेंगे और चांसलर नेहमर के साथ बातचीत करेंगे. दोनों नेता भारत और ऑस्ट्रिया के बिजनेस लीडर्स को भी संबोधित करेंगे. चांसलर नेहमर ने कहा 'मैं दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अगले सप्ताह वियना में स्वागत करने के लिए बहुत बेताब हूं. यह यात्रा एक विशेष सम्मान है क्योंकि यह चालीस से अधिक वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की मेरे देश की पहली यात्रा है, यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हम भारत के साथ राजनयिक संबंधों के 75 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं।

उन्होंने कहा, 'हमें अपने द्विपक्षीय संबंधों को और गहरा करने और कई भू-राजनीतिक चुनौतियों पर बेहतरीन सहयोग के बारे में बात करने का अवसर मिलेगा.' अक्टूबर 2021 में, ग्लासगो में सीओपी 26 के मौके पर, प्रधानमंत्री मोदी ने तत्कालीन ऑस्ट्रियाई चांसलर अलेक्जेंडर शालेनबर्ग के साथ चर्चा की थी, जो अब देश के विदेश मंत्री हैं. अपनी यात्रा के दौरान पीएम मोदी का वियना में भारतीय समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करने का भी कार्यक्रम है. शुक्रवार को, विदेश सचिव विनय क्वात्रा ने ऑस्ट्रिया को एक महत्वपूर्ण मध्य यूरोपीय देश कहा, जो बुनियादी ढांचे, नवीकरणीय ऊर्जा, उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों, स्टार्ट-अप क्षेत्रों, मीडिया और मनोरंजन में द्विपक्षीय सहयोग के उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है। उन्होंने बढ़ते भारत-ऑस्ट्रिया व्यापार और निवेश संबंधों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें फरवरी 2024 में भारत-ऑस्ट्रिया स्टार्ट-अप ब्रिज का हालिया लॉन्च भी शामिल है, जिसने एक बहुत आशाजनक शुरूआत की है. भारत और ऑस्ट्रिया ने पिछले साल मई में कई समझौते पर भी हस्ताक्षर किए थे और द्विपक्षीय साझेदारी के नए क्षेत्रों का विस्तार और पता लगाने के लिए मिलकर काम करना जारी रखा है. विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) पवन कपूर ने कहा 'हम यह भी देख रहे हैं कि प्रौद्योगिकी के मामले में हम क्या कर सकते हैं. मुझे लगता है कि 30 से 40 बड़ी ऑस्ट्रियाई कंपनियां पहले से ही भारत में बुनियादी ढांचे, सुरंग बनाने, ट्रैक बिछाने से लेकर कई क्षेत्रों में मौजूद हैं. ऑस्ट्रिया में पहले से ही भारत से काफी मात्रा में निवेश हो रहा है, लेकिन हम देखना चाहते हैं कि हम इसे कैसे आगे बढ़ा सकते हैं.'

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

आगामी केंद्रीय बजट 2024-25 के लिए हुई बजट-पूर्व परामर्श बैठकें

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण बजट तैयार करने की प्रक्रिया के तहत उद्योग जगत और सामाजिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न संबंधित लोगों के साथ विचार-विमर्श को पूरा कर लिया है।

पाकिस्तान का लिंग भेद सूचकांक सबसे निचले स्तर पर, विश्व में दूसरा सबसे खराब

लाहौरः विश्व आर्थिक मंच द्वारा जारी नवीनतम वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक में पाकिस्तान सबसे निचले पायदान पर है, जबकि सर्वेक्षण में शामिल 146 देशों में केवल सूडान ही उससे नीचे स्थान पर है. डॉन की रिपोर्ट के अनुसार पिछले वर्ष की 142वीं रैंकिंग की तुलना में यह और गिरावट है. यह देश में महिलाओं की बदतर होती स्थिति को दशार्ता है.

महिला अधिकार कार्यकताओं ने लैंगिक असमानताओं को प्रभावी ढंग से दूर करने के लिए राज्य और सामाजिक प्रतिबद्धता दोनों से भावुक अपील की है. वे पाकिस्तानी समाज और सरकार द्वारा महिलाओं के लिए निर्धारित भूमिकाओं को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं. वार्षिक सूचकांक चार महत्वपूर्ण आयामों में लैंगिक समानता का मूल्यांकन करता है.

ये सूचकांक है- आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ्य और अस्तित्व और राजनीतिक सशक्तिकरण. डॉन की रिपोर्ट के अनुसार लैंगिक समानता में अग्रणी देशों में आइसलैंड, फिनलैंड, नॉर्वे, न्यूजीलैंड और स्वीडन शामिल हैं. इस वर्ष की निराशाजनक रैंकिंग कोई असामान्य बात नहीं है. पाकिस्तान एक दशक से अधिक समय से लगातार इस सूचकांक में पिछड़ रहा है.

वूमेन इन स्ट्रगल फॉर एम्पावरमेंट (हकरए) की कार्यकारी निदेशक बुशरा खलीक ने लैंगिक समानता हासिल करने में पाकिस्तान के सामने आ रही लगातार चुनौतियों पर विचार करते हुए यह बातें कहीं. तुलनात्मक रूप से पड़ोसी देशों ने अपने लिंग अंतर को कम करने में बेहतर प्रदर्शन किया है. क्षेत्रों में रैंकिंग को विभाजित करने से भारी असमानताएं सामने आती हैं.

आर्थिक भागीदारी और अवसर में पाकिस्तान 143वें स्थान पर है, जबकि बांग्लादेश 146वें स्थान पर है. शैक्षिक उपलब्धि में पाकिस्तान 139वें स्थान पर है और बांग्लादेश 125वें स्थान पर है. राजनीतिक सशक्तीकरण एक चुनौती बना हुआ है. इसमें पाकिस्तान 112वें स्थान पर है, जो बांग्लादेश (7वें स्थान) से काफी पीछे है। विश्व आर्थिक मंच (हएञ्र) की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान की हाल ही में सूचकांक में गिरावट मुख्य रूप से राजनीतिक सशक्तिकरण में आई कमी के कारण है. वहीं, शिक्षा प्राप्ति में मामूली सुधार हुआ है. आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में लैंगिक असमानताएं प्रमुख रूप से बनी हुई हैं. साथ ही शिक्षा प्राप्ति और स्वास्थ्य परिणामों में भी अंतर है.

राजनीतिक सशक्तिकरण पर विचार करते हुए पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग की निदेशक फराह जिया ने मुख्यधारा की राजनीति में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला. जिया ने लक्षित कारावास और कानूनी बाधाओं की घटनाओं का हवाला देते हुए दुख जताते हुए कहा, 'हाल के राजनीतिक गतिविधियों ने महिला नेताओं और कार्यकताओं को निशाना बनाया है. इससे उनकी भूमिका और प्रभाव कम हुआ है.'

संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत कोटा होने के बावजूद जिया ने कहा कि प्रभावशाली राजनीतिक परिवारों या शहरी केंद्रों से संबद्ध नहीं होने वाली महिलाओं के लिए वास्तविक प्रतिनिधित्व अभी भी मायावी बना हुआ है. आर्थिक भूमिकाओं को संबोधित करते हुए बुशरा खालिक ने कपड़ा और फैशन जैसे क्षेत्रों में कुछ प्रगति को स्वीकार किया, लेकिन अनौपचारिक क्षेत्र में व्यापक शोषण को उजागर किया.

खलीक ने कहा, 'पाकिस्तान में महिलाएं मुख्यतः अनिश्चित परिस्थितियों में काम करती हैं, जिससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण सीमित हो जाता है. स्वास्थ्य क्षेत्र में चिंताजनक आंकड़े हैं. इसमें उच्च मातृ मृत्यु दर और अपर्याप्त प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं पाकिस्तान में महिलाओं को परेशान कर रही हैं. शैक्षिक बाधाएं लैंगिक असमानताओं को और बढ़ाती है. लगभग ढाई करोड़ बच्चे स्कूल से बाहर हैं. इनमें मुख्य रूप से लड़कियां हैं, जिन्हें बुनियादी शिक्षा उपलब्ध नहीं है। फराह जिया ने महिलाओं के विकास पर अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव को रेखांकित किया. उन्होंने सरकार की नीतियों की आलोचना की जो सतत मानव विकास पर जनसंख्या से जुड़े प्रोत्साहनों को प्राथमिकता देती हैं. जिया ने जोर देकर कहा, 'प्रजनन अधिकारों पर चर्चा की कमी का महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक भागीदारी पर गहरा प्रभाव पड़ता है.'

जानें कौन हैं भारतीय मूल की लीसा नंदी, जिन्हें ब्रिटेन कैबिनेट में मिली जगह, रिकॉर्ड 26 हिंदुस्तानी बने सांसद -

नई दिल्लीः ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने भारतीय मूल की लीसा नंदी को अपने मंत्रिमंडल में संस्कृति सचिव नियुक्त किया है. आम चुनाव में लेबर पार्टी की भारी वापसी हुई थी. इसमें लीसा नंदी ने विगन की अपनी सीट पर कब्जा जमाया और दूसरे नंबर के एंडी डॉबर को लगभग 10,000 वोटों से हराया है. बता दें कि एकेडमिक दीपक नंदी और एन लुइस बायर्स की बेटी है. लीसा नंदी साल 2010 में लेबर सांसद बनीं थी.

नंदी ने 2020 में लेबर पार्टी के नेतृत्व के लिए चुनौती पेश की और मौजूदा नेता कीर स्टारमर और रेबेका लॉन्ग-बेली के बाद तीसरे स्थान पर रहे. शुक्रवार को लेबर पार्टी की शानदार जीत के बाद प्रधानमंत्री पद संभालने के कुछ ही घंटों बाद स्टारमर ने एंजेला रेनर को अपना डिप्टी नियुक्त किया. 44 वर्षीय रेनर, स्टारमर की कैबिनेट में पहली पुष्टि की गई नियुक्ति थी।

लेबर पार्टी नेतृत्व

लीसा नंदी अब लूसी फ्रेजर से संस्कृति मंत्रालय संभालेंगी, जो हाल ही में हुए चुनाव में अपनी सीटें हारने वाली टोरी मंत्रियों में से एक हैं, जो ऋषि सुनक की कंजर्वेटिव पार्टी के लिए विनाशकारी साबित हुई.

भारतीय विरासत और पारिवारिक इतिहास

लेबर पार्टी के सम्मेलनों के दौरान अपनी भारतीय विरासत और पारिवारिक इतिहास पर विचार करते हुए लीसा नंदी ने बताया कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से उनका परिवार कैसे प्रभावित हुआ था. उन्होंने याद किया कि कैसे उनके दादा-दादी ने अभियान का समर्थन किया था, जिसका लंकाशायर के कपड़ा श्रमिकों पर गंभीर प्रभाव पड़ा था. उन्होंने कहा कि जब कपास आना बंद हो गया, तो मिलें चलना बंद हो गईं और श्रमिक भूखे रह गए।

नंदी ने 1931 में गांधी की लंकाशायर की प्रसिद्ध यात्रा पर भी प्रकाश डाला, जब उन्होंने कठिनाई का सामना कर रहे मिल श्रमिकों से मुलाकात की थी. उन्होंने टिप्पणी की कि उनके परिवार के सदस्य जो उन मिलों में काम करते थे. उन्होंने गांधी का स्वागत किया क्योंकि वे समझते थे कि एकजुटता में शक्ति होती है. उन्होंने कहा कि जैसा कि मैं जानती हूं, इस पद को संभालने वाली पहली मिश्रित-जाति की महिला के रूप में, कि एकजुटता में शक्ति होती है और हमारा संघर्ष एक ही है।

ब्रिटेन कैबिनेट में रिकॉर्ड भारतीय

ब्रिटेन में हुए चुनाव में भारतीय मूल के 26 सांसदों को जीत मिली है. यह पांच साल पहले बनी कैबिनेट से 15 अधिक है।

फ्रांसः संसदीय चुनाव के दूसरे चरण के लिए मतदान शुरू

पेरिसः राष्ट्रपति इमैनुएल की ओर से बुलाए गए संसदीय चुनाव के दूसरे चरण के लिए फ्रांस में मतदान शुरू हो गया है. इसके तहत नेशनल असेंबली के 577 सदस्यों का चुनाव किया जाएगा. इसमें किसी भी पार्टी को पूर्ण बहुमत के लिए 289 सीटों की आवश्यकता होती है. यह जानकारी सीएनएन ने दी

निवर्तमान संसद में, फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रोन के गठबंधन के पास केवल 250 सीटें थीं. उन्हें कानून पारित करने के लिए अन्य पार्टियों के समर्थन की आवश्यकता थी. रविवार को सुबह 8 बजे से रात 8 बजे (स्थानीय समय) तक मतदान हो रहे हैं. पूरे नतीजे सोमवार की सुबह आने की उम्मीद है.

पिछले रविवार को हुए मतदान के पहले चरण में बढ़त लेने के बाद, पार्टी की दिग्गज मरीन ले पेन के नेतृत्व में 28 वर्षीय जॉर्डन बाडेर्ला के नेतृत्व वाली दक्षिणपंथी नेशनल रैली (आरएन) पहले से कहीं अधिक सत्ता के करीब पहुंच गई है.

आरएन को बाडेर्ला ने एक नया और स्वीकार्य चेहरा दिया है, क्योंकि पार्टी ने पहले चरण में 33 प्रतिशत लोकप्रिय वोट जीते हैं. नवगठित वामपंथी गठबंधन, न्यू पॉपुलर फ्रंट (ठऋढ) ने 28 प्रतिशत वोटों के साथ दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि मैक्रों का एनसेंबल गठबंधन 21 प्रतिशत वोट जीतकर तीसरे स्थान पर रहा. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सहयोगी विची शासन के बाद फ्रांस में पहली दूर-दराज सरकार की संभावना के बीच एनसेंबल और ठऋढ ने कार्रवाई शुरू कर दी है. सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, एक सप्ताह की राजनीतिक सौदेबाजी के बाद, फठ को पूर्ण बहुमत से वंचित करने के लिए सैकड़ों उम्मीदवारों ने कुछ सीटों पर अपना नाम वापस ले लिया. केवल वे ही लोग जो पहले दौर में पंजीकृत मतों के 12.5 प्रतिशत से अधिक वोटों में जीत हासिल करते हैं, दूसरे दौर में भाग ले सकते हैं, जिसका अर्थ है कि यह अक्सर दो उम्मीदवारों के बीच लड़ा जाता है.

हालांकि, इस बार रिकॉर्ड संख्या में सीटों, 300 से अधिक सीटों पर तीन-तरफा रन-ऑफ हुआ, जो फ्रांस के ध्रुवीकरण का एक उपाय है. मैक्रों के गठबंधन और ठऋढ के 200 से अधिक उम्मीदवारों ने दूसरे दौर में दूर-दराज विरोधी वोटों को विभाजित न करने की कोशिश करने के लिए अपना नाम वापस लेने पर सहमति व्यक्त की. सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, पहले दौर में आरएन के अच्छे प्रदर्शन का मतलब है कि वह निवर्तमान संसद में अपनी 88 सीटों से तीन गुना अधिक सीटें जीत सकती है।

हालांकि फ्रांसीसी राष्ट्रपति के लिए सबसे बड़ी पार्टी से प्रधानमंत्री नियुक्त करना प्रथागत है, लेकिन बाडेर्ला ने बार-बार कहा है कि वह अल्पमत सरकार बनाने से इनकार करेंगे. उस स्थिति में, मैक्रोन को कट्टर वामपंथी प्रधानमंत्री की तलाश करनी पड़ सकती है या तकनीकी सरकार बनानी पड़ सकती है।

विशेष रूप से, फ्रांस में 2027 तक संसदीय चुनाव होने वाले नहीं थे. हालांकि, मैक्रोन ने जून में हुए यूरोपीय संसद चुनावों में अपनी पार्टी को आरएन की ओर से पराजित किए जाने के बाद अचानक चुनाव कराने का आह्वान किया। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार हालांकि यूरोपीय संसद चुनावों के परिणामों का घरेलू राजनीति पर कोई असर नहीं पड़ता है. हालांकि, मैक्रोन ने जोर देकर कहा कि वह मतदाताओं की ओर से भेजे गए संदेश को अनदेखा नहीं कर सकते और स्थिति को स्पष्ट करना चाहते हैं।

कुछ लोगों ने जोर देकर कहा है कि 2027 में आरएन के राष्ट्रपति पद और संसद दोनों जीतने की संभावना के साथ, मैक्रोन इसे सरकार के सामने पहले ही उजागर करना चाहते थे, इस उम्मीद में कि एक बार सत्ता में आने के बाद यह अपनी अपील खो देगा. हालांकि, अगर आरएन अल्पमत सरकार बनाने से इनकार कर देती है तो मैक्रों का यह दांव उल्टा पड़ सकता है।

आखिर क्यों चीन में बढ़ रही भारतीय योग गुरुओं की डिमांड?

बीजिंगः योग एक प्राचीन परंपरा है, जिससे शरीर और मन के बीच संतुलन बनाया जाता है. यही वजह है कि पूरी दुनिया में लोगों ने योग को अपनाया है. भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुरूआत हुई थी, जो भारत के पड़ोसी देश चीन में भी तेजी से लोकप्रिय हुआ. इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि चीन के सभी बड़े शहरों पेइचिंग-शांगहाई के साथ-साथ छोटे शहरों में भी योगा क्लासेस और स्कूल खुल चुके हैं. माना जा रहा है कि चीन में भी आने वाले समय में योग एक बड़ा विजन बनने वाला है.

चीन में योग का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है. पिछले साल के आंकड़ों के मुताबिक, चीन के लगभग सभी प्रांतों और शांगहाई, पेइचिंग, शेंचन, नानजिंग शहरों में अलग-अलग योग संस्थानों में योगा सिखाया जाता है. योग को मानने और समझने वाले चीनी लोगों की संख्या तेजी से बढ़ी है. इतना ही नहीं योग चीन में एक नए व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है, जो आने वाले वक्त में चीन के लोगों के लिए उपयोगी कदम साबित होने वाला है. ताई ची को अगर चायना का 'योगा' कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

चीनी मार्शल आर्ट से ली गई यह ऐसी परंपरा है जो शरीर पर नियंत्रण, सांस का नियमन और शरीर संतुलन को एकजुट करती है. वहीं योग भी प्राचीन परंपरा है. ऐसे में चाइना में योग के प्रति लोगों का क्रेज बढ़ने की एक बड़ी वजह ताई ची भी है. ताई ची के चलते चाइना के लोग योग को तेजी से अपनी लाइफ स्टाइल में ला रहे हैं. ताई ची और योग का अभ्यास न केवल शरीर को मजबूत करता है बल्कि तनाव से राहत भी देता है. सीधे तौर पर यह बात अब दोनों देशों के नागरिक जानते हैं कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के रूप में योग को चीन में लाया गया और उत्कृष्ट चीनी संस्कृति के रूप में ताई ची को भारत तक पहुंचाया गया. ऐसे में दोनों देशों के लोग खुद को योग से कनेक्ट कर चुके हैं।

आपको शायद यह बात जानकर हैरानी होगी कि आज दुनिया के सबसे ज्यादा योग केंद्र चीन में खुल चुके हैं. इसकी बड़ी वजह यह भी है कि यहां के फिटनेस सेंटरों को भी योग क्लासेस में तब्दील कर दिया गया है. चीन और भारत में पारंपरिक और सांस्कृतिक रूप से अच्छे संबंध रहे हैं. ऐसे में चीन के लोगों में भारतीयों के प्रति श्रद्धा और एकजुटता का भाव रहता है. जिस तरह से चीनी मार्शल आर्ट का क्रेज भारतीयों में रहता है, उसी तरह योगा का क्रेज चायनीज लोगों में बढ़ रहा है. चीनी मार्शल आर्ट भी बहुत हद तक योग के जैसा ही है. इसमें भी सैकड़ों अलग-अलग युद्ध शैलियों का संग्रह है, जो शरीर की ऊर्जा को एकत्रित करके किया जाता है. बस मार्शल आर्ट में जोश हाई रहता है, जबकि योग करते समय मन को बिल्कुल शांत रखा जाता है. लेकिन दोनों के गुण एक जैसे होने से इसमें कई समानताएं दिखती हैं. दोनों का अभ्यास शरीर को फिट और मजबूत बनाता है।

योग अब चीन के लोगों की जिंदगी का हिस्सा बन रहा है. ऐसे में पिछले कुछ सालों में भारत के 'योग गुरुओं' की डिमांड तेजी से चीन में बढ़ी है. चीन में लाखों लोग योगा सीख रहे हैं, अकेले राजधानी बीजिंग में 1 हजार से ज्यादा योग केंद्र हैं जिनमें 3 लाख से ज्यादा छात्र हर दिन योगा सीखते हैं. भारत की योग नगरी कहे जाने वाले ऋषिकेश में प्रशिक्षित योग गुरुओं का चीन में डंका बजता है. आज के वक्त में 3 हजार से भी ज्यादा भारतीय योग गुरु चीन में हैं, जिनमें से 70 से 80 फीसदी योग गुरु ऋषिकेश और हरिद्वार के हैं।

चीन में भारतीय गुरुओं को ही ज्यादा पसंद किया जाता है. दरअसल, चीनी, भारत के प्रशिक्षकों को इसलिए चुनते हैं क्योंकि वह उनके बेसिक्स को मजबूत मानते हैं. चीनी योग को एक दम सही ढंग से ही सीखना चाहते हैं. इसलिए वो इसके लिए भारत से ही विशेषज्ञ बुलाते हैं।

चीन के दक्षिण-पश्चिमी युन्नान प्रांत के युन्नान मिनत्सु विश्वविद्यालय में भारत की तरफ से पहला योग कॉलेज खुल गया है. जिसे 'चीन-भारत योग कॉलेज' कहा जाता है. इस कॉलेज की खासियत यह है कि यहां योग और ताई ची की नींव रखने वाले चीनी और भारतीय टीचर छात्रों को प्रशिक्षित करते हैं. ऐसे में यह कॉलेज चीन और भारत के लोगों के बीच संबंध स्थापित करने में कूटनीतिक पुल की तरह काम करता है. चीन में योग इंडस्ट्री 20 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ रही है. आज के वक्त में वहां योग गुरुओं में से हर कोई प्रति महीने एक लाख रुपये से ऊपर कमा रहा है. यानि योग चीन और भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में भी उपयोगी साबित हो रहा है.